MARSHMAN'S

HISTORY OF INDIA,

FROM

REMOTE ANTIQUITY TO THE ACCESSION
OF THE MOGUL DYNASTY.

DONE INTO HINDI

FOR

THE AGRA SCHOOL BOOK SOCIETY.

BY THE REVD. J. J. MOORE.

AGRA:

PRINTED AT THE AGRA PRESS.

1844.

भारत वर्षीय इतिहास ।

अर्थात्

हिंदुस्थान की कथा ॥

आगरा स्कूल बुक सोसईटी की आज्ञा से

और पादरी जान जेम्स मोर साहिब की सहायता से

यह उलथा हिंदी भाषा में हुआ ।

और आगरे के छापेखाने में छापा गया ॥

मई ईसवी संवत्

१८४४ ॥

॥ हिंदुस्थान की कथा ॥

—०❀०—

॥ प्रथम भाग ॥

॥ हिंदुओं का काल ॥

॥ पहला अध्याय ॥

हिंदुस्थान—उसकी कथा के बिभाग—हिंदुओं का पूर्व काल—चारों युग—हिंदुओं के कालवर्णनबिद्या की अधिकाई—भारत वर्ष—हिंदुस्थान के आदि निवासी—हिंदुओं की क्रम पूर्बक-दृद्धि—इस देश के प्राचीन बिभाग—संस्कृत और चलित भाषा—परंपरा की मतरीत—वेद—हिंदुओं के पुराण ॥

हिंदुस्थान की संक्षेप कथा का वर्णन करते हैं, वह एशिया के दक्षिण देश के बीचों बीच है; उसकी उत्तर और ईशान सीमा हिमालय पर्बत; दक्षिण में समुद्र; पश्चिम में सिंधु नदी; और पूरब सीमा वह पर्बत श्रेणी जो ब्रह्म पुत्र से ले नेग्रेस नाम अंतरीप तक बिस्तृत है ॥

हिंदुस्थान की कथा के तीन बिभाग हैं, पहला हिंदुओं का, दूसरा मुसलमानों का, तीसरा खीष्टमतावलंबियों का॥ हिंदुओं की कथा का प्रारंभ उस समय से है जिसका अति प्राचीन होने के कारण कुछ यथार्थ ज्ञान नही होता है, और उस का अंत जब मुसलमान सिंधु नदी पर आए, जिसको आठसौ बरस हुए और हिंदुस्थान को जय करने लगे॥ महमूद की पहली जय से ले प्लासी की लड़ाई तक मुसलमानों का समय था, यह युद्व १७५७ संवत् ईसवी में हुआ, उस समय से हिंदुस्थान में अंग्रेजों के राज्य की नीम पड़ी॥ जब से अब तक अंग्रेजों का समय चला आता है॥ हिंदुओं की कथा अत्यंत खंडित हैं, क्योंकि जो प्राचीन लेख हिंदुस्थान का था भी, सो बहुत काल के बितीत होने से, और राज्यों की उलट पलट से नष्ट होगया है, या प्राचीन इतिहास वेत्ताओंने उन्हें बिगाड़ा है॥ मुसलमानों के समय का वर्णन अधिक विस्तार पूर्वक है; परंतु अंग्रेजों के राज्य का कथा संबंधी वर्णन अत्यंत ब्योरेवार और सत्य है॥

हिंदुस्थान की प्राचीन कथा और अनेक राजकुलों के वर्णन के इतिहास जो कुछ हैं सो भी बिश्वास करने योग्य नही हैं॥ पूर्व काल में केवल कवि इतिहासवेत्ता थे, और केवल ज्योतषी लोग कालनिरूपक॥ कवियोंने कथा संबंधी वर्णन कल्पना करके लिखने से अशुद्व करदिया, और ज्योतषियों का बिश्वास इसलिये नही करसकते कि उन्होंने यह नक्षत्रादिकों की गति अपने मन से ठहराकर उस के अनुसार कथा संबंधी वृत्तांतों के काल और संबत् निश्चय करलिये हैं॥

हिंदू अपने को अत्यंत प्राचीन जानते हैं, पर इस बात की कोई पक्की जड़ नही; वे केवल बड़ाई मारते हैं, या इस बात में पंडितोंने कुछ चतुराई की है॥ प्राचीनता के बिषय में

केवल हिंदू ही बातें नही मारते, परंतु एथन देश निवासी अपनी बड़ाई करते थे कि हम चंद्रमा से आयु में बड़े हैं॥ कैल्डिया देश में बेबीलन नगर निवासी अपनी कथा डेढ़ लाख बर्ष तक की बताते हैं॥ और चीनवाले भी अपने इतिहास ऐसे प्राचीन बताते हैं कि उन का बिश्वास नही होसकता; परंतु इस बिषय में ब्रह्मावालों का कहना अत्यंत असंगत और उपहास करने जोग है क्योंकि उनके कथा संबंधी वृत्तांत के अगाड़ी हिंदुओं की कालवर्णनबिद्या केवल आज कल की सी दिखाई देती है॥ वे ऐसा कहते हैं कि हमारे पूर्व निवासियों की आयु इतने वर्षों की होती थी कि जितनी बूंदें सारी पृथ्वी पर तीन वर्ष में पड़ती हैं॥ निदान एथेन निवासी, बेबीलन वासी, चीनी, और ब्रह्मावालों की इस बिषय में हिंदुओं की भांति बनावट की सी बातें जान पड़ती हैं॥ वे केवल कवियों की कहानी हैं, इसलिये कथा में बस्तुता कुछ सचावट नही॥ यहूदियों की कथा को छोड़कर जो धर्म पुस्तक में लिखी है, किसी और जात के पास दो सहस्र आठ सौ बरस से पहले का कोई लेख नही है॥

हिंदू पुराणवेत्ता चार युग ठहराते हैं॥ वर्तमान युग को कलियुग कहते हैं, जो कई सहस्र वर्ष से चला आता है, और ४३२००० वर्ष तक रहैगा॥ द्वापर जिस के पीछे कलयुग आया दूना था अर्थात् ८६४००० का; त्रेता युग जिसके पीछे द्वापर आया पहले दोनो के समान अर्थात् १२९६००० बरस का; सत्ययुग अर्थात् प्रथम काल हिंदू कहते हैं कि कलियुग से चौगुना था॥ ये चारों युग मिलकर ४३२०००० के हैं और हिंदुओंने एक और काल ठहराया है जिसे कल्प कहते हैं, इस के वर्षों की संख्या

चारों युगों के वर्षों को मिलाके सहस्र गुणा करने से उसके वर्षों की संख्या के समान होते हैं॥ प्रसिद्ध है कि यह सब गणना ग्रहों की पूर्व गति के अनुसार है और पृथ्वी की कथा के काल से कुछ संबंध नही रखती॥ हिंदू ज्योतषियोंने गणना की कि जब ये युग पूरे होते हैं तब किसी भांति का ग्रह नक्षत्रादि कों का योग होता है, इसलिये उन्होंने इन युगों को पृथ्वी की कालवर्णनबिद्या के लिये ठहराया है॥ ज्योतषी ही याज कथे, और वे सब सामर्थवान् और प्रजा लोग अज्ञान, इसलिये उस गणना को कोई दुलख के नही पूछता था, और उस को मान लेना यही धर्म था, जो कोई उस में संदेह करे उसे नास्तिक जानते थे॥

परंतु प्रगट है कि यह कालवर्णनबिद्या ऐसी प्राचीन नही है; बरन जब से कि हिंदुओं का मत पुरानी रीत से पलट कर अब की नई रीत पर ठहरा है तब से इस लेख का प्रारंभ होता है॥ अब के नये मत की रीत ऐसे प्रकार की बनी हैं कि मूरख उन की बनावट देख अचंभा करें॥ जो हिंदुओं की कालवर्णनबिद्या बनावट समझी जाय, तो निश्चय जानना चाहिये कि और प्रत्येक बात भी ऐसी ही हैं जिन का कुछ ठिकाना नही॥ मनुष्य की आयु अधिक से अधिक सौ बरस से कुछेक बिशेष हो सकती है, परंतु पुराणों से जान पड़ता है कि पूर्व काल में दस सहस्र वर्ष से भी बिशेष मनुष्य की आयु होती थी॥ किसी २ मनुष्य की संतान जो बिशेष करके हो तो दस लड़के वालों से अधिक नही होते, परंतु हिंदू इतिहासवेत्ता कहते हैं कि राजा सगर के साठ सहस्र पुत्र थे जो कद्दू में उत्पन्न हुए, और दूध के कढ़ाव में पला करे और एक ऋषि के सराप से जलकर राख हो गये॥

ईश्वरने मनुष्य को दो बांह और एक मुख दिया है; पर हिंदू कवि अपने किसी बीर की बीस भुजा और दस शिर बताते हैं॥ यूरप के लोगोंने जहाज़ पर चढ़कर पृथ्वी प्रदक्षिणा की, और अपनी दिनवारी चाल को नाप कर जानलिया कि पृथ्वी गोलाकार है, और उस का घेर कुछ अधिक २१००० मील; और हिंदुओं की पुस्तकों में लिखा है कि वह इस प्रमाण से चालीस गुण अधिक है॥ पृथ्वी में ऊंचे से ऊंचा पहाड़ अति ठीक नाप से जाना गया है कि उस की उंचाई पांच मील से अधिक नही॥ परंतु हिंदू कवि कहते हैं कि सुमेरु पर्वत पृथ्वी से छह लाख मील ऊंचा है जिसको उन्होंने न कभी नापा न देखा॥ इन बातों से जाना जाता है कि हिंदुओं के शास्त्रों में पृथ्वी की कालवर्णनबिद्या, मनुष्य की संतान और आयु, भूमि का विस्तार, पहाड़ों की उंचाई, और मनुष्यों के हाथ और मुख की संख्या में भी बहुत बढ़ाके कहा है॥ इसलिये एक बात की सचाई दूसरी बात के सच और झूठ का बिचार करने से प्रगट होजायगी॥ जो पहाड़ों की उंचाई की संख्या शुद्ध होय तो हिंदुओं की कालवर्णनबिद्या भी ठीक हो सकती है॥ पृथ्वी का व्यास आठ सहस्र मील से न्यून है, उस के ऊपर जो ऐसा एक पहाड़ होसके कि जिस की उंचाई पृथ्वी से तीन लाख मील ऊंची हो और एक लाख अट्ठाईस सहस्र मील उस से नीची तो उन्हों के युगों की वर्ष संख्या भी बिश्वास करने जोग होसकती है॥ और हिंदुओं के अनुसार सुमेरु पर्वत की उंचाई कहानी है तो उन के पुराण में लिखी हुई कालवर्णनबिद्या भी कहानी ही होगी॥

इसलिये चारों युगों की संख्या जो कही है सो संपूर्ण रूप से बिश्वास करने योग्य नही है; और जो इस बात के निश्चय करने को कोई और प्रमाण चाहिये, तो यह प्रमाण बक्रत है कि हिंदुओं के युगों की वर्ष संख्या उन सब देशों के संबतों से नही मिलती जिन देशों का सचा आदि लेख हमारे पास है॥ परंतु यह जाना जाता है कि कथा में चारों युगों के ठीक काल थे, पर भूल केवल इतनी है कि उन के काल की संख्या बक्रत बढ़ाकर कही है॥ और देशवालों की भांति हिंदू भी अपनी कथा सुगम होने के लिये कई युगों में बिभाग करते हैं; परंतु उन युगों के वर्षों की ठीक संख्या जानना कठिन है, क्योंकि हिंदू अपने काल की संख्या अत्यंत प्राचीन बताते हैं॥ बेंटली साहिब हिंदुओं की कालवर्णनबिद्या बड़े परिश्रम से पढ़कर ऐसा बिचार कर कहता है कि अब के ब्राह्मण युगों की संख्या अति प्राचीन बताते हैं॥ वही साहिब कहता है कि सतजुग नूह की प्रलय से लेकर ईसवी संबत् पंद्रह सौ अट्ठाईस बरस आगे तक था; और त्रेता युग उस बरस से लेकर ईसवी संबत् के पूर्व नो सौ एक बरस तक रहा; और उसी बरस से द्वापर जुग का प्रारंभ होता है और पांचसो चालीस बरस आगे ईसा मसीह के उसका अंत; और कलयुग उसी बरस से लेकर ईसवी संबत् के २९९ बरस आगे तक था॥ यद्यपि यह अनुमान वर्षों का ठीकसा जान पड़ता है पर सब लोग उस का भी बिश्वास नही करते॥ यद्यपि इस लेखे में संदेह है फिर भी हमको आवश्यक है कि और देशों की शुद्ध कालवर्णनबिद्या से हिंदुओं की कालवर्णनबिद्या को मिलावें॥ जैसे हमारे पास यहूदियों, बाबल निवासियों, मिसर के रहनेवालों, और यूनानियों की अगली कथा हैं जिन से ऐसी बातें जानी

जाती हैं जो विश्वास करने योग्य हैं और उन से जान सकें कि वे लोग प्रलय के पीछे कब बसे थे; और इसलिये हम यह नही कह सकते हैं कि हिंदू निश्चय करके इन सब से पहले बसे थे॥ कलजुग का प्रारंभ जो हिंदुओंने लिखा है वह प्रलय के पीछे जो और देश बसे हैं, उनके सच्चे संबत् के साथ बहुधा मिलता है, इसलिये कलियुग के समय की हिंदुओं की कालवर्णनविद्या बहुधा शुद्ध है इसी हेतु हम उन सब वृत्तांतों को इसी युग में हुए कहते हैं, जिन का वर्णन हिंदू और २ जुगों में कहते हैं॥ जैसे इक्ष्वाकु, सगर, राम, और युधिष्टिर का राज्य इसी कलियुग में था॥

बड़े परिश्रम से यह बात जानी है कि हिंदुस्थान में हिंदू राजकुलों की पूर्व कथा स्पष्ट नही॥ हिंदुस्थान भरत के नाम से भारत वर्ष कहलाता है, और उस को सब हिंदुस्थान का राजा कहते हैं॥ यद्यपि यह भारी संदेह है कि उसने सारे हिंदुस्थान पर राज्य किया हो, पर यह संभव है कि वह हिंदुओं में नामी और पहला राजा था॥ परंतु इस भारी बात का निश्चय करना कुछ बहुत काम नही आता; क्योंकि वे कहते हैं कि भरतने दस सहस्र बरस राज्य किया और मरने के पीछे हिरन हुआ॥ हिंदुओं की कथा ऐसी २ कहानियों से भरी हुई हैं॥ जो हम हिंदू राजाओं की बंशावली निरी झूठी जाने तो हमे उस समय का कथा संबंधी विषय नही जान पड़ेगा; और जो प्रत्येक राज्य में से हम कई कई सहस्र बरस घटा दें तो भी हमें कथा संबंधी वर्णन के सच जानने का कुछ सहारा नही मिलता॥ हिंदुस्थान की कथाओं में केवल दो चार वृत्तांत और दो चार नाम मिल सकते हैं जिन पर हम को अच्छा निश्चय नही हो सकता है,

और उनके होने की मिती और संवत् भी नही ठहरा सकते हैं॥ हम केवल संदेह के समुद्र में गिरते हैं, प्रत्येक बात कहानी और कहावत है, निदान सब बातों में हमें आपही बिचार के अनुमान करना पड़ता है॥ जब हम कोई समाचार प्रगट करा चाहते हैं तो ऐसा बिचारते हैं कि इसके अत्यंत बढ़ाव को घटा दें, तो भी हम यह नही निश्चय कर सकते हैं कि यह किस वृत्तांत से संबंध रखता है॥ बड़ा अचंभा है कि हिंदुओं की भाषा निपट मीठी और अत्यंत शुद्ध है, और उन की बिद्या भी पृथ्वी भर में अत्यंत पुरानी पर तो भी उन के पास कोई कथा संबंधी लेख ऐसा नही जो निश्चय और बिश्वास करने योग्य होय॥

हिन्दुस्थान के वृत्तांत में पहली बात पूछने के योग्य यह है कि जो लोग हिंदू मत पर हैं वे हिंदुस्थान के प्राचीन रहनेवाले हैं कि नही और इस प्रश्न का उत्तर इन बातों से जो नित नित देखी जाती हैं प्राप्त होजाता है॥ इस बात में कुछ संदेह नही है कि पृथ्वी के आदि रहनेवाले प्रलय के पीछे सिंधु नदी के पच्छम ओर उन देशों के आस पास बसे थे जहां नूह की नाव टिकी थी, और फिर उन में से लोग उठ उठ कर पृथ्वी के नाना देशों में जाकर रहने लगे; और हिंदुओं के सारे ग्रंथों से भी जाना जाता है कि पश्चिम की ओर से हिन्दुस्थान में लोग सदा आया करते थे॥ हिंदुस्थान के आदि निवासी हिंदू नही थे, और पहले रहनेवालों की कई एक जातें जो जंगलियों की सी हैं, सो अब नरबदा, सोन, महानदी के जंगलों में और सरगूजा के पहाड़ों में और छोटे नागपूर के निकट बसते हैं और वे भील, गोंड, मीने, कोल, और चुआर कहलाते हैं; वे ऐसी एक बोली बोलते

हैं जो संस्कृत से तनक भी नहीं मिलती है और उनका मत भी हिंदुओं के मत से जुदा है जब कि परदेसी लोग हिंदुस्थान को जीतते गये तब आदि निवासी पहाड़ों और जंगलों और घाटियों में भाग कर चलेगये; और हिंदुस्थान भर में राज्यों की उलट पलट होने पर भी उन स्थानों के रहनेवालों की बोल चाल वैसीही ज्यों की त्यों बनी रही और उनकी रीत भांति और धरम भी न पलटने पाया और जब से वे कभी और हिन्दुस्थानियों से न मिले ॥

यद्यपि यह बात प्रगट है कि हिंदुस्थान के आदि निवासी हिंदू न थे, परंतु इस में कुछ संदेह नहीं है कि उन्होंने हिंदुस्थान को सब से पहले जीता था; हिंदुस्थान में उन के आने की मिती ढूंढना व्यर्थ है॥ परंतु वे भी बहुत दिनों पीछे जब कि लोगों को बुद्ध आने लगी थी पच्छम की ओर से आये और सिंधु नदी को उतर कर हिंदुस्थान के उत्तर के देशों में फैल गये; और होले होले उसी ओर से और और लोग भी आने लगे जिनका मत कदाचित् पूर्व के आनेवालों के मत से बिपरीत था और उन दोनों मतों के मिलने से हिंदुओं का शास्त्र बना॥ जो हम यह बात न ठहरावें कि हिंदुस्थान में और देशवाले सब एकही संग नहीं आये, बरन बहुत बहुत दिनों पीछे आकर बसने लगे, तो जातों के अलग अलग होने का कारण जानना बहुत कठिन होगा॥ यह बात जानी जाती है कि पहले हिंदू केवल उत्तरही की ओर राज करते थे, यद्यपि वे कभी कभी दक्खन पर भी चढ़ाई करते थे परंतु बहुत दिनों लों हिंदू उन देशों को जो नरबदा के दक्षिण की ओर हैं अपने राज में अच्छे प्रकार से न लासके थे॥

इस बात की सच्चाई हिंदुओं के इतिहास से बहुत प्रगट है कि जिस समय मनु का धर्म शास्त्र बना था तब, हिंदुओं का राज केवल उत्तर में था; क्योंकि शास्त्र में लिखा है कि उत्तर में देवताओं औ प्रधान लोगों अर्थात् हिंदुओं का बास है; और हिन्दुस्थान म्लेच्छमय अर्थात् आदि निवासियों करके परिपूर्ण है ॥ वे चारों जगह जो चारों जुगों में पवित्र थीं उत्तर ही में हैं; पर अब दक्षिन की ओर भी बहुतेरे स्थान हैं जो बहुत पवित्र गिने जाते हैं ॥ जिन दोनों राजकुलोंने बहुत काल तक हिंदुओं पर राज किया है उन की राजधानी हिंदुस्थान के उन भागों में थी जहां कि गंगा बहती है ॥ यह बात उन लोगों के वर्णन को बहुत दृढ़ करती है, जो कहते हैं कि हिंदुओंने दक्खन के देशों को उत्तर के देशों की अपेक्षा बहुत दिनों पीछे जीता; यद्यपि ऐसा जान पड़ता है, कि हिंदुओंने उन देशों को जो नरबदा के दक्खन की ओर बसते हैं चंद्रगुप्त औ बिक्रमादित्य के समय के मध्य में जयकिय था; फिर भी यह बात खूब ठीक निश्चय नही हो सकती है ॥ टाड साहिब राज स्थान के प्राचीन ब्योरे में लिखता है और और कवि लोग भी कहते हैं कि दो सहस्र बरस हुए होंगे, एक सूरमाओं के नये बंशने जिसे अग्नि कुल कहते थे, उत्तर हिंदुस्थान को जीता, और हिंदू राजाओंने हारकर नरबदा उतर दकखन की ओर नवीन राज्य स्थापन किये ॥ जिस समैं महाभारत और रामायन बनाई गई थीं, तब तक हिंदू दक्खन को अच्छी भांति नही जानते थे, दक्षिण को कहानी में सुना करते थे, और उसको बंदरों के रहने की जगह जानते थे, जिन में सेनापति और सूरमा भी होते थे; और वहां रीछों का सेनापति और राक्षसों का राजा

रहा करता था। इस बात से निश्चय जाना जाता है कि जिन को बंदर, और रीछ और राक्षस ठहराया ह वे उत्तर के रहनेवालों से हिंदुओं के मत में पीछे आये॥

हिंदुओं के किसी किसी प्राचीन लेख से जाना जाता है कि भरत खंड में पहले दस राज्य थे, पहला सरस्वती जिस में कि पंजाब है। दूसरा कनौज जिसमें दिल्ली, आगरा, श्रीनगर अवध है। तीसरा तिरहुत जो कि कोसी नदी से लेकर गंडक तक है। चौथा गौड अर्थात् बंगाला, और थोडासा देश बिहार का। पांचवां गुजरात जिस में गुजेरात, और थोड़ासा खान देश और मालव देश है। छटा उत्कल अर्थात् उड़ीसा। और सातवां महाराष्ट्र अर्थात् मरहटों का देश। आठवां तैलिंग जो कि गोदावरी और कृष्णा नदी के बीच में है। नवां करनाटक जो कि कृष्णा नदी के दक्खन और घाटों के ऊपर को है। दसवां द्रविड़ अर्थात् तामिल का देश है॥ और इन्ही बिभागों के अनुसार दस सुंदर भाषा हैं, जो बहुतसे देशों में बोली जाती हैं, उनके नाम, प्राकृत, हिंदी, मिथला, बंगाली, गुजराती, उड़िया, मरहटी, तैलिंगा करनाटकी, और तामल॥

ये भाषा और और सब भाषा जो हिंदुस्थान में बोलते हैं उनकी जड़ संस्कृत है॥ हिंदुओं की कथाओं से यह जानना आवश्यक है कि संस्कृत भाषा की जड़ क्या है, और हिंदुस्तानी और बोलियों से कैसे मिलती है॥ कोई कोई कहते हैं कि हिंदुस्थान की सारी बोलियों को सुधारने से संस्कृत बनी; परंतु यह इसलिये सच नही दीख पड़ती है, कि उत्तर और दक्षिण की बोलियों में बहुत भेद पाया जाता है, वे बोलियां जिन में इतना भेद हो उन से एक ऐसी

सपूए बोली मिलकर नही बन सकती है जो संपूर्ण हिंदुस्थान और दक्खन के अंत तक पढ़े ऊये लोगों की समझ में आवे॥ जो संस्कृत हिंदुस्थान की चलित भाषाओं का सुधारने से बनाई गई हो, जिस में धर्म की छिपी ऊई बातें लिखी जाती थीं, तो यह बात समझ में नही आसकती है कि वह सारे लोगों से अबलों क्योंकर छिपी रही॥ और जो संस्कृत और सारी बोलियों से निकली हो तो चाहिये कि संस्कृत की सब से पुरानी चलित पोथियों की भाषा और बोलियों से बऊत मिली होती क्योंकि वे पोथियां उस समय बनी थीं जब संस्कृत को बने ऊये थोड़े ही दिन ऊये थे; पर हम को ऐसा जान पड़ता है कि संस्कृत की सब से पुरानी पोथियां अर्थात् वेदों की भाषा हिंदुस्थान की चलित बोलियों से इतनी कुछ नही मिलती है जितनी वर्तमान काल की पोथियों की भाषा मिलती है जैसा कि वर्तमान संस्कृत और बंगाली भाषा आपस में बऊत मिलती हैं॥

बऊत करके ऐसा संभव जान पड़ता है कि हिंदुस्थान में ब्राम्हणों के आने से पहले दो या तीन प्राचीन बोलियों का चलन होगा; बंगाली, हिंदुस्थानी, मरहटी, गुजराती, और उड़िया बोली से जो हिंदुस्थान की उत्तर दिशा में बोली जाती थीं और आपस में बऊत मिलती हैं, इससे अनुमान होता है, कि उन सब के मिलने से एक भाषा होगई है॥ और दूसरी आदि बोली तिलूगू, तामल, करनाट की और और दक्षिन देश की भाषाओं से जो आपस में बऊत मिलती हैं मिलकर बनी होगी; जब कि ब्राम्हण सिंधु नदी उतर के हिंदुस्थान में आये तब संभव है कि वे अपनी भाषा भी अपने संग हिंदुस्थान में लाये॥ वे शीघ्र हिंदुस्थान की उत्तर दिशा में फैल गये, और हिंदुओं

की बोली और मत चलाने लगे॥ संस्कृत भाषा उन के सहित फैलने लगी, और उन्हों के अति परिश्रम और उपाय से हिंदुस्थान में संस्कृत भाषा को पवित्र जानने लगे॥ इसलिये कि लोग ब्राम्हणों को बड़ा जाने और उन के धर्म को पवित्र समझें इस कारण उन्होंने सब साधारण लोगों को संस्कृत पढ़ने से मने किया॥ कोई २ कहते हैं कि संस्कृत पढ़ना तो सब को मने नहीं है पर केवल धर्म की पुस्तकें जो संस्कृत में लिखी हैं उनको पढ़ना मने है; पर ध्यान कर देखो कि ब्राम्हणोंने वेदोंही के पढ़ने से साधारण लोगों को नही रोका, बरन संस्कृत के व्याकरण को भी वेद का एक भाग ठहराया, इस कारण से उनको संस्कृत के आरंभ करने का भी निषेध करवाया॥ पर जितना कि ब्राम्हण और लोगों से मिलने झुलने लगे उतनी ही उन की भाषा जिसको वे सदा सुधारे जाते थे साधारण लोगों के साथ बोल चाल में आने लगी॥ और हिंदुस्थान के उत्तर में हिंदुओं का मत पहले फैला था; और दक्खन में बहुत काल पीछे इसलिये उत्तर की प्राचीन बोलियों से संस्कृत के शब्द ऐसे मिलगये कि निदान उन बोलियों की पुरानी बोल चाल पलट गई; यद्यपि बहुतेरे शब्द जो अब बोलियों में बोले जाते हैं बस्तुता पहलेही जाने जाते हैं॥ इसलिये उत्तर की भाषा में ठीक पुस्तक बनाने के लिये संस्कृत पढ़ना उचित है॥ परंतु दक्षिण दिशा में हिंदुओं का राज उत्तर दिशा से बहुत दिनों पीछे हुआ था इसलिये संस्कृत शब्द दक्षिणी बोलियों में थोड़े मिले॥ और यह बात कही गई है, कि मत की चर्चा छोड़कर तिलूगू भाषा और और दक्षिणी बोलियां जो उस से मिलती हुई हैं उनमें संस्कृत शब्दों का बोलना

कुछ आवश्यक नहीं है॥ इसी भांति हिंदुओं के मत सहित संस्कृत हिंदुस्थान में आई, तो जाना जाता है कि उसी मत सहित हिन्दुस्थान में फैल गई और उसके शब्द हिंदुस्थानी बोलियों में बोले जाने लगे॥

यह बोली दिन दिन सुधरती और मंजती गई है; और कदाचित् उसका नाम इसी लिये संस्कृत रक्खा गया हो क्योंकि संस्कृत का अर्थ अत्यंत शुद्ध; वेद के सूत्रों को देखने से संस्कृत का पहला विषय जाना जाता है और जिस प्रकार कि संस्कृत में वेद लिखे हैं वह भाषा अब ऐसी मिटगई है कि अब के संस्कृतवाले पंडित लोग उन वेदों को टीका बिना नहीं समझ सकते हैं॥ रामायन औ महाभारत जिन से हिन्दुओं के मतने नया चलन पाया है, संस्कृत के दूसरे समय का ब्योरा जाना जाता है॥ जो हम यह बात ठहरावें कि ये पोथियां ईसाई संबत् से दो या तीन सौ बरस पहले बनी होगीं, तो यह जाना जाता है कि उस काल में संस्कृत भाषा अत्यंत सुधर गई और मंज गई थी; क्योंकि इन दोनो पोथियों की भाषा अब लों अति शुद्ध औ निरमल समझी जाती है॥ इसके दोसौ बरस पीछे राजा बिक्रमाजीत के द्वार में कबीश्वरों की एक सभा इकट्ठी हुई थी और पुस्तकें उसकाल में बनाई गई थीं वह संस्कृत के सुधरने का तीसरा काल था॥ पुरान नये बने जान पड़ते हैं और उनके बनाने का कारण यह है कि नाना प्रकार की जातों के धर्म की बातों के स्थापित करने के लिये हैं जो इस देश में निपट हो प्रबल हैं; सब से प्राचीन पुरान के संबत् या मिती को हम ढूंढ नहीं सकते कि वे कब बने थे; पर सब से पिछले पुरान को बने हुए पांच सो बरस से अधिक नहीं

ऊये होंगे॥ जो कोई यह प्रश्न करे कि संस्कृत भाषा किसी समय बोली भी जाती थी कि नहीं तो उसका उत्तर यह है, कि बऊत करके ऐसा जाना जाता है कि वह कभी बोली जाती थी॥ बिचारना चाहिये कि मनुष्य पहले बोलते हैं पीछे लिखते हैं; यद्यपि कई एक भाषा ऐसी हैं जिन का बोलना छूट गया है जैसे लेटिन आदि जिनको अब कोई नही बोलता है, पर यह कभी नही होसकता कि ऐसी भी कोई भाषा हो जो पृथ्वी में कभी नही बोली गई होगी॥ एक मनुष्य जो कि बालकपन से सामान्य संस्कृत भाषा में अभ्यास करता हो तो वह और भाषाओं की भांति उसमें भी बात चीत कर सकता है; परंतु वह कठिन संस्कृत कभी बोलने में नही आती जिस में एक एक वाक्य के बीच डेढ़ २ सौ पद होंय॥ हिन्दुस्थान के इतिहास में हिन्दुओं के मतों का ब्योरा भी जानना अवश्यक है; परंतु इस देश के इतिहास में हमको जान पड़ता है कि हिन्दुस्थान में धर्म की बातें ऐसी पलटती गई हैं कि धर्म के प्रत्येक प्रकार और पलटने के समय को ठीक ठीक ठैहराना बऊत कठिन है॥ आदि निवासियों का मत जो कि वेदों से पहले था, अब पहाडों को छोड़कर और कही नहीं रहा; और केवल थोडी सी पहाड़ी जातें इस मत को मानती हैं॥ वेदों का मत जो कि एक समय सब देशों में फैला ऊआ था अब मिटगया; ब्रम्हा की पूजा भी जाती रही है॥ और मत बुध का हिंदुस्थान से निकल कर अब केवल सिंहलद्वीप अर्थात् लंका और पूरब ओर के देशों में रहगया है॥ जैनियों के मत को केवल इसी मत के थोड़े से लोग मानते हैं॥ विष्णु की पूजा और बिशेष करके उस के औतार कृष्ण और शिव की पूजा जो कि पीछे से होने लगी अब तक संपूर्ण हिंदुस्थान में व्याप्त है

पर कहीं कहीं बंगाले में चैतन्य का मत मानते हैं जोकि इस से भी अधिक नवीन है ॥

सब से पहले हिंदुओं की पूजा का प्रकार वेद के अनुसार था; और उसको निस्संदेह उन ब्राह्मणोंने हिंदुस्थान में चलाया था, जो पच्छम से सिंधु नदी पार होकर किसी राजा के सङ्ग आये या लोगों को अपने मत में लाने के लिये ॥ हिंदुओं के मत की जड़ वेद हैं परंतु अब देव पूजा उन के अनुसार नहीं है ॥ वेद के अनुसार हिंदुओं के तीन देवता हैं जैसे आग, पवन, और सूरज, जो गुणों में एक से जाने जाते हैं; और इनको केवल एकही रूप का अंश वर्नन करते हैं ॥ वेदों में बिशेष करके भजन, स्तुति, और आज्ञा हैं जो पहले कंठ ही स्मर्ण होती थीं; और प्रत्येक गुरु अपने शिष्यों को वेदों के सूत्र कंठ सिखलाता था ॥ निदान कृष्ण द्वैपायन व्यासने जो हिंदू राजाओं के वंश में था, चार ब्राम्हनों को उन का बिभाग करने के लिये नियत किया और इन चारों ब्राम्हणोंने चारों वेद इकट्ठे किये; ये पवित्र पुस्तकें श्रुति कहलाती हैं; जिस से जाना जाता है कि वे सैंकड़ों बरसों से कहावत चली आती थीं ॥ वेद में कृष्ण और लिंग के पूजनेवालों की कथाओं का वर्णन नहीं पाया जाता है, केवल अथरवन वेद के पिछले परबों में जो प्राचीन नहीं जाने जाते हैं और कहीं कृष्ण की पूजा का कुछ पता नहीं लगता है; बेदों की बहुतेरी बातों पर अब लोग नहीं चलते हैं, उन के पलटे और और बातें जो पीछे नई निकाली हैं, ठैराली हैं; पुरान की धर्मसंबंधी बातों और तंत्रों का चलन होने से प्राचीन मत नष्ट होगया है ॥ नछत्रों औ तत्वों की पूजा के पलटे राम, कृष्ण और शिव की पूजा करते हैं; यद्यपि हिंदुस्थान

वे वेद की बड़ी प्रतिष्ठा रखते हैं, पर तो भी जो कोई मनुष्य वेद की पुरानी रीत पर चले तो उस को नास्तिक कहने लगेंगे॥ वेद के मत के पीछे ब्रह्मा की पूजा चली जो वेदों के धर्म की भांति मूरतों के पूजने से बिरुद्ध थी॥ उस के पीछे बीरों को देवता मानने लगे, जिस से मूरत पूजने की रीत का आरंभ हुआ; यह मत रामायण और महाभारत से बहुत पक्का और दृढ़ होगया॥ कदाचित् बुध और जैनियों का मत उस के पीछे आया है और इस बात का निश्चय करना सहज नहीं है; जब कि वेद का मत जाता रहा औ बुध का मत हिंदुस्थान में से निकल गया, तब ब्राम्हणोंने देवताओं और देवियों की पूजा का मत स्थापन किया॥

॥ दूसरा अध्याय ॥

सूरज बंशी और चन्द्र बंशी—
इक्ष्वाकु,—राम, और रावन—
परसराम— सगर—यादवों की
छप्पन जाति—वेद—मनुस्मृति—
महाभारत—कृष्ण और पांडव—
जरासंध—युधिष्ठिर और उस
के भाइयों को बनबास— कुरु-
क्षेत्र का युद्ध—बलराम—हिंदुओं
की प्राचीन चाल ॥

हिंदुओं के इतिहासों से जाना जाता है कि सदा हिंदुस्थान में दो कुलों के राजा हुआ करते थे, एक घराने के राजा सूरज बंशी और दूसरे कुल के राजा चन्द्र बंशी थे; इक्ष्वाकु राजा मनु का बेटा था और उसी से सूरज बंश हुआ है; कहते हैं कि पहले वही पूरब की ओर आया और हिंदुस्थान में अपना राज स्थापन किया॥ अनुमान करते हैं कि अयोध्या उसीने बसाई है, जो बहुत युगों तक सूरज बंश के राजाओं की राज धानी रही॥ इक्ष्वाकु के पीछे हिंदुस्थान में बुध आया; जिसने एला के साथ जो इक्ष्वाकु की संबंधनी थी बिवाह किया और हिंदुस्थान में चन्द्र बंश स्थापन किया जिनकी राज धानी बुध के समय में या उसके थोड़े दिनो पीछे प्रयाग थी जिसको अब इलाहाबाद कहते हैं इन दोनो

कुलों की राज धानियां बहुत पास पास होने के कारण यह निश्चय हुआ है कि सूरज वंश और चंद्र वंश के राजाओं का राज्य बहुत बड़ा न था॥

जाना जाता है कि इच्वाकु से लेकर राम के समय तक सत्तावन राजाओंने अयोध्या में राज्य किया॥ यह बात भली हुई है कि यद्यपि हिंदू कवियोंने किसी किसी राजा के राज का समय दस २ सहस्र बरस से भी अधिक लिखा है, पर राजाओं की गिनती जों की तों लिखी है॥ वस्तुता उस समय के जितने ग्रंथ कि इकट्ठे हो सकें उन में केवल राज वंशावली में पलटा पलटी थोड़ी हुई है; और इसलिये वे हिंदुस्थान की प्राचीन कथाओं का विश्वास योग्य वर्णन जानने के लिये सब से अच्छे हैं॥ यूरप के काल निरूपक यह ठहराते हैं कि राजा इच्वाकु ईसवी संबत् के बीस सौ या बाईस सौ बरस आगे हिंदुस्थान में आया था; और यह भी ठहराया है कि इच्वाकु के पीछे एक सहस्र बरस में अर्थात् राजा रामचन्द्र के समय लग सत्तावन राजाओंने राज किया॥ यद्यपि इतिहासवेत्ताओं के लेखे में थोड़ा अंतर पाया जाता है, पर निस्संदेह ऐसा बिचार किया गया है कि रामचन्द्र जो हिंदुओं का पहला राजा था जिसका वृत्तांत कुछएक बिश्वास योग्य है ईसवी संबत् के बारह सौ बरस पहले उपजा था॥ बेन्टली साहिब जिसने हिंदुओं की ज्योतिष बिद्या को पढ़ा था उसने रामचन्द्र की जन्म पत्री को जो बालमीकने लिखी है देखी और उसे बहुत ठीक ठीक बिचार के ऐसा ठहराया है कि राजा रामचन्द्र ईसवी संबत् के ९६१ बरस पहले जन्मा था; पर इस लेखे को हिंदुओं के प्राचीन वृत्तांत से मिलाना कठिन है,क्योंकि वह संबत्

या मिती जो हिंदुओं के शास्त्रों में लिखी है सो बनावटसी है या असंगत ॥

रामचन्द्र सब से पहला सूरबीर हिंदुस्थान का था, उसके युद्ध संबंधी कर्मों का वर्णन बाल्मीक के छोड़कर और सौ कवियोंने किया है; वह सूरज बंश में भूषण था; और अवध नगर के राजा दशरथ का पुत्र ॥ रामचन्द्रने बालकपन में मिथला देश के राजा की बेटी से बिवाह किया, वह भूपति सूरज बंश में एक और शाखा का था; फिर उसकी सैातेली माने राजा दशरथ के बहकाके रामचन्द्र के उसकी स्त्री समेत बनोवास दिला दिया; और बन में से रावन अर्थात् लंका का राजा उसकी स्त्री के हरले गया ॥ और रामचन्द्र ने अपनी सेना के सज सजा और दक्खन के राजाओं से सहायता लेकर रावण की राजधानी पर चढ़ाई की; और समुद्र की धारा पर जो लंका और हिंदुस्थान के बीच में है पुल बांध कर निदान लंका पहुंचा और वहां रावण के मार अपनी स्त्री के फिर ले आया॥ यह बात प्रत्यक्ष है कि अगले समय में यह चढ़ाई अत्यंत बीरता का कर्म था, परंतु बहुत काल बितीत होने के कारण वृत्तांत अस्पष्ट होते हैं; जैसे बहुत दूर से पहाड़ धुंधले दिखाई देते हैं, इसी भांति इस चढ़ाई में कोन कोन बात सच है और कोन कोन बनावट की है यह जान्ना कठिन है॥ कवियों के बड़े बड़े वर्णन से ऐसा अनुमान होता है कि अवध का राजा उस समय सारे हिंदुस्थान में राज करता था; पर रामायण की कई बातों से ऐसा जाना जाता है कि राजा रामचन्द्र के राज का बिस्तार बहुत थोड़ा था; क्यौंकि अयोध्या से चार दिन की बाट मिथला देश के राजा की राजधानी है जो उस समय

स्वाधीन था॥ और भी यह बात प्रसिद्ध है कि राजा दशरथने अश्वमेध यज्ञ में सारी हिंदुस्थान के राजओं को बुलाया और उन राजाओं में काशीवाला राजा भी था, जिसकी राजधानी अवध से सौ. कोस से अधिक दूर न थी; इस से यह बात जानी जाती है कि रामचन्द्र की बीरता इतनी ही थी, और उसके बड़ों का राज बिस्तार में बहुत छोटा था॥ और उसकी बीरता और यश औ बल इतना कुछ नही सराहने योग्य है जैसी बाल्मीक की बुद्धि और ज्ञानं॥ रामायण में राम को ईश्वर का औतार वर्णन किया है, जैसा कि हिंदू लोग अपने सूरमाओं की स्तुति किया करते हैं इस कारण रामचन्द्र के बैरियों को राक्षस बखानना आवश्यक पड़ा क्योंकि देवता मनुष्यों के साथ लड़ने को तुच्छ जानते हैं॥ पर ये बातें केवल बढ़ाव और बनावट की जानी जाती हैं और वर्त्तमान समय को छोड़कर और सब काल में भाट लोग बढावा देते और बनावट करते चले आये हैं॥

यह बात भी बखान करने के योग्य है क्योंकि ऐसा प्रसिद्ध है कि दंडक आरण्य अर्थात् दक्खन के उजाड़ जंगलों में जो कावेरी नदी के तीर लों चला गया है, रामचन्द्र का कटक गया था॥ कहते हैं कि यह जंगल मुनि, ऋषि, रीछ और बंदरों अर्थात् बन्यलोगों के रहने की जगह थी॥ उस नदी को उतरकर रामचन्द्र की सेना जनस्थान अर्थात् मनुष्यों के रहने की जगह में पहुंची; यह देश रावण अर्थात् लंकाधिप के राज में था, जिस के देशों के रहनेवाले रामचन्द्र की प्रजा से कुछएक अधिक गुणवान् थे, इसलिये उन को राक्षस कहते थे॥ और जब कि हम अधिक खोज करते हैं, तो ऐसा संभव होता है कि अगले समय में दक्खन के

छोड़ पर वे लोग बसते थे जो वहां पर समुद्र के मार्ग से आये थे, और सीख पाने की विद्या भी अपने संग लाये थे, जो उस समय हिंदुस्थान की उत्तर दिशा के रहनेवालों में न थी॥

चन्द्र बंश जिस का वर्णन आगे कर चुके हैं, उसका आदि जनक बुध था; वह हिंदुओं के आदि स्थान तातार देश से आया था॥ सूरज बंश के दो विभाग हुए, और उन में दो छोटे २ राज्य स्थापन भये एक अवध का और दूसरा मिथला अर्थात् तिर्हुत का॥ चन्द्र बंश जिस का आदि जनक बुध था, उस में छप्पन शाखा हुईं, और उन से बहुधा सब उत्तर हिंदुस्थान भर गया॥ ऐसा जाना जाता है कि सूरज बंश के राजा उस मत की रीतपर चलते थे जो निदान होले होले सब हिंदुस्थान में फैल गया जिस का मूल यह है कि ब्राह्मण देवताओं से भी बड़े हैं॥ परंतु चन्द्र बंशवाले प्रारंभ ही से बुध के मत को मानते रहे, और उन्होंने ब्राह्मणो की देव विषयक विद्या को कभी नही माना॥ अनेक बातों से जो रामायण और महाभारत में लिखी गई हैं ऐसा जाना जाता है कि प्राचीन काल में ब्राह्मणो और क्षत्रियोंने अपनी अपनी बड़ाई के कारण कई बार आपस में युद्ध किया था॥ जैसा कि सूरज बंश में रामचन्द्र से कई पीढ़ी पहले एक सूरबीर हुआ था जिस का नाम परसराम कहते हैं कि उसने सारे क्षत्रियोंको मार के नष्ट करदिया था, और ब्राह्मणो को उत्तर हिंदुस्थान में अति प्रबल करदिया था; और ब्राह्मणोने उसके उपकार के कारण उसका नाम धर्मावतार या ईश्वर का अवतार रक्खा जो शब्द इस वर्तमान काल में प्रत्येक उपकारी के लिये बोला जाता है॥

पर क्षत्री थोड़े ही दिनों पीछे फिर जों के तों बलवान होगये, और उन्होंने सगर को जो रामचन्द्र का पुरखा और समद्र का राजा बोला जाता था, उसको हिमालय पहाड़ में भगादिया॥ उस प्राचीन समय के वृत्तांत ऐसे गूढ़ हैं कि उन में से सच्चे वृत्तांत का जानना असंभव है॥ पर और २ समाचारों से ऐसा समझ में आता है कि राजा सगर महा बली था, कि समुद्र उसी के नाम से सागर कहलाता है; और उसने अपने जहाजों के द्वारा समुद्र में बड़े बड़े अद्भुत कर्म किये॥ हम को ऐसा जान पड़ता है कि अगले समय में पूर्व ओर के द्वीपों में हिंदुओं का मत फैलाया गया था, और यद्यपि मुसलमानो ने हिंदू धर्म को बहुतेरे द्वीपों में से नष्ट करदिया, परंतु तो भी बली नाम द्वीप में जो जावा के पास है अबलों हिंदुओं का धर्म फैला हुआ है॥ इस छोटे द्वीप में बहुत करके हिंदूही बसते हैं और वे हिंदुओं की मूरतों को पूजते हैं, हिंदुओं की भांति यात्रा करते हैं, और ब्राह्मणों को पुरोहित बनाते हैं; और वहां स्त्रियां पत के संग सती होती हैं; और इसी द्वीप में देवताओं की भांति सगर भी समुद्र देवता के नाम से पूजा जाता है॥ इसलिये यह बिचार सच्चा जान पड़ता है, कि पहले पहल राजा सगर के समय में हिंदुओं का कटक और धर्म समुद्र उतर के पूरब के द्वीपों में फैल गया था। परंत उन द्वीपों में कोई मंदिर ऐसा प्राचीन नही है कि जो ईसवी संबत् से आठ सौ बरस आगे का बना हो॥

राजा बुध के पड़पोते का नाम ययाति था, जिस के तीन बेटे थे, पहले का नाम उरु दूसरे का पुरु और तीसरे का यदु था। पहलेने कुछ जस नही किया था॥ और पुरु की संतान पृथ्वी पर बढ़गई थी, और उन की संतान में से हस्ति ने

महाभारत से पांच सौ बरस पहले हस्तिनापुर को बसाया था॥ जरासंध जो मगध देश का राजा था, और पांडव जिन की महा भारत में जीत हुई ये दोनो पुरु के बंश में थे॥ यदु कुल में अत्यंत नामी कृष्ण और उसका भाई बलदेव अर्थात् बल-राम थे जो युधिष्ठिर के समय में थे॥ चन्द्र बंश का वृत्तांत सूरज बंश के वृत्तांत से भी अधिक गूढ़ है॥ जब कि हमने जान लिया कि सूरज बंश में इक्ष्वाकु से रामचन्द्र लों सत्तावन राजा हुए, औा चन्द्र बंश में राजा बुध से लेकर पांडवों के समय लों केवल छयालीस तो इस से जाना जाता है कि रामचन्द्र कृष्ण और युधिष्ठिर से दो सौ बरस पहले हुए थे, पर यह बात संभव नहीं है॥ कई एक साहिब बिद्यावान् ऐसा बिचार करते हैं कि कई एक राजाओं का राज छोड़दिया है, और जब कि संबत् मिती को बहुत ठीक ठीक मिलाया तो बहुत करके ऐसा जानागया कि महाभारत ईसवी संबत् से ग्यारह सौ बरस पहले अर्थात् रामचंद्र के पीछे सौ बरस के भीतर भीतर हुआ था॥ यह मिती महाभारत की लिखावट से संभव होती है; जब से कि महाभारत हुआ तब से अयोध्या का राज हीन होगया; और उसके बिगड़ने से कनोज का राज नये सिरे से प्रबल हुआ, इससे हम को बिचार करना चाहिये कि रामचंद्र के राज के समय और कृष्ण के समय के मध्य काल में अयोध्या की राजधानी बिगड़गई और कनोज नये सिरे से राजधानी हुई॥ बेन्टली साहिब जिसने गर्गमुनि की गणित को जो उस समय का अत्यंत नामी ज्योतषी था और पांडवों का उपदेशक जाचा है; वह साहिब यों कहता है कि महाभारत जिसका ब्योरा महाभारत नाम पुस्तक में लिखा है ईसाई संबत् से पांच

सौ पिछत्तर बरस पहले हुआ था पर हम इन जुदे जुदे ग्रंथों के अंतरों को मिला नहीं सकते॥

महाभारत का वर्णन करने से पहले हमको यह भी लिखना चाहिये कि महाभारत से थोड़े एक दिनों पहले व्यास ने वेदों को जैसे अब हैं इसी डौल में संग्रह करके सवार लिया; और व्यास की माता कहारी थी पर उसका पिता राज घराने पुरु के बंश में से था; व्यासने अपने सहारे के लिये चार बड़े बडे पंडितों को बुलाया, जिन का नाम पइल, वैसंपायन, जयमिनि और सुमंत था; और उन्ही पंडितों की सहायता से इन चारों वेदों को उसी रीत पर बिभाग किया जो अब चलती है॥ यहां पर हमको यह भी उचित है कि मनु की धर्म पुस्तक के संग्रह होने का कुछ ब्योरा लिखें कि उसही के पहले अध्याय में लिखा है कि मनुसंहिता को मनुने नही लिखा है॥ जैसा कि वेद उन धर्म्मी आज्ञाओं औ परंपरा की कहावतों से संग्रह कियेगये जो सुनी सुनाई थीं या कहावतों में उनकी चरचा होती चली आती थी वैसेही यह भी संभव होता है कि मनु की राजनीति भी ऐसी ही अन लिखी हुई और सुनी हुई बातों से संग्रह की गई थी जिन को पीढ़ी से पीढ़ी तक स्मरण रखते चले आते थे इसलिये कि उनको बड़ी बड़ी आज्ञा समझें, ऐसा कहते थे कि उनको मनु ने जो हिंदुओं का जनक था बनाया है॥

अब हम महाभारत का ब्योरा लिखते हैं जिस को यद्यपि पचीस सौ बरस होचुके हैं तो भी वह लोगों के मन से नही बिसरा; और अब के हिंदू इसी युद्ध के ब्योरे को उन लड़ाइयों के वर्णन से भी अधिक ठीक ठीक जानते हैं जो इन पिछले सत्तर बरसों में हुई हैं; जिन से सारा हिंदुस्थान दूर

और अन्य देश निवासियों के अधिकार में होगया॥ और वे चढ़ाइयां जो हिंदुस्थान में और और देशों की भांति सूरमाओं ने की हैं जिन से बीती ऊई बातों की सुध आती है, जिन से राज की उलट पलट ऊई, और बंश पलट २ गये और धर्म फिर गया उन सब में महाभारत प्रधान है॥ इस लड़ाई के समय सूरज बंश का राज्य केवल उस थोड़े से स्थान में रहगया था जो पहाड़ों और गंगा के बीच है॥ और यदु बंश सारे हिंदुस्थान में फैलगया था॥ यदु बंश में अति प्रधान राजा ये थे॥ पहला जरासंधि जो मगध देश का राजा था; और दूसरा कंस का घराना जो सूरसैन की राजधानी मथुरा में राज करता था जिसका ब्योरा हिंदुस्थानी और यूनानी इतिहासों में पाया जाता है; और तीसरा पुरु बंश जो हस्तिनापुर का राजा था। इस महा युद्ध में जिस से सारा उत्तर हिंदुस्थान कांप उठा यही बंश मुख्य था॥ कंस मथुरा के राजा ने जरासंध की बेटी से बिवाह किया था जो मगध देश का महा बली राजा था, और कईएक राजा उसके सहायक थे जिन में यवनों का राजा बहुत बली था॥ यद्यपि हम जान नही सकते हैं कि कोनसा राजा ऐसा ऊआ था पर इस बात से हमको यह एक दृढ़ प्रमान है कि सब समय में और देशों के राजा, और देशाधिपतियों ने हिंदुस्थान में राज तो नही किया पर अधिकार रक्खा॥ कृष्ण ने जो यदुकुल में था, कंस को मार उसकी गद्दी छीनली॥ फिर जरासंध ने कंस का पलटा लेने के लिये मथुरा पर चढ़ाई की कहते हैं कि उसने मथुरा को अठारह बेर घेरा था, निदान उसने मथुरा को लेलिया और कृष्ण और उसके संगी समुद्र के तीर भाग गये; और वहां

जाकर द्वारका को बसाया॥ जब कि हम बिचारते हैं कि सूरसेन के बंश की बीरता कैसी प्रसिद्ध थी कि जिनके विषय में मनु ने कहा है कि सूरसेनियों का घराना लड़ाई में हरावल होने के योग्य है, इस से प्रगट जाना जाता है कि उन्होंने मथुरा की रचा करने में अत्यंत पराक्रम और बीरता दिखाई होगी॥

हस्तिनापुर के राजा सांतन के पुत्र चित्र के कोई बेटा न था, पर उसके बिवाहिता स्त्री से दो बेटियां थीं और एक पांडिया नाम बेटी जारज थी॥ व्यास जो राजबंश का गुरु था और राजा सांतन का बेटा उस के पांडिया के पेट से जो उसकी भतीजी लगती थी एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम पंडु था, जो अपने नाना की गद्दी पर बैठा था; पंडु ने कुंनती से बिवाह किया, जो बसुदेव की बहन थी, और कृष्ण और बलदेव की नाते में फूफी लगती थी॥ कुंती के पांच पुत्र हुए जो पांचों पांडव कहलाते थे, उन में से एक का नाम युधिष्ठिर दूसरे का भीम तीसरे का अर्जुन चौथे का नकुल पांचवें का सहदेव था; पर कई ग्रंथों में ऐसा लिखता है कि नकुल और सहदेव दूसरी स्त्री के पेट से थे॥ परंतु हिंदुओं के प्राचीन इतिहास से ऐसा जाना जाता है कि अगले जनम के पापों के कारण कुंती बांझ रहगई थी, जब उसने देवताओं का मन यंत्र मंत्र से मोहित किया तब उनकी दयासे उसके पंच पुत्र हुए और ये पांचों पंडु के बीज से नही हुए थे पर और देवताओं की संतान थे निस्संदेह इस राज बंश में यहां कुछ असंभव बात होगई थी॥

हिंदुओं के शास्त्रों से ऐसा भी समझ पड़ता है कि व्यास के अंबिका के पेट से जो उसकी दूसरी भतीजी थी, और पंडिया

की सगी बहन लगती थी एक अंधा बेटा ऊआ जिसका नाम धतराष्ट था॥ जब कि राजा पंडु मरगया तब धृतराष्ट अंधे पन के कारण सिंहासन पर न बैठ सका, कहते हैं कि उसने अपने पुत्र दुर्योधन को छोड़कर निज भतीजे-युधिष्टर को हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठाया॥ और बऊतेरे इतिहास वेत्ता ऐसा लिखते हैं कि दुर्योधन ने राज गद्दी छीन ली थी; निदान चचेरे भाइयों में परस्पर ऐसी लड़ाई और झगड़ा ऊआ कि पांचों पांडव इस देश को छोड़कर फिर अटक पार चलेगये॥ ठीक उन्हीं दिनों हिंदुस्थान के राजा कंपिल नगर पर द्रौपदी के स्वयंवर में इकट्ठे ऊए थे जो पंजाब के राजा की बेटी थी, वह राजा भी यदु बंश में था और वहां यह प्रतिज्ञा थी; जो सब में बली हो सो इस कंन्या को ले निदान अर्जुन ने अपनी धनुष विद्या से सबको जय किया और वह राज कन्या पांचों भाइयों की स्त्री ऊई; इस बात को इतिहासवेत्ताओंने छिपा दिया है क्यौंकि उस से यह बिचार निश्चय होता है कि यदु बंशी तातार से हिंदुस्थान में आये थे जहां ऐसा चलन है कि कई भाइयों के बीच एक ही स्त्री होती है॥

अर्जुन की जीत के कारण पांचों भाइयों का नाम और जस ऐसा दूर दूर तक फैल गया कि धृतराष्ट्र ने उन पांचों भाइयों को फिर हस्तिनापुर में बुलालिया, और झगड़ा मिटाने के लिये अपने राज के दो भाग कर अपने लड़के दुर्योधन और पांचों भतीजों को बांट दिया॥ दुर्योधन हस्तिनापुर का राजा बना और युधिष्टर ने वहां से थोड़ी दूर पर इन्द्रप्रस्त को अपनी राजधानी बनाया; जो थोड़ेही दिनों में झट पट पुरानी राजधानी की समान सुन्दर और रमणीक होगई; और युधिष्टर का राज्य दिन २ बढ़ने लगा निदान

उसने अभिमान करके अश्वमेध यज्ञ करने की सामा की जो यह एक तातार देश की रीत है; और हिंदुस्थान में केवल वे राजा जो सबसे अधिक महा बली होते हैं अश्वमेध यज्ञ करते हैं और जो अश्वमेध करता था सोई महा बली भूपति समझा जाता था; इस बात से मगध के राजा जरासंध को बक्कत क्रोध उठा क्योंकि इससे उसके इसमिथ्या अभिमान में कि मैं ही सब राजाओं में महा बली हूं अंतर आता था॥ कृष्णने समय पा युधिष्ठिर को अपनी बातों में लाकर सेना संगली और अपने प्राचीन शत्रु जरासंध की क्षय करने को चला; और भीम और अर्जुन को संग लेकर पहाड़ों के फेर फार की बाट से मगध देश की राजधानी को आनकर घेर लिया॥ जरासंध यद्यपि घबरा गया था पर तो भी उसने तीन दिन बड़ी बीरता से युद्ध किया, पर निदान भीमसेन ने उसे मारडाला; पर बक्कतेरी जगह ऐसा लिखता है कि कृष्ण और बलदेव ने उसे आरे से चीर डाला॥

इसी बीच राजा युधिष्टर के यहां अश्वमेध यज्ञ होने की सभा होरही थी और सारे उत्तरा खंड के राजा उसकी सहायता के लिये बुलाये गये॥ परंतु कौरव जो राज कुल में ज्येठे थे इस महा प्रतिष्टा के कर्म से मन में क्रुद्ध क्रए और दुर्योधन अपने बल से तो न रोक सका पर युधिष्टिर से छल करने का उपाय किया; ऐसा जान के कि युधिष्टर की इच्छा जुये के खेल में रहती है, उसको निपटही गंभीर खेल में लगाया, और क्रम क्रम से बाजी लगाई पहले उसकी स्त्री की और दूसरी उसके राज की बाजी बदी; युधिष्टिर एक ही पांसे में दोनो हार गया, और दुर्योधन ने उसका राज पाट जीत कर बारह बरस को उसे देश निकाला दिया युधिष्टिर और

समझ में आताहै कि उसका होना रामचन्द्र के पहले निश्चय होसके॥ महाभारत पुस्तक जिसको कोई कोई लोग पांचवां वेद कहते हैं व्यासने बनाया है जिसको लोगों ने अनजान अथवा प्रसंसा के कारण राजवंश का करके बखाना है उसने वेदों को संग्रह किया था पर यह बात असंभव है क्योंकि वेदव्यास महाभारत के सूरमाओं का दादा था॥ और उन कथाओं से जिन में वह यवनासुर का ब्योरा लिखता है जो कृष्ण से लड़ा था इस बात से ऐसा पाया जाता है कि महाभारत नाम ग्रंथ हिंदुस्तान में सिकन्दर के आने से पीछे बनाया गया है क्योंकि हिंदू इतिहासवेत्ता लिखते हैं कि प्रत्येक काल में एक व्यास जनम लेता है इस कारण हम इन पोथियों का ठीक संबत् नही ठहरा सकते हैं कि ये पोथियां कोन संबत् और कोन मिती में बनी हैं; पर यह बात निश्चय है कि ये दोनों कवीश्वर अर्थात् वाल्मीक और व्यास एकही काल में उपजे हैं॥ और यह भी कुछ अचंभे की बात नही है कि जब वाल्मीक ने सूरजवंश की कथा लिखी तब व्यास को भी उसे देखकर लिखने की इच्छा हुई; इन दोनों पोथियों से संस्कृत भाषा का बनाना बहुत दृढ़ होगया है और निस्संदेह उन से हिंदुओं की जात में सूर्माओं की पूजा ठहर गई॥

कृष्ण अपने मरने के पीछे देवता होकर हिंदुस्थान में पुजनेलगा पर हम इस बात को ठीक मिती नही जान सकते कि वह कब से पुजने लगा इस महाभारत में जिस में उसके प्रसिद्ध होने का ब्योरा लिखा है और उसके पढ़ने से निश्चय करके उसके ईश्वर होने का बिश्वास होता होगा॥ अब कृष्ण की पूजा सारी हिंदुस्थान में फैल गई, और उसकी पूजा और

सारे देवताओं की पूजा से जानी जाती है और ब्रह्मवैवर्त में केवल कृष्णचंद्र ही की बड़ाई का ब्योरा लिखा है, उस से ऐसा जाना जाता है कि वह हिंदुस्थान में मुसलमानों की चढ़ाई के पीछे लिखा गया है और उसे बने चार सौ बरस से अधिक नही ऊए॥ बलदेवजी अर्थात् बलराम जो हिंदुस्थान का बीर कहते हैं कि उसने पाटलिपुत्र का राज बनाया, और उस नगर को गंगा किनारे बसाया जो पीछे से ऐसा रमणीक और सुन्दर बनगया कि हिंदुस्थान के अत्यंत नामी नगरों की गिनती में आया अब उसका नाम ऐसा मिट गया है कि उसका कोई चिन्ह नहीं रहा और लोग उसके स्थान का संदेह भी करते हैं॥ परंतु ऐसा संभव होता है कि वह जहां पर सोन और गंगा मिलती है वहां से थोड़े ही नीचे की ओर बसता था उसी जगह के पास जहां पर अब नया नगर पटना बसता है॥ और कहते हैं कि महाबलीपुर करनाटक में और बलीपुर बिदर में इन दोनो नगरों को भी बलदेवजी ने बसाया, और जो इन दोनो नगरों को बलदेवजी ने जिसे देवता कहते हैं बसाया हो तो संभव होता है कि उस समय बसाये गये होंगे जब कि देश निकाले के समय पांडवों के संग हिंदुस्थान में वे रमते फिरते थे॥

महाभारथ से लेकर राजा महानन्द के समय लों जो सिकंदर का समकालीन था हिंदुस्थान के वृत्तांत बऊत संदिग्ध हैं और अनमिल बात मिलाकर एक शुद्ध इतिहास बनाना निपट दुर्लभ है॥ जब कि अर्जुन के पोते परीछित की संतान इन्द्रप्रस्थ में राज करती थी तब जरासंधि की संतान मगध देश के सिंहासन पर थी॥ शास्त्र में कहा है कि जरासंधि से लेकर रिपुंजय तक तेईस राजा ऊए॥ रिपुंजय को उसके

मंचो सोनक ने मार राजगद्दी आप ली पर हिंदुस्थान की प्राचीन कथा का इस छोटी पुस्तक में जिसके बीच हिंदुस्थान का संक्षेप वर्णन है लिखने की इच्छा नहीं है क्योंकि इस विषय पर बहुतसे इतिहासवेत्ताओंने भिन्न भिन्न लिखा है इसलिये हम पांच सो छः सो बरस के ब्योरे के केवल अनुमान ही पर छोड़ देते हैं; और हिंदुस्थान के उन वृत्तांतों का लिखते हैं जिन के लिखने में हमको यूनान के वृत्तांतों से भी कुछ सहारा मिल सकता है॥

मुसलमानो के वृत्तांतों में ऐसा लिखा है कि प्राचीन समय में फारस के लोग केवल सिंधु के पूरब ओर वाले देशों में ही नहीं आये थे बरन हिंदुस्थान में जीतते हुए दूर दूर लों बढ़ गये थे पर इस बात के बहुत काल हुआ है इसलिये सच्चे इतिहासों के काल से अलग जाना जाता है परंतु हम इस से केवल इतनाही जानते हैं कि प्राचीन समय से सारी हिंदु-स्थान अपने स्वाधीन कभी नहीं रही है॥ हिंदुओं के शास्त्रों में सिंधु नदी के हिंदुस्थान की सीमा रक्खी है, और हिंदुओं के उसके पार उतरना मने लिखा है; पर हिंदू शास्त्र अथवा हिंदू राजा सिंधु के पश्चिमवाली जातों के इस पार उतरने से कभी नहीं रोक सके॥ निश्चय जब कि हम ऐसा बिचारते हैं कि हिंदू तातार देश से आये हैं तो हम ऐसा भी अनुमान करसकते हैं कि और जातें भी जो उस देश में उपजी हैं हिंदुस्थान में आई होगीं; और हम के यह बात भी प्रत्यक्ष दिखाई देती है कि बहुत काल नहीं हुआ कि हिंदू सिंधु॥ पार जाया करते थे,और अपने बैरियों से पलटा लेते थे सिंधु पार जाने या समुद्र में जाने की आन जो हिंदू मानते हैं यह नई ही रीत है॥ इस समय से

पूर्व जब तक कि ब्राह्मणों ने छत्रियों को न जीता और बुध के मत को हिंदुस्थान में से न निकाला था, तब तक हिंदू लोग बड़े बीर गिने जाते थे, और बहुधा युद्ध के लिये चढाई करते थे ॥ संभव होता है कि वह यही काल था कि जिस में उन्होने अटक पार होकर तातार देश पर चढ़ाई की थी और समुद्र उतर कर पूरबी द्वीपों में भी जाकर अपना मत फैलाया था, और यह बात थोडे कालकी है कि हिंदू लोग औरोंका मत बुराजान निरुद्योगी और आलसी हो गये हैं और इस भय से निजदेश छोड पर देश नहीं जाते कि कदाचित् और मत वालों से मिलकर हमारी जाति न जाती रहै ॥

॥ तीसरा अध्याय ॥

दारा को चढ़ाई—उसके समय में हिंदुओं की चाल—तक्षक अर्थात् नाग कुल की चढ़ाई—गौतम—बौद्ध मत—बौद्ध मत के कारण—बौद्ध मत की शिक्षा के गुण—श्री युत सिकंदर का आगमन—उसने पोरस को जय किया—सेना ने सिकंदर की आज्ञा न मानी—सिकंदर के समय में हिंदुओं की चाल ॥

जो जो चढ़ाइयां पश्चिमवालों ने हिंदुस्थान पर की हैं और उन के शुद्ध वर्णन हमारे पास हैं उन में सब से पहली चढाई फारस के दारा राजा की है ॥ वह संवत् ईसाई के पांच सौ अठारह बरस पहले कैखुसरो के सिंहासन पर बैठा था, और उसने यूनान के सागर से लेकर सिंधु के किनारे लग सारे देश को जीत के अपने राज में मिलाया ॥ और इस बड़े भारी राज पर भी संतोष न करके हिंदुस्थान को जहां के धन की उस ने बहुत भारी चरचा सुनी थी, उस को भी अपने राज में मिलाना चाहा ॥ पहले पहल उसने सैलेक्स को जो उसके लड़ाई के जहाजों का सेनापति था आज्ञा की कि तुम सिंधु नदी के तट पर ऊंचे देशों में बेड़ा बना उसी नदी के मार्ग से समुद्र तक जाओ ॥ यद्यपि सैलेक्स अंत में जयवंत भया, परंतु उसे इतनी

कठनाई पड़ी कि अपने चलने के स्थान से समुद्र लों तीस महीने में पड़ंचा उसने इस देश के द्रव्य का समाचार जिस में होकर वह गया आया था दारा से कहा उसने उसकी चर्चा सुन कर हिंदुस्थान को जीतने का बिचार किया इसलिये वह बड़े भारी युद्धशील कटक से हिंदुस्थान में आया, और हरएक बैरी को जीतकर उन देशों को जो सिंधु के तीर तीर बसते हैं अपने राज में मिलाया॥ उसकी जीत के बिस्तार को हम नही ठैरा सकते हैं, कि उसने कहां लों जीता था, पर ऐसा निश्चय है कि फारस के राज में हिंदुस्थानी सूबा बिस्तार में बड़त बड़ा होगा; क्योंकि उसको सब देशों से अधिक फल-दायक जानता था; जितना कर कि फारस के सारे राज का होता था, उसकी तिहाई केवल इस इकेले सूबे का था॥ और ऐसा कहा जाता है कि जब सिंधु की पच्छम ओरवाले सूबों के राजकर में चांदी दी जाती थी तब हिंदुस्थान के राज कर का सोना दिया जाता था॥ हेरोडोटस जो यूनानी इतिहास-वेत्ताओं में प्रथम है ऐसा लिखता है कि दारा के सेनापतियों के वर्णन से यह जाना जाता है कि वे लोग जो हिंदुस्थान की दक्खन ओर को बसते थे और फारसी के राजाओं ने उन्हें कभी नही जीता था, उन लोगों का रंग काला था॥ और जीवों को वे कभी नहीं मारते थे केवल उन्ही अनाजों और फलों को जो जो धरती से उपजते थे खाते थे; और बड़तकर के वे चांवल खाकर जीते थे; और जो मनुष्य उन में बड़त मांदा होता था, और उस के जीने की आस नहीं रहती थी तो वे उसको मरने के समय गंगा तीर लेजाते थे; और देशी रुई से कपड़ा भी बनाते थे॥ ये हिंदुस्थानी लोग जिन का ऊपर बखान कियागया निस्संदेह गंगा के

सूबें के रहनेवाले थे; और इस से हमको यह बात प्रत्यक्ष होती है कि प्रधान २ बातें जिनसे अब इन दिनों में हिंदुस्थानी लोग पहचाने जाते हैं तेईस सौ बरस ऊये उस समय में भी ये बातें जैसी अब प्रसिद्ध हैं वैसी ही थीं॥

ऐसा जाना जाता है कि ईसाई संवत् के छह सौ बरस पहले या दारा के आने से थोड़े ही दिनों पूर्व एक नई जाति ने तातार देश से सिंधु नदी उतर कर हिंदुस्थान में बऊतसी जय पाईथीं, उसी समय में कदाचित् उसी से एक और झुंड तातार के लोगों का यूरप के उत्तर की ओर जाकर स्कैंडिनेविया में बसा॥ जो हम ऐसा ठैरावें कि ये दोनो एक ही काल में देश त्यागी एक ही देश से पूरब पच्छम को गये थे तो ऐसा संभव हो सकता है; क्योंकि उनके एकसे लच्छन और चलन जो स्कैंडिनेविया के लोगों और तातारी लोगों में जो हिन्दुस्थान में बसते हैं पाये जाते हैं; जब कि वे लोग शिक्षा रहित थे उस काल में वहां सती होती थी इसरीत से भी अधिक आपस में मिलते हैं; और कहा जाता है कि पूर्बकाल में स्त्री के सती होने की रीत यूरप के उत्तर की ओर मूरखता के समय में थी और हम बऊत करके ऐसा बिचार करते हैं कि इस रीत को हिन्दुस्थान में तातारी लोगों ने चलाया पर यह बिचार केवल अनुमान से कहते हैं॥

तातार के देश त्यागी तक्षक अर्थात् सांप के वंश में कहलाते थे, क्योंकि ऐसा बिचार किया गया है कि उन के बंश में सबों के एक सांप का सा चिन्ह होता था; और वही चिन्ह उन की पहचान थी॥ संभव होता है कि वे अपने राजा शेषनाग की सहायता और मार्ग बताने के द्वारा हिन्दुस्थान

के उत्तरवालेदेशों में जीतते हुये बढ़ आये, और होले होले उन्हीं जातों में जो उन से पहले आनकर वहां बसी थीं मिल जुल गये; और उन्होंने मगधदेश के राज को जीतकर अपने आधीन किया और मगधदेश में दस पीढी लों नाग बंश ही का राजा राज करता रहा; ऐसा जाना जाता है कि वे बुध ही के मत को मान ते थे; शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि हिन्दुओं ने उन राजाओं से कई बेर बड़ा बड़ा युद्ध किया जो नागदेवता और असुर बोले जाते हैं॥ राजा महानंद मगध-वाले नाग बंश में से था जिस का हम विचार कर सक्ते हैं कि जब सिकंदरने हिंदुस्थान पर चढ़ाई की थी उस समय में वह पाटलिपुत्र का राजा था और यूनान के इतिहासवेत्ता-ओं ने उसको पूरब देश का राजा करके बखाना है॥

यूरपीय इतिहासवेत्ता ऐसा लिखते हैं कि उसी समय के लग भग जब कि दारा ने हिंदुस्थान पर चढ़ाई की थी तब और कोई ऐसा कहते हैं कि उसके सौ बरस पीछे गौतम ने बौद्ध मत को हिन्दुस्थान में पक्का और दृढ़ किया॥ ऐसा संभव होता है कि यदुकुल की छप्पन जातें बरन सारे चंद्रवंशी अत्यंत प्राचीन समयों से बौद्ध मत को मानते चले आते थे, जो कदाचित् वेदों के अनुसार था और ब्राह्मणों और पुरानों के मत जो बौद्ध मत की अपेक्षा नवीन हैं उससे नहीं मिलते थे॥ गौतम जिस को सातवां बुद्ध कहते हैं जाना जाता है, कि उसने बुद्ध मत के बचनों को पक्का और दृढ़ किया॥ वह मगध देश में उपजा था जो बिहार की दक्खन दिशा को है॥ और वह बहुत करके गया में रहता था॥ वह पांच सौ चालीस बरस आगे ईसाई सम्वत् के जन्मा था, पर तिब्बत वालों के इतिहासों में जो बौद्ध मत को

मानते हैं, ऐसा लिखता है कि वह संबत् ईसाई के चार सौ तीस बरस पहले जन्मा था॥ उस के जनम स्थान का बिषय भी जुदी जुदी भांत से वरनन करते हैं॥ चीनवाले, स्यामवाले, और जापान वाले और और पूरबी जातें जो बुध के मत को मानती हैं ऐसा कहती हैं कि उसने मगध देश में जन्म लिया था॥ और ब्रह्मा के वकील जो श्री युत लार्ड विलियम बेंटिक साहिब को भेट देने के लिये हिंदुस्थान के उत्तरवाले देशोंमें आये थे वे बुद्ध गया में अपने गोत्र जनक की पूजा के लिये ठहरे थे॥ पर तिब्बतवालों के इतिहासों में ऐसा लिखा है कि वह कपीलावस्थ में उपजा था जो कौसल अर्थात् अयोध्या का एक नगर है और उसके जनम स्थान के बिषय जो लोग कई प्रकार से बरनन करते हैं यह भेद भी एक हो सकता है; जब कि हम ऐसा बिचार करते हैं कि गौतम के उत्पन्न होने के समय सारे उत्तरा खंड के देश मगध के राज में थे और अयोध्या का देश थोड़ासा जो सूरज बंशियों का था वह भी मगध देश ही के राज में मिला हुआ था इसलिये इतनाही कहना बहुत है कि गौतम मगध ही के देश में उत्पन्न भया था और बुध का नाम जिसने चन्द्र बंश को बनाया प्रतिष्टा के लिये दिया गया था॥ जिस समय कि वह उपजा था उस समय बुद्ध का मत सारे उत्तर हिंदुस्थान में अधिक करके फैला हुआ था, और ब्राह्मणों का मत जो अब सारी हिंदुस्थान में फैला हुआ है केवल छोटे से देश कन्नोज में था॥ बौद्ध मत के फैल जाने का कारण यह है कि इलोरा की गुफा केवल बुध ही की पूजा के लिये बनाई गई थीं उन गुफाओं को केवल महावली औ द्रव्यमान बौद्ध मतावलंबी राजाओंने बनाया था, पर अब हम

ऐसा जान सकते हैं कि इस मत के चिन्हों के बचे रहने के लिये बड़ा भारी पहाड़ खोखला किया गया था, और बड़े परिश्रम से मंदर बना ये गये थे॥ और उन राजाओंने जो बुध के मत पर चलते थे बुध की मूरत पहाड़ के बीचों बीच खुदवाई थी पिछले समय में जब कि विष्णु, और शिव के मत ने बुध के मत को हिंदुस्थान से मिटाया, और उस धर्म के मान्नेवाले प्रथ्वी पर बहुत बलवान् हो गये, तब वे मन्दिर विशेष करके ब्राह्मणों की पूजा के लिये ठहरें॥ इसी कारण अबके देवताओं की मूरतें बुध की प्रतिमाओं के पास बनी हैं॥ पर वे लोग जिन्हों ने उन गुफाओं को अच्छी भांति देखा है वे ऐसा कहते हैं कि बुध की प्रतिमाओं से देवताओं की प्रतिमा अधिक सुन्दर और सुडोल खोदी गईं हैं, और इस से ऐसा समझ पड़ता है कि वे बुध की प्रतिमाओं के खुदने के पीछे बनी हैं, जिस समय में संगतराशी की बिद्या बहुत ही सुधर गई थी, इसलिये जाना जाता है कि ये मन्दिर बुध के मतावलंबी लोगोंने बनाये होंगे॥

बौद्ध मतवालों की रीत ब्राह्मनों की रीत से ऐसी बिरुद्ध थी कि बाल्मीक ने रामायण में लिखा है कि बौद्ध मतवाले राक्षसों के समान हैं तो उस के लिखने से ऐसा जाना जाता है कि बहुधा उन में आपस में बड़ा बैर था बौद्ध मतावलंबी ब्राह्मनो के देवताओं को नही मानते थे, और वेदों के मत पर बहुत चलते थे और उन में कुछ जातों का बिचार नहीं होता था, और उन में पुजारीपना बापोती अर्थात् पीढी पीढी नहीं होता था और बस्तुता ऐसा समझ में आता है कि आगे प्राचीन समयों में ब्राह्मणों में भी इसी रीत का चलन था, और यह भी संभव होता है कि बिश्वामित्र

पहले शूद्र था और पीछे से ब्राह्मण बन गया; बाद्ध मत के पुजारियों ने एक अलग ही जात बनाई थी जिसमें गृहस्थी लोग मिल सकते थे और उस में जती रहने का बचन करते थे, परंतु बिपरीत इस के ब्राह्मनों में यह रीत नहीं थी और दूसरी जात उन्हों में नहीं मिलसकती थी और उन में जनेऊ लेने की भांति बिवाह करना भी जोग्य था, और प्रत्येक ब्राह्मण के एक पुत्र का होना उसकी क्रिया कर्म के लिये बहुत ही आवश्यक था ऐसे बड़े बिचार और प्रभेद होने के कारण कुछ आश्चर्य की बात नहीं कि ब्राह्मन बौद्ध मतवालों से अधिक बैर बिरोध करते थे जितना बैर कि वे क्षत्रियों से रखते थे जो कि उन के प्राचीन बैरी थे और कदाचित् यह बैर इसलिये बढ़ गया था कि वे बल हीन हो गये थे और बौद्ध राजाओं का अधिकार बढ़ गया था जिन का राज सारी उत्तर हिंदुस्थान में फैल गया था॥ और ऐसा जाना जाता है कि जब से गौतम उत्पन्न हुआ तब से नये सिरे से इन दोनो जातों में फिर बिरुद्ध हो गया बौद्ध धर्मवालों की अपेक्षा ब्राह्मणोंका धर्म उनकी भड़कीली रीतों के कारण अज्ञान लोग बहुत मानते थे, बहुधा ब्राह्मणों के मत में लोग नित २ आते गये यहां तक कि ब्राह्मण जथा बांध कर इस बड़े झगड़े के लिये बहुत दृढ़ हो गये और बहुत सा कटक बन गया तब उन्होंने बौद्ध मत के लोगों को हिंदुस्थान से निकाल दिया और आप उस के अधिपति भये॥

हम ने ऊपर लिखा था कि सिकंदर के दो सौ बरस पहले फारस के दारा नाम राजा ने हिंदुस्थान के एक बड़े भाग को फारस के राज में मिलाया था और हिंदुस्थानी प्रजा पर बड़ा भारी कर लगाया पर हम को यह बात

निश्चय नहीं होसकती है कि जब फारस का राज्य और पूरब के राज्यों की भांति राजाओं के सुख भोग में रहने से बिगड़ा तब भी यह दूर देश उस में मिला रहा या नहीं; पर यह बात कई प्रकार से निश्चय हो सकती है कि जब तक सिकंदर मेसोडन के राजा ने जो युद्ध करने के उपायों में बहुत ज्ञानी था फारस के राज को जीता था तब लग वह एक भाग फारस के राज का रहा था॥ सिकंदर यूनानियों की थोड़ीसी सेना से जिसको उसके बाप फैलकूसने लड़ने की विद्या सिखाई थी, और अपने हाथों उन्हें पक्का किया था, फारस के राज्य को बिगाड़ कर अपने कटक समेत सिंधु नदी के तट पर आया॥ और कोई २ इतिहासवेत्ता ऐसा कहते हैं कि वह केवल हिंदुस्थान के उन्ही सूबों के जीतने के लिये आया था जो पहले फारस के राज में थे और दारा के मरने के पीछे स्वाधीन हो गये थे॥ परंतु सिकंदर इस छल से अटक पार नहीं उतरा था बरन उसकी सामर्थ प्राचीन राजाओं की अपेक्षा अधिक चढ़ाइयां करने की थी और अपनी सेना को लेजाकर सारे जगत को जीतने की अभिलाषा थी और यद्यपि फारस के राजाओं का हिंदुस्थान में एक चप्पा भर भी राज न होता तो भी वह हिंदुस्थान पर चढ़ाई करता॥ तीन बरस तक उसकी सेना ने लड़ाई और कूंच में बड़े २ दुख उठाये थे और पहाड़ों में जो बरफ में ढके हुये रहते थे उन्हों ने जाड़ों की लड़ाइयों में बड़े बड़े कष्ट सहे थे; सिकंदर ने उनकी महनत के लिये हिंदुस्थान की लूट में से उन को इनाम देने का बचन किया था निदान काबुल को जो हिंदुस्थान का द्वार प्रसिद्ध है जीत लिया, और सिंधु के वार पार वाले राजाओं

को आधीन होने के लिये आज्ञा दी और एक थोड़ेसे कटक को सिंधु के पुल बांधने के लिये भेजा और आप बीच के देशों को जीतने में लगा॥ सिंधु के ऊपर की ओर के पहाड़ी लोग बीरता में कुछ कम न थे परंतु सिकंदर के प्राचीन जोधाओं के हुनर और तेह के आगे कोई रोक टोक नकर सका॥ और सिकंदर ने सबको सर किया निदान सिकंदर सिंधु के किनारे पहुंचा, और नावों का एक समूह बनाकर अटक तक पहुंच गया जहां कि पुल को बनाते हुए देखकर बिचार किया कि हिंदुस्थान में उसी स्थान से प्रवेश करें॥ जहां से कि आदि से राजाओं ने हिंदुस्थान पर चढ़ाईयां की हैं॥ पर अंगरेज़ जो जहाजों के द्वारा बड़ी सामर्थ रखते हैं, जहाज़ों में बैठकर हिंदुस्थान में आए और पश्चिम का मार्ग छोड़कर पूरब ओर से हिंदुस्थानको जय करने लगे॥ और सिकंदर जब कि सिंधु पार उतरा उन दिनों तीस बरस का था, उसने ऐसी कभी कोई लड़ाई न लड़ी जिस में वह न जीता हो, और कभी ऐसे किसी देश में प्रवेश न किया जिस को उसने अपने अधिकार में न किया हो, निदान उसने तरुणाई की उमंग में अटक का पुल उतरकै एक लाख बीस सहस्र मनुष्यों की सेना से हिंदुस्थान पर चढ़ाई की, और उस समय सिंधु की पूरब ओर के देशों में तीन राजाओं का राज था॥ पहले का नाम अबिसेरीज़ जिस का राज पहाड़ों में था, और संभव होता है कि वह कश्मीर होय; दूसरा टैकसीलिज़ सिंधु और जेलम नदी के मध्य देशों में राज करता था; और तीसरा पोरस संभव होता है कि वह पुरु था जो पांडवों के बंश में होगा जिसका राज जेलम नदी से लेकर पूरब को हस्तिना-पुरलों चला गया था॥ सिकंदर के इतिहासवेत्ताओं ने दो

राजाओं को पोरस के नाम से बखाना है; जिन में से एक हस्तिनापुर में रहता था, और दूसरा पंजाब में राज करता था, ये दोनो चंद्र वंशियोंके कुल में थे॥ अबिसेरीज़ने अपने भाई को अच्छी २ भेट देकर सिकंदर के प्रसन्न करने को भेजा; और टैकसलीज़ ने सिकंदर से बड़ी प्रीत से मिलाप किया, उसको उसके कटक सहित अपनी टैकसला राज धानी में लेगया, जहां सिकंदर ने अपने थके थकाये सिपाहियों को छोड़ दिया, और थोड़ा सा कटक झगड़ा रखला रोकने के लिये रख गया और आप थोड़ीसी छटी ऊई सेना साथ लेकर जेलम नदी की ओर चला जो पंजाब में बहती है॥

उसी समय चोमासा भी लगा जेलम भी ऐसी चढ़ी कि आध कोस का फाट हो गया और पानी बड़े बेग से बहता था; राजा पोरस अपने कटक समेत उस नदी के दूसरे किनारे पड़ा था, और उसने निश्चय किया कि अपने बैरी का साम्हना करके उसे आगे न बढ़ने देना॥ उसका कटक एक बड़े प्रबंध से जमा ऊआ था और कहीं से सिकंदर को उतरने की जगह न रक्खी थी और सिकंदर ने भी जाना कि लड़ाई में नदी का पार होना और युद्धों की अपेक्षा बऊत कठिन है; राजा पोरस ने हाथियों की एक बड़ी लंबी बाड़ नदी के साम्हने लड़ाई के लिये खड़ी की थी और कोई नाका बे चोकसी न छोड़ा था ऐसा कि पोरस के सब प्रकार की चोकसी थी, और जब कि सिकंदर नदी पार ऊआ चाहता था तभी वे साम्हना करते थे निदान सिकंदर ने निश्चय जाना कि बल से पार उतरना बऊत कठिन है, क्योंकि उसके सवार हाथियों के साम्हने पंक्ति न बांध सकते थे इसलिये उसने अपने मन में यह बात ठानी कि इहां से नदी पार उतरें जब उसने जाना कि कटक

के पड़ाव से ऊपर की ओर दस कोस के लगभग एक द्वीप था, और भी एक अंधेरी रात ज़ई जिसमें आंधी चलती और मेह वरसता था, और बिजली कड़कती थी इसलिये कुछ शब्द सुन न पड़ता था सिकंदर ने समा पाकर ग्यारह सहस्र प्राचीन जोधाओं को अपने संगले उस द्वीप की ओर चला और रातों रात जेलम नदी पार होगया और दिन निकलते उस नदी के पूरबी किनारे पर पज़ंचकर पोरस के हरावल के भाग को हटा दिया॥ इस बात के समाचार सुनतेही पोरस हिंदुओं के राजा ने अपने बेटे को थोड़ासा कटक देकर अपने बैरी को हटादेने के लिये भेजा और बिचार किया कि शत्रु की सेना में से केवल झुंड अलग होकर चला आता होगा॥ क्रेटरस नाम एक सेनापति ने उस स्थान पर सेना की बाड़ खड़ी की जहां कि सिकन्दर का डेरा पहले से खड़ा ज़आ था, जिस से पोरस को निश्चय ज़आ कि केवल थोड़े हीसे मनुष्य नदी पार ज़वे होंगे॥ निदान थोड़ी देर पीछे पोरस का पुत्र शीघ्र मारा गया और कटक हार गया॥ राजा पोरस इस बात का ब्योरा और सिकन्दर के आप नदी पार उतरने का समाचार सुनते ही उसका साम्हना करने को आप चला और चार सहस्र घोड़े और तीस सहस्र पैदल और बज़तेरे हाथी और गाड़ियां संग लाया॥ संभव है कि वे सबके सब क्षत्रियों के बंश से थे जो कि बड़े बीर सिपाहीपने का काम करते थे उसने बड़े ज़नर से अपनी लड़ाई की बाड़ खड़ी की थी॥ सिकन्दर के संग जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं केवल ग्यारह सहस्र सिपाही थे, परंतु वे सब प्राचीन जोधा थे और जिनके साथ सिकंदर सा सेनापति होय उनको जय करना बड़ा कठिन है॥ लड़ाई बज़त बेर तक रही, और आपस में दोनो ओर की सेना भली

लड़ी पोरस की सेना ने बड़ी बीरता की पर सिकन्दद्दर के सवा-रों के आगे कुछ उनका बस न चल सका; निदान तीसरे पहर के समय हिंदू भाग निकले, पर राजा पोरस एक बड़े हाथी पर चढ़ाऊआ-लड़ता रहा, सिकन्दरने उसका सूरमांपन देख कर आश्चर्य किया ओर उसका जीव बचाने के लिये उसे कहला भेजा कि जो वह हमारे पास चला आवे तो उसके सनमान ओर प्रतिष्ठा में कुछ अंतर न आवे गा निदान राजा पोरस इस बात पर प्रसन्न ऊआ ओर सिकंदर के पास निडर चला आया; जब सिकंदर ने उस से पूछा कि हम तुम्हारे साथ क्या करें तब उसने निर्भय होकर उत्तर दिया कि जैसा राजाओं को चाहिये सिकन्दर उसकी निडरता ओर कुलीनता देख कर बऊत प्रसन्न ऊआ ओर उसको स्वाधीन कर दिया, ओर उसके राज्य के साथ थोड़ा ओर भी देश अपनी ओर से उसको दिया॥ पोरसने सिकन्दर की उदारता का बड़ा भला माना ओर सदा उसका सच्चा मित्र बना रहा॥ उस समय कलजुग के आरंभ में हिंदुओं का बंश अब की अपेक्षा ओर भांति था पोरस की सी सूरताई ओर भलाई इस समय में कहां है॥

सिकन्दर ने आगे के लिये उस नदी के मार्ग को अपने ही अधिकार में रक्खा ओर उसके दोनो ओर एक एक नगर बनाने की आज्ञा की ओर जेलम ओर चुनाब नदी के बीच का देश जो बऊत ही बसता था, उस में तीस पैंतीस नगर से कमती न होंगे पोरस के अधिकार में रक्खे तिस पीछे सिकन्दर चुनाब ओर रावी के पार उतरा; वहां उसने केथियों की खबर सुनी संभव होता है कि वे तातार के रहनेवाले होंगे ओर हिंदुस्थान में आबसे होंगे ये मनुष्य संगलानाम जगह

पर सिकन्दर से युद्ध के लिये उपस्थित हुए पर सिकन्दर ने बड़ी मारधाड़ पीछे उनको भी जीत लिया उनमें से सोलह सहस्र ते मारे गये और सत्तर सहस्र के पकड़ कैद किया और रहे सहे सब पहाड़ों में भाग गये॥

सिकन्दर वहां से चलकर सतलज नदी के किनारे पर पहुंचा जो अब सिक्खों और अंग्रेज़ों के राज की सीमा है वहां जाकर उसने मगध देश के राजा का समाचार सुना जहां का महा बली राजा छः लाख प्यादे औ तीस सहस्र सवार और नौ सहस्र हाथी की भीड़ रखता था और एक इतिहास वेत्ताने ऐसा लिखा है कि राजा चन्द्रगुप्त जो पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था, सिकन्दर के कटक में आया और बहुत निडरता से सिकन्दर के साथ बातें करीं संभव होता है कि सिकन्दर ने इसी से मगध के राजा का पराक्रम और उसकी राजधानी पाटलपुत्र की सुंन्दरता का समाचार सुना हो, जिसकी लंबाई साढ़े चार कोस तक कहते थे सिकन्दर ने उस नगर के कोट पर अपना झंडा गाडने के लिये दृढ़ बिचार किया अपने कटक को वहां से कूंच करने और सतलज पार उतरने की आज्ञा दी, पर उसका दल घायल रोगी और थका हुआ था जिस दिन से वे हिंदुस्थान में आये तब से मेह लगातार बरसता रहा, इस कारण उसके कटक का उद्योग मंद हो गया जैसा कि अब यूरप के लोगों को मेह नहीं सुहाता है और बहुत दुखित करता है॥ इस कारण सारे कटक ने सिकंदर के संग आगे चलने का निषेध किया; सिकंदरने धमकी और धीरज और सुहाती बातों से बहुतेरा उनके मन को परचाया पर उनके मन में चलने की एक बात भी न आई॥ निदान सिकंदर ने लाचार होकर इस नदी को

अपनी जीत और लौट जाने की सीमा बनाई पर लौटते समय उसने अपनी चढ़ाई का चिन्ह छोड़ने के लिये वहां पर बारह बलि भूमि बनाईं ॥ सिकंदर ने संपूरण हिंदुस्थान के जीतने में निरास होकर उस समय सिंधु नदी को अपने राज की सीमा स्थापन की, और फिरते समय उस नदी की परीक्षा करने का बिचार किया ॥ और उसी कारण उसने एक बड़ा बेड़ा बनवाया और अपनी सेना को सिंधु की नदियों के मार्ग से चढ़ाकर आप भी बड़ी धूम धाम से नाव पर चढ़ चला जब कि वह मुलतान और वच्छ के सूबों में पहुंचा तो उसका कितनोंहीने साम्हना किया ॥ एक नगर के घेरने के समय उसके बेधड़क पड़ने के कारण उसको जीव की जोखों थी पर सारी जोखों और रोकटोक ऐक उसकी बीरता और कटक के बल के आगे क्षमा होगई ॥ निदान सिकन्दर उस स्थान पर पहुंचा जहां सिंधु समुद्र से मिली है; सिकन्दर का उद्योग ऐसा बड़ा भारी था कि पहले राजाओं में से ऐसा किसीका न हुआ होगा ॥ उसने इस बात की इच्छा की थी कि हिंदुस्थान में और फारस की नदियों में और भूमध्यस्थ सागर में समुद्र के मार्ग से आवागमन हुआ करै इसीलिये उस स्थान पर जहां सिंधु समुद्र में मिलती है उसने एक बंदर बनाया, और एक बेड़ा जहाजों का बनाके नियारकस को सोंप उस जगह जों जहां कि फरात नदी समुद्र से मिलती है जाने की आज्ञा की ॥ यह जलयात्रा जो इस समय में प्रत्येक जहाजवाला सहज और बेग करसकताहै सो उस काल में एक बड़ा कठिन काम गिना जाता था ॥ नियारकस अपने काम में भरपूर कृतार्थ हुआ, और जो सिकन्दर जीता रहता तो निस्संदेह इस जलयात्रा के द्वारा बड़े बड़े दूर दूर

देशों में व्योपार फैलाता; पर हिंदुस्थान से लोट जाने से दो बरस पीछे बाबुल की दलदलों में उसको तप आई और बत्तीस बरस की अवस्था में मरगया॥ यह बात निस्संदेह है कि उसकी इच्छा यह थी कि और नया कटक लेके हिंदुस्थानपर फिर चढ़ाई करे और संभव है कि जो वह ऐसा करता तो संपूरण हिंदुस्थान को अपने बस में करलेता क्योंकि पच्छिम में नदी और पहाड़ों के देशों को जीत कर हिंदुस्थान के देशों को जो कि मैदान है जीतना कुछ कठिन नथा और सिवाय इसके जब कि शूरवीर कटक राजा पोरस का उसको अपने देश म प्रवेश करने से न रोक सका तो निस्संदेह पूरब की ओर के निर्बल राजा उसे क्या रोक सकते॥ यद्यपि वह हिंदुस्थान में कुछ बहुत न ठहरा था पर अपने पीछे आनेवाले राजाओं के लिये हिंदुस्थान में ठहरने का रसता खोल गया॥ और यद्यपि बुखारा के यूनानी राजाओं का वृत्तांत बहुत अच्छी भांति नही जाना गया है तो भी यह बहुत निश्चय है कि वे उत्तर हिंदुस्थान में कैएक अच्छे अच्छे सूबों को अपने राज में लाये थे॥ वे लोग जो सिकन्दर के संग हिंदुस्थान में आये थे उन्होंने उस समय के हिदुस्थानियों की रीत भांति लिखी हैं और नीचे लिखी हुई संक्षेप बातों से उन लोगों को जो हिंदुस्थान के थोरे को जानते हैं यह बात जानी जायगी कि हिंदुस्थान के प्राचीन रहनेवालों की रीत भांति इस समय के रहने-वालों की रीत से कितनी मिलती है॥ पहले हिंदुस्थानियों का शरीर क्षष होता था, दूसरे केवल अन्न और तरकारी खाकर रहते थे; तीसरे उनकी नाना प्रकार की जातें होती थीं, और सदा अपने घरानों में एक ही वृत्ति रखते थे; चौथे उनका बिवाह सात ही बरस की अवस्था में हो जाता था, और

पर जात से बिवाह करने का निषेध था; पांचवे वहां के लोग बाले कानोमें पहनते थे और उनके जूते और घूंघट नाना रंग के होते थे और अपने सिर और कंधों को ढके रखते थे; छटे अपने मस्तक पर भांति भांति के टीके लगाते थे; सातवें यह रीत थी कि केवल बड़े ही आदमी छाता लगाते थे; आठवें दुहैरी तलवारें और कमठे रखते थे; नवें हाथियों को उस रीत से पकड़ते थे जिस रीत से इन दिनों में पकड़ते हैं; दसवें वे निपट स्वेत रुई के कपड़े बुनते थे; ग्यारहवें चैंटी बड़ी २ होती थीं परंतु इतिहासवेत्ताओंने इस बात में कुछ अधिक करके लिखा है कदाचित् वे दीमक को कहते हों; बारहवें बड़ी २ नदियों के तीर पर काठ के घर बनाके रहते थे, और जब नदी चढ़ती थीं तब ऊपर को हटा लेते थे; तेरहवें वहां ताड़ के पेड़ भी होते थे; चैाधवें बड़ के पेड़ बहुधा होते थे जिन की छायामें बैरागी बैठे रहते थे॥

इन बातों से निश्चय होता है कि जो रीत अब हिंदुओं में हैं वे उन रीतों से जो सिकन्दर के समय में जिसको दो सहस्र एक सो बरस बीते थे बहुत बिपरीत नहीं हैं और यह बात भी लिखने के योग्य है कि जो सिकन्दर का नाम हिंदुओं के किसी वृत्तांत में नहीं पाया जाता है इससे यह निकलता है कि हिंदुओं के ग्रंथ जो हमारे पास हैं वे पूरे नहीं हैं परंतु मुसलमानों ने सिकन्दर के नाम को जिसको वे एक बड़ा सूरबीर जानते हैं हिंदुस्थान में फैलाया था जब कि मुसलमानो ने समुद्र पार के देशों को जीता तब उसका नाम वहां भी फैलाया और जावा और सुमात्रा के रहनेवाले जो यहां से बहुत दूर हैं अबलों महाबली सिकन्दर की चढ़ाइयों की जीत बनाकर साखा गाते हैं॥

॥ चोथा अध्याय ॥

महानंद—चंद्रगुप्त—मोरी कुल—सैल्यूकस ब्रोर मेगस्थनीज़—बैकट्रिया के राज्य—मगध के राजा— अग्निकुल— ब्राह्मणों की बड़ाई का काल—प्रमरा के राज्य का बिस्तार—सिंगल द्वीप में बुद्ध के मतावलंबी लोगों की गुफा—इलोरा ॥

जब कि सिकंदर ने हिंदुस्थान पर चढ़ाई की तब महानन्द जिसको प्रमरा की जात ब्रोर तक्षक के बंश में से कहते हैं मगध देश के राज्य पर पाटलिपुत्र में राज करता था ॥ ब्रोर वर्णन करते हैं कि वह बीस सहस्र सवार ब्रोर दो लाख पैदल बहुतेरे हाथी आदि अपने संग लेकर सिकन्दर का साम्हना करने के। उपस्थित हुआ था ; पर सिकन्दर को जैसा कि ऊपर लिखा गया है अपनी सेना के फिरजाने के कारण सतलज पर से अबस होकर उलटा फिरना पड़ा ॥

महानन्द को उस के प्रधान राजमंत्री ने मरवा डाला ब्रोर कहते हैं कि महानन्द के पीछे उसके आठ बेटों ने बारह बरस लों अर्थात् सम्बत् ईसाई से तीन सो पंद्रह बरस पहले तक मिल झुल के राज किया ; उनमें से एक बेटे का नाम चन्द्रगुप्त था जो एक नायन के पेट से था ; यद्यपि चन्द्रगुप्त बहुत ज्ञानी था परंतु उसके ब्रोर भाई उसको तुच्छ जानते थे ब्रोर कोई २ ऐसा कहते हैं कि चन्द्रगुप्त को उसके भाइयों ने पाटलिपुत्र में से निकाल दिया था, ब्रोर वह

हिंदुस्थान के देशों में दुखी होकर फिरता रहा निदान वहां से फिरकर चन्द्रगुप्त अपने मित्र और मंत्री चाणक्य की सहायता से जिसने राजकुंवारों को मार डाला था राजसिंहासन पर बैठा इस बात को और इतिहास वेत्ता नाना प्रकार से बरनन करते हैं॥ यद्यपि सब ग्रंथों की बातों का तत्व एक ही है पर उस समय के सब इतिहासवेत्ता आपस में इकट्ठे होके इस बात को वरनन करते हैं कि चाणक्य को ऐसे भारी पाप करने से इतना पश्चात्ताप हुआ था कि उसके प्रायश्चित्त में उसने बहुत ही तपस्या की और उसका प्रायश्चित्त उस समय के वृत्तांतों में बहुत ही प्रसिद्ध होकर कथा कहानियों में लिखा गया और श्लोकों में एक नवीन विषय ठहरा और कवीश्वरों ने अपनी कविता की सुन्दरता के लिये इस बात में देवताओं का संवाद डाला, और लिखा कि चाणक्य के प्रायश्चित्त की चर्चा स्वर्ग में राजा इन्द्र की सभा में हुई जहां कि देवताओं ने इस पाप का प्रायश्चित्त ठहराया और एक कौवे ने चाणक्य से इस बात को कहा॥

कहते हैं कि चन्द्रगुप्त ने एक मोरी नाम नया कुल बनाया पर इस बात को उस बात से कि वह महानन्द का बेटा था मिलाना और एक करना बहुत कठिन है॥ चन्द्रगुप्त ने मोरी के कुल को बनाया हो या न बनाया हो पर बहुत से इतिहासवेत्ता इस बात पर एक हैं कि वह मोरी के कुल में था इसलिये इस में संदेह थोड़ा हो सकता है॥ पुराणों में लिखा है कि चन्द्रगुप्त शेष नाग की संतान में से था जो कि संबत् ईसाई से छः सौ या सात सौ बरस पहले तक्षक बंश को सिंध पार से हिंदुस्थान में लाया था जैसा हम ऊपर लिख आये हैं। जाना जाता है कि चन्द्रगुप्त बड़ा ज्ञानी था और उसने अपने राज

को पच्छिम दिशा की उस चढ़ाई से बचा रक्खा जिस चढ़ाई का सिकन्दर ने केवल आरंभ ही किया था ॥

सिकन्दर के मरने के पीछे उसके मित्रों ने उसके राज्य को आपस में बांटलिया, सैल्यूकस को बाबुल का सूबा मिला जिस में वे सारे देश थे जो सिंधु नदी के निकट बसते हैं; सिकन्दर के सेनापतियों में सैल्यूकस बड़ा उद्योगी था और उसने हिंदुस्थान पर फिर चढ़ाई करने का उद्योग किया जिस में कि सिकन्दर का भी कुछ बस न चला था पर ऐसा कहते हैं कि हिंदुस्थान में आते समय चन्द्रगुप्त के कटक ने उसका साम्हना किया और चन्द्रगुप्त ने भी उस नये बैरी से अपने देश की सीमा पर लड़ने का उद्योग किया था॥ इतिहासवेत्ता इस चढ़ाई को कई प्रकार से लिखते हैं यूनानियों ने ऐसा लिखा है कि सैल्यूकस की जीत हुई; पर इस बात में इसलिये कुछ संदेह पड़ता है कि उसने हिंदू राजाओं से मिलाप किया और उसको सारे वे देश दे दिये जिस को यूनानी सिंधु के पूरब ओर अपने राज में लाये थे॥ और उसके पलटे में चन्द्रगुप्त से बरसोड़ी पचास हाथी अथवा कर अथवा भेट की रीत से लेने ठहराये॥ सैल्यूकस ने अपनी बेटी का बिवाह चन्द्रगुप्त के संग करदिया और बाबुल औ पाटलिपुत्र के राजाओं में प्रीत और मिलाप रहने के लिये मेगस्थनीज़ को भेजा कि वह उसकी ओर से दूत की भांति चन्द्रगुप्त की सभा में रहा करे। मेगस्थनीज़ से पुराने इतिहासवेत्ताओंने हिंदुस्थान का बहुत ब्योरा पाया है यद्यपि वह कभी कभी ऐसी बातें लिखता है कि जिन पर पतयारा न हो सके पर तो भी हिंदुस्थान के विषय में उसका बखान बहुत ठीक ठीक है और उसकी बहुतेरी बातें पिछले लोगों के बचन से प्रमाण होती

हैं, पर बड़े पछताव की बात है कि उसका प्राचीन दिनवारी समाचार पत्र खो गया है और उस में से केवल वेही पत्र हमारे हाथ लगे हैं जो कि पिछले इतिहासवेत्ताओंने उतार लिये थे॥

अत्यंत बिश्वास करने योग्य जो लेख हमें मिल सकते हैं उन से जाना जाता है कि चंद्रगुप्त ने चोबीस बरस राज्य किया॥ और वह ईसवी संबत् के दोसौ बानवे बरस पहिले मरा, और उसके पीछे उसका बेटा मित्र गुप्त राजगद्दी पर बैठा, जिसके पास सैल्यूकस ने एक और दूत अपना भेजा कि दोनो ओर संबंधना रहे॥ सैल्यूकस के कुटुंब में उसको छोड़कर कोई उसके समान ज्ञानी मनुष्य न उत्पन्न भया॥ उसके पीछे जो गद्दी पर बैठे झट बिगड़ गये जैसे पूरब के राजा बिगड़ जाते हैं, जो बिना परिश्रम बड़ा राज्य और धन पाते हैं॥ सैल्यूकस के गद्दी पर बैठने से एक सौ बरस पीछे ऐंटयकस ने सैल्यूकस के राज्य को उलटा दिया; परंतु कहते हैं कि ऐंटयकस ने चन्द्रगुप्त के पोते सोफैगेनीज़ से जिसका नाम हिंदुओं की पोथियों में किसी नाम से नही मिल सकता है बचन किया कि उसी बचन के अनुसार हिंदुस्थान के राजा ने बुखारा के भूपति को हाथियों के भिन्न कर में बरसवें दिन रुपये देने का भी बचन किया॥ यह यूनानियों का राज्य थोड़ेही काल पीछे नष्ट हो गया और बुखारा का एक नया राज्य बन गया जिसके राजाओं ने हिंदुस्थान में सब यूनानियों की अपेक्षा दूर तक देश जीत लिये॥ हिंदुस्थान के पश्चिमी देशों में जो खुदते समय इन दिनो में सिक्के निकलते हैं उन से जाना जाता है कि वे राजा जो सिंधुनदी की पश्चिम के देशों में राज्य करते थे हिंदुस्थान के बीचों बीच तक अपनी सेना को

होगये थे उन कुलों ने कितना कितना राज्य किया और कोन किसके पीछे गद्दी पर बैठा यह जानना बहुत कठिन है; परंतु जो लेख हमारे पास हैं उन से इतना समझ पड़ता है कि बुखारा के तीन राज्य जो सिंधु के दोनो ओर थे, हो न हो वे एक ही काल में थे, परंतु उनके होने का प्रमाण और इतिहासों की संगति हम नहीं मिला सकते हैं॥ बिष्णु पुराण और भागवत से ऐसा जान पड़ता है, कि हिंदुस्थान के एक भाग में यवन आठ राजा थे, संभव हैकि यही बुखारा के राजाओं का भी वर्णन होय, जिन में बहुत नामी राज्य वह था जिस पर मेनांडर राज्य करता था जो प्राचीन कालके अत्यंत नामी राजाओं की गिनती में है; उसका राज्य ईसवी संवत के दो सौएक बरस पहले था॥ यूक्रेटिडीज़ जो मेनांडर के पीछे गद्दी पर बैठा कहते हैं कि सिंधु की पूरब ओर पांच सहस्र नगर उसके आधीन थे इस बात पर बहुत बिश्वास हो नहीं सकता पर इस से यह निश्चय होता है किचन्द्रगुप्त के पीछे जो राजा हुए थे उन्होंने अपने को उन लोगों की चढ़ाइयों से जो कि पच्छिम की ओर से आतें थे बडी २ कठिनाई से बचाया॥ मिथिडेटिज़ पार्थिया के राजा ने यूक्रेडेटीज़ को हराया और हिंदुस्थान के जितने देश उसके पास थे उनको पार्थिया के राजा ने अपने आधीन करलिये कहते हैं कि उसने सिंधु से लेकर गंगा तक सब देशों को जीत लिया और पूर्वकाल का बिषय संग्रह करनेवाले कहते हैं कि सिक्के जो आगरे उज्जेन और अजमेर में पाये गये हैं उनको मिथिडेटिज़ और उसकी गद्दी पर जो बैठे उन्होंने बनवाये थे यह बात बड़े अचंभे की है कि उन सिक्कों में से किसी पर नागरी अक्षर नहीं लिखे, इससे हम यह बात निकालते हैं कि वे

वे राजा कि जिनका सिक्का और सूरत उनपर है सिंधु नदी के पच्छिम के देशों में राज्य करते होंगे॥

मगध के राजा जो कि हिंदुस्थान के उस भाग में राज करते थे जिसमें गंगा बहती है और जिनका राज्य कई पीढ़ियों में आठ सौ बरस तक रहा अर्थात् ईसवी संवत् के तीनसौ पचास बरस पहले से लेकर चारसौ पचास बरस पीछे तक होगा॥ वे हिंदुस्थान के राजाओं में बहुत बुद्धवान् थे और उनमें चन्द्रगुप्त की गद्दी पर बैठनेवाले शिरोमणि जान पड़ते हैं॥ यद्यपि बुखारा की ओर से लगातार चढ़ाइयां होती थीं परंतु कहते हैं कि चन्द्रगुप्त की गद्दी पर बैठनेवालों के समय में देश ऐसा बसता था और प्रसन्न था कि पूर्वकाल में कभी ऐसा न हुआ था राजा और प्रजा सुखी थी॥ परस्पर ब्योपार अच्छी भांति करते थे, और बाहिर का ब्योपार भी बहुतायत से होता था॥ और बंगाले का सूबा जो कि समुद्र के तीर पर है उनके आधीन था इस कारण से निश्चय होताहै कि वे समुद्र के मार्ग से उन सब देशों में जो कि हिंदु के समुद्र के आस पास थे ब्योपार करते होंगे॥ पाटलिपुत्र से सिंधु तक एक राजमार्ग बना था और हर मंजिल पर एक छोटासा मुनारा बनाहुआ था॥ पाटलिपुत्र से बरोच को जो बंबई के पास है एक और मार्ग जाता था, वे अपनी सामर्थ के अनुसार विद्या बढ़ाने के लिये परिश्रम करते और बहुत सूधी भाषा में पुस्तकें बनवा के सामान्य लोगों में विद्या फैलाने का उद्योग करते थे; और यह बात भी वर्णन करने योग्य है कि जिस समय में मगध के राजा साधारण भाषाओं के सुधारने में इतना परिश्रम करते थे तब निश्चय होता है कि उस काल में संस्कृत भाषा भी अत्यंत रूप से सुधरी हो॥

जिन दिनों में कि मगध के राजा अपने राज्य को बुखारा के रूपों की चढ़ाइयों से बचाते थे उस समय की पुस्तकों से जाना जाता है कि उन्ही दिनों में मगध के राजकुल में भी बिगाड़ था॥ उन चढ़ाइयों और घर के झगड़ों से उनकी सामर्थ घट गई, और उस समय में उनके देश और मतका प्रबंध बिगाड़ने के लिये अच्छा समय पाया॥ जान पड़ता है कि वे बुद्ध के मत पर चलते थे, जब तक कि उनको अधिकार रहा तब तक ब्राह्मण जो कनोज में अधिकार रखते थे हिंदुस्थान में अपना अधिकार न कर सके॥ और हम को यह भी जान पड़ता है कि उस काल में ईसवी संवत् के दोसौ-एक बरस पूर्व ब्राह्मणों ने अग्निकुल की संतान को फिर बढ़ाया कि वे नास्तिकों अर्थात् बुद्धमतावलंबियों से लड़ें जो कि तक्षक कुलके थे और जिनका हम वर्णन कर चुके हैं॥ अग्निकुल-वालों से हिंदुस्थान में एक ऐसा राज्य परिवर्तन हुआ जैसा कभी न भया था॥ ब्राह्मण संपूर्ण रूपसे हिंदुस्थान के राजा हो गये और दोसहस्र बरस से हिंदुओं के चित्त पर अधिकार रखते हैं॥ अग्निकुल की उत्पत्ति और उनकी जय का वर्णन ये दोनों अच्छी भांति नहीं जानेगये हैं॥ हिंदूशास्त्रों में लिखा है कि नास्तिकता, और अज्ञानता धरती पर फैलगई थी; और धर्म पुस्तकें पांव तले खुंद गई थीं, और मनुष्य राक्षसों से महा दुखी होगये थे ऐसे समय में विश्वामित्र ने ऋषियों को फिर उत्पन्न करने का मन में बिचार किया॥ इस काम के लिये उसने आबू नाम पहाड़ की चोटी को ठहराया जहां कि कई मुनि रहा करते थे, जो दूधी के समुद्र पर प्रार्थना करने गये, उन्हों ने वहां विश्व करता को एक नाग पर, जोकि अनंत होने का चिन्ह है, सोते हुये देखा। वहां से उन्होंने

अबू पहाड़ पर जाने और ऋषियों को फिर के उत्पन्न करने की आज्ञा पाई ॥ वे इन्द्र, ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु और और देवताओं सहित उलटे फिर आये और अनलकुंड को गंगा जल से पवित्र किया और अन्य संस्कार भी किये, उन चार देवताओं में से प्रत्येक ने एक एक मूरत बनाकर जलते-हुए कुंड में डाल दी और उनसे चार मनुष्य बनगये जो कि अग्निकुल के चार गोत्रों के अर्थात् प्रमरा, चोहान, सोलंकी, और परिहार के जनक भये ॥ दैत्य जो कि संभव बौद्ध होंगे उन रीतों को देख रहे थे और उन में से दो अग्निकुंड के पास पहुंच गये थे परंतु नवीन पुरुष उत्पन्न करने की रीतें पूरी होचुकी थीं, और नवीन योद्धा नास्तिकों के साम्हने लड़ने को चले, और बड़ी लड़ाई होने लगी, दैत्यों के लोहू से और दैत्य उत्पन्न होते जाते थे, निदान उन चारों देवताओंने जोकि अग्निकुल के रक्षक थे उनके लोहू को पीलिया, और इस उपाय से उनकी बढ़वार रुक गई ॥ जब कि दैत्य मारे गये तब प्रसन्नता के बाजों का शब्द आकाश तक पहुंचा और स्वर्ग से अमृत बरस ने लगा और देवता बिमानों पर चढ़ चढ़ आकाश में फिरने लगे और जयसे अत्यंत प्रसन्न हुए ॥

कवियोंने ब्राह्मणों और अग्निकुलवालों के जो कि ब्राह्मणों की ओर से बुद्ध मतवालों से लड़े थे, समाचार को इस रीति से कविता में लिखा है जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है ॥ ये अग्निकुलवाले प्रकृति बासी यहां के न थे, और न वे किसी और जाति से निकले थे जो कि पश्चिम की ओर से आबसी थीं ॥ यह संभव है कि ब्राह्मणों ने तक्षक कुल में से जो कि उस कालमें हिंदुस्थान के अधिपति थे बहुत लोगों को

अपने मत में लाकर उनको इन लोगों से लड़ाने के लिये जो कि उनके मत में नये उपस्थित किया होगा॥ और अनल कुंड में अग्निकुलवालों का दुबारा जन्म होना लिखा है इस से जाना जाता है कि हो न हो वहां कुछ मतकी पलटा पलटी हुई॥ अग्निकुलवालों की जो चार जाति हुईं, उन सब में प्रमरावाले अत्यंत पराक्रमी थे, उनका देश नर्बदा के पार तक था, और हिंदुस्थान का संपूर्ण मध्य और उत्तर का देश उन के अधिकार में था पच्छिम की ओर सिंधुनदी उनके देश की सीमा थी; वे दक्खन में अपनी सेना को लेगये थे, और जान पड़ता है कि निश्चय करके उन्होंने भी सब हिंदुओं से पहले नर्बदा के दक्खन को एक दृढ़ राज्य बनाया॥ हिंदुस्थान में सदा से यह बात प्रसिद्ध है कि बुद्धवालों से बहुतेरे धुंवाधार युद्धों के पीछे ब्राह्मणों का मत प्रबल हुआ॥ संभव है कि उन लड़ाइयों से अग्निकुलवालों की जीत से यह बात हो कि उन्हों ने ब्राह्मणों की ओर होकर उन के तईं कनोज से बाहिर हिंदुस्थान की दक्षिण सीमा तक अपने अधिकार को फैलाने का बल दिया॥ उस दिन से आज तक मत विषय में ब्राह्मणों का अधिकार चला आता है; उन्होंने लोगों को अपनी इच्छा के अनुसार बना लिया और सब में अपनी जाति को बड़ा रक्खा है, और सब विद्याओं को अपने ही बसमें रखने से और लोगों को ऐसी दास पदवी में किया कि जिसमें साधारण लोग अज्ञानता के कारण आधीन रहते हैं॥

हम अभी उन मंदिरों का वर्णन कर चुके हैं जिनको बुद्धमतवालोंने पहाड़ काटकर हिंदुस्थान में बनाये थे॥ जब कि ब्राह्मणों ने बौद्धों को हिंदुस्थान से निकाल दिया वे

सिंगलद्वीप अर्थात् लंका में चलेगये, तब बुद्धवाले जो ऐसी इमारतों से बहुत इच्छा रखते थे इसलिये उन्होंने सिंहलद्वीप में भी ऐसी एक इमारत बनाई जो कि सब पृथ्वी भर की इमारतों में बहुत बड़ी है॥ हमें ऐसा जान पड़ता है कि बुद्धवालों ने पहाड़ों को काटकर पास पास कई मंदिर बनाये जिनमें सब से बड़ा मंदिर ४६॥ गज लंबा और तीस गज चौड़ा और पंद्रह गज ऊंचा है; जिसमें बुद्ध की मूरत दस गज लंबी लिटाई हुई रक्खी है॥

जिन मंदिरों को कि बौद्ध छोड़कर चले गये थे, तिन पर ब्राह्मणों ने शीघ्र अधिकार करलिया और बुद्ध की मूरत के स्थान में विष्णु और शिव की प्रतिमा रक्खीं॥ ब्राह्मणों ने उन मंदिरों की और अधिक शोभा की और बुद्धवालों के मंदिरों को छोड़ और स्थान छांटकर के हिंदुस्थान के बीचोंबीच इलोरा में मंदिर बनाये जो कि दक्खन में समुद्र से थोड़ी दूर है॥ उन्होंने पहाड़ों में ऐसे मंदिर खुदवाये जो कि हिंदुस्थान की सब इमारत से अच्छे बने हैं और एक पहाड़ जो पांच मील तक नाल की सूरत है जिस में नये मंदिर बने हैं कोई दो और कोई तीन खने हैं॥ सब से प्रसिद्ध कैलाश नाम मंदिर अर्थात् महादेवजी का स्थान है॥ जितना चमत्कार कि घर बनाने और मूरत घड़ने में चाहिये उतना सब वहां प्रकाशित है॥ पहाड़ को खोद कर पुल, सीढ़ी, पूजाघर, थंभ, बरंडे, मुनारे और बड़ी बड़ी मूरतें बनाई हैं॥ कोठड़ियों की दीवालों पर हिंदुओं के देवताओं की मूरतें और महाभारथ, और रामायन की लड़ाई खुदी हुई हैं॥ सब हिंदुओं के देवताओं में से जो कि हिंदुस्थान में प्रसिद्ध हैं उन

में से कोई ऐसा देवता न होगा जिस की मूरत इलोरा में नहीं होगी, यह पर्वत उस काल में हिंदु मत का स्थापन होगा जब कि वह नर्बदा के दक्षिण को फैला था॥ उन मंदिरों के बनाने का ठीक काल निश्चय करना असंभव है; परंतु चाहिये कि दस या ग्यारह सौ बरस के बीच में बने हों, यह काल हिंदू मत के दक्खन में फैलने से लेकर मुसलमानों के इस देश में आने तक का है। कि जिस समय में हिंदुओं के मत की बढ़वाढ़ थी और ब्राह्मणों का कोई शत्रु दृष्ट न आता था और राजाओं को ऐसी ऐसी इमारतों के बनाने की सामर्थ थी और अवकाश भी था॥

॥ पांचवां अध्याय ॥

बिक्रमादित्य और सालिवाहन—सुमित्र की मृत्यु—ईसामसीह का जन्म—हिंदुस्थान में ईसाई मत का फैलाव—रूम को संदेशा—मगध के अंद्र नाम राजा—महावर्ण—पुंलोमा—रामदेव—अंद्रभृतास—विष्णुपुराण की रीत से हिंदुस्थान का वर्णन ॥

हिंदुस्थान में से बुद्धवालों का मत नष्ट होने के पीछे बिक्रमाजीत का समय हुआ; इसी नाम के राजा आठसे न्यून नही हुए हैं इसलिये नामी बिक्रमाजीत को जानना कठिन है परंतु कहानी और कहावतों से जाना जाता है कि वह बिक्रमाजीत जिस का इस पुस्तक में वर्णन है पराक्रमी देव सालवाहन के हाथ से मारा गया॥ इस नाम का राजा जो उज्जैन में राज करता था और उसी से संबत् का प्रारंभ होता है इसलिये यही ठीक है कि हम उसी को राजा बिक्रमाजीत ठहरावें; और तवारीख फिरिश्ता नाम कथा में जो वर्णन लिखा है सो उसी बिक्रम का जाने॥ बिक्रमाजीत प्रमरा के कुल में था जिस को अब संक्षेप रूप से पवार कहते हैं॥ यद्यपि इस कुल का वर्णन बिस्तार पूर्बक नही लिखा है परंतु तो भी इतना जाना गया है कि इस कुल के राजा हिंदुस्थान में बहुत बहुत देशों पर राज्य करते थे और बिक्रमाजीत के समय से बहुत पहले अवंती अर्थात् उज्जैन

राजधानी थी; परंतु कोई कोई कहते हैं कि बिक्रमाजीत उज्जैन में राज करता था, और कोई कोई ऐसा लिखते हैं कि वह मोरी कुल के राजाओं में से मगध का आठवां राजा था और उसका राजधानी नगर पाटलिपुत्र था ऐसा भांति भांति का वर्णन जो हुआ है इसका कारण हम नहीं जानसकते हैं॥ बिक्रम इसवी संबत् के ५६ बरस पहले सिंहासन पर बठा; वह उस समय के राजाओं के बीच युद्ध और मिलाप करने में सब से नामी था॥ और कवियों ने उसका प्रताप बहुत बढ़ा के लिखा है और उसकी सामर्थ के विषय में अत्यंत अधिक लिखा है॥ वे कहते हैं कि उसकी आज्ञा बिना चुंबक पत्थर लोहे को और कहरुबा घास को नहीं उठा सकता था॥ और वह ऐसा सूधा और तपस्वी था कि राजाधिराज होकर भी चटाई पर सोता था, और अपनी कोठड़ी में पानी का घड़ा छोड़कर और कुछ नहीं रखता था और अपने बड़ों की अपेक्षा विद्या बढ़ाने में अधिक परिश्रम करता था॥ हिंदुस्थान के प्रत्येक भाग में से पंडित बुलाये जाते थे, और वे बड़ा धन पाते थे॥ उस समय के बड़े बड़े चौदह पंडित उसकी सभा में थे, जिन में कवि कालीदास शिरोमणि था॥ बिक्रम के समय में संस्कृत में पुस्तक रचने की बिद्या अत्यंत रूप से सुधर गई थी॥ कहते हैं कि बिक्रमाजीत आप निर्गुण निराकार ब्रह्म को मानता था जिस से यह बात निकलती है कि वह तक्षक के प्रज्ञात मत को मानता था; वह उन देवताओं और देवियों की पूजा का सहायक था जिन को कि बुद्धवालों का मत नष्ट होने के पीछे मानते थे, उसने एक बहुत बड़ी मूरत महा काल की अपने राजधानी नगर उज्जैन में स्थापन की थी॥ यह शिव की मूरत उन

बड़ी प्रतिमाओं में से थी जो कि हिंदुस्थान में कई स्थान पर उस समय में स्थापित हुई थीं जब कि शिव की पूजा फैली थी॥ बिक्रमाजीत के बुढ़ापे में शालिबाहन ने चढ़ाई की जो बड़ा योद्धा राजा था; उसके हाथ से बिक्रमाजीत मारा गया॥ शालिवाहन ने दक्खन के इतने देश जीत लिये कि उस दिशा में बिक्रम का संबत् भूलने लगे और शालिवाहन का फैलाने॥

राजा बिक्रमाजीत के समय से थोड़े काल पहले सोमित्र जो राम की संतान में था और सूरजवंस के राजाओं में सब से पिछला था मरगया और सूरजबंस का अधिकार गंगा पार के देशों से जाता रहा, जहां कि जाना जाता है कि सूरजबंसवालों ने इक्ष्वाकु के समय से दो सहस्र बरस से अधिक २ तक राज्य किया था॥ हिंदुशास्त्रों में लिखा है कि राम से लेकर सोमित्र तक छप्पन राजा हुए; परंतु हम को आगे जान पड़ैगा कि इन राजपूतों में इस प्राचीन घराने का नाम फिर प्रसिद्ध होने लगा॥ मेवाड़ के राणा जिनको अब गेहलोत कहते हैं सूरजबंस में से समझते हैं; राठोर भी जिन्होंने कि कनोज में मुसलमानो की चढ़ाई से थोड़े काल पहले एक नवीन राज्य बनाया था अपने ताईं रामचन्द्र के दूसरे बेटे कुश की संतान गिनते हैं॥ बारह सो ईसाई संबत् में उनको मुसलमानो ने कनोज से निकाल दिया और वे मेवार में आबसे जहां कि उन्होंने मुसलमानो की इतनी सहायता की कि उन्होंने जो हिंदुस्थान में जीत पाई हैं; उन में से बहुतसी राठोरों की तलवार के बल से प्राप्त करी थीं॥ कुस की दूसरी संतान कछवाये हैं जिस घराने में राजा नल हुआ है जो कि नल और दमयंती की कथा में

अति प्रसिद्ध है॥ नल की संतान का अधिकार नरवर के किले पर था जो कि बड़ा नामी है यद्यपि पंद्रह सौ बरस तक राज्यों में बहुतेरी उलट पलट होती रही तो भी उनका अधिकार वहां बना रहा निदान कुछ थोड़ा काल बीता होगा कि सेंधियाने उनसे उस किले को छीन लिया॥ जैपुर के वर्त्तमान काल के राजा कछवाये के घराने के हैं इस भांति हिंदुस्थान के उत्तर में जो दो चार राजा शेष रहे वे भी प्रतापी रामचन्द्र की संतान में गिनते हैं॥

बिक्रमाजीत के सिंहासन पर बैठने से छप्पन बरस पीछे ईसामसीह ने यहूदा देश में अवतार लिया और मनुष्यों का पाप दूर करने के लिये आप अपना बलिदान किया॥ और तीसरे दिन कबर में से जीता निकला और इस मंगल समाचार को कि उनके प्रायश्चित्त के कारण से मनुष्यों की मुक्ति होगी सारे संसार में प्रसिद्ध करने के लिये अपने चेलों से कहकर आकाश को चलागया॥ कहते हैं कि उन चेलोंमें से एकने जिसका नाम टामस था अंजील को हिंदुस्थान में फैलाया और बहुतेरे आदमियों को ईसाई मत में लाया॥ ईसाई मत के फैलने का कुछ बिस्तृत बर्णन हम नही जानते परंतु इसमें कुछ संदेह नही हो सकता है कि वह हिंदुस्थान में दूर तक फैला क्यों कि हमें जान पड़ता है कि ईसामसीह की मृत्यु से तीनसौ बरस पीछे नाइस नगर में एक सभा इकट्ठी हुई थी इस में ईसाइयों का झुंड जो हिंदुस्थान में था उसकी ओर से भी एक प्रधान पादरी वहां था इस से एक बरस पीछे प्रसिद्ध अथनेशस ने फ्रूमेंशस को हिंदुस्थान का प्रधान पादरी नियत किया, हिंदुओं की पुस्तकों की और अंजील की इतनी बातें मिलती हैं इस बात में संदेह नही

रह सकता है कि ईसामसीह के चरित्र और मृत्यु का वर्णन बहुत फैला और यह कि हिंदुओंने उनको पलट कर के अपनी कहानियों की पोथियों में मिला दिया॥

उस समय में उज्जैन का एक राजा था जिस को यूनानी इतिहासवेत्ता पोरस कहते हैं जो कि निश्चय प्रमरा या पवार जान पड़ता है और कहते हैं कि छह सौ राजा उसके आधीन थे उसने रूम के राजाधिराज आगष्टस के पास एक दूत भेजा यह बात बड़ी अचंभे की है कि इस बिक्रमाजीत के कुल के राजाने जो संदेसा भेजा था सो यूनानी भाषा में लिखा था। इससे निश्चय होता है कि यूनानी लोग हिंदुस्थान में बहुत फैले थे क्या वे बुखारा के राज्य के कारण से थे क्या समुद्र के ब्योपार के कारण हिंदुस्थान में फैले हों॥ इस दूत के संगियों में से एक मनुष्य एथेंस नगर में अपघात करके मरगया संभव है कि यह मनुष्य जैन मत का होगा॥

यद्यपि उज्जैन के राजा जो कि प्रमरा की संतान में से थे बिक्रमाजीत के समय से लेकर मुसलमानों की पहली चढ़ाई तक हिंदुस्थान में बड़े शिरोमणि थे; परंतु जान पड़ता है कि अंध्र की संतान के राजा जो कि हिंदुस्थान के उस भाग में राज्य करते थे जहां गंगा बहती है; उस समय में सब अधिकार पाने लगे थे उनकी राजधानी पाटलिपुत्र था उनके राज्य का सच और ठीक वर्णन हम नहीं जानते परंतु निश्चय है कि उनका बड़ा राज्य होगा, क्योंकि उस घराने की बड़ाई रूम तक पहुंची थी और वहां उनकी राजधानी अंध्र हिंदुस्थानकी राजधानी कहलाती थी। उस समय के रूम के इतिहासवेत्ता कहते हैं कि उस घराने के राजा हिंदुस्थान में सब से अधिक अधिकार रखते थे; जितना कि हम उस समय की

असंगत कथाओं से निश्चय कर सकते हैं उसके अनुसार जाना जाता है कि उस घराने के लोग मगध के सिंहासन पर ईसवी संबत से बीस बरस पहले बैठे और तीस राजाओं के समय में साढ़े चार सौ बरस से अधिक तक हिंदुस्थान के राजाओं में शिरोमणि थे; परंतु उस काल की सब कथा ऐसी संदिग्ध हैं कि हम ढूंढ नहीं सकते हैं कि उस समय के राजा बरन उस समय के घराने किस प्रकार से होते गये॥ जाना जाता है कि उस काल के आदि में कनवा के घराने के चार राजा हुए जो कि उन देशों पर अधिकार रखते थे परंतु हम यह नहीं कह सकते हैं कि ये राजा अंध्र के घराने में से थे या नहीं और कहते हैं कि कनवा घराने के पिछले राजा को उसके प्रधान सिपरिक ने मरवा डाला और आप एक सौ इक्कावन बरस ईसवी में मगध के सिंहासन पर बैठा॥ चालीस बरस पीछे सूद्रक राजा हुआ जो पुस्तकें हमें मिल सकती हैं उनसे जाना जाता है कि हिंदुस्थान के राजाओं में यह राजा बहुत बुद्धवान् और शिरोमणि था उसने अंध्रकुल को जो कि किसी किसी के अनुसार पिछला घराना था और हिंदुस्थान में सब पर बड़ाई रखता था स्थापित किया; हिंदुओं के समय में कोई ऐसा राजा नहुआ था, जो कि संपूर्ण हिंदुस्थान का अधिपति समझा जाता॥ हिंदुओं के इतिहासों में सूद्रक को करणदेव या महाकरण करके लिखा है॥ थोड़ाही काल बितीत हुआ है कि काशी में धरती खोदने से एक पत्र निकला जिसमें उस राजा के पृथ्वी दान करने का ब्योरा लिखा था और उस में उस राजा को तीनो कलिंगों का स्वामी करके बर्णन किया था॥ जो यह केवल प्रशंसा ही न समझी जाय तो निश्चय होगा कि मगध

के राजा करण का राज्य एक ओर तो तेलिंगा तक और बंगाले के खात के उस पार आराकान तक, और बंगाले में समुद्र के तट तक था; क्यों कि इतिहासवेत्ताओं ने तीनों तिलिंगों की येही सीमा बर्णन की हैं॥ करण ने अठारह बरस राज्य किया, तिसके पीछे उसका भाई राजगद्दी पर बैठा करण के पीछे छह राजा लगातार हुए जिन्हों का करण ही नाम होता रहा, इसको छोड़कर उनका और बिषय हम कुछ नहीं जानते परंतु इतना ही जाना जाता है कि करण का नाम हिंदुस्थान और पूरब के द्वीपों में बड़ी प्रतिष्ठा से लेते हैं इससे यह बिचार हो सकता है कि हो न हो उन करण नाम राजाओंने जहाज बनाये हों जो समुद्र के तीन भागों के अधिपति थे॥ और उन्होंही ने पूरब के द्वीपों में अपना अधिकार किया हो॥ हिंदुस्थानी जब किसी दान शील मनुष्य की प्रशंसा करते हैं तब उसको करण की उपमा देते हैं और हमारे बिचार में ऐसा आता है कि यह करण मगध देश का राजा करण होगा जो बहुत पीछे हुआ है; न प्राचीन करण जिसका महाभारथ में बर्णन किया है॥

जाना जाता है कि अंध नाम के राजा अपने घराने के राज्य के अंत में चीनवालों से चिट्ठी पत्री का ब्योहार रखते थे और ऐसा समझ पड़ता है कि चीनवालोंने एक बिरियां जब कि हिंदुस्थान में झगड़ा हुआ था तब उनकी सहायता के लिये कुछ कटक भेजा था॥ पुराणों से जाना जाता है कि अंध्र का कुल ईसवी चार सौ छत्तीसवें बरस में हो चुका इस-लिये हम किसी किसी पुराण के बनने का काल उसी समय को ठहराते हैं॥ परंतु विलफर्ड साहिब जिसने हिंदुस्थान के प्राचीन वृत्तांत को बहुत बिचार करके लिखा है और कभी

कभी अपने मनसे भी कुछ लिखता है वह अनुमान करता है कि अंध्र कुल के राजाओं का संपूर्ण बर्णन छूट गया है; और जो इस घराने को और घरानों से मिलावें तो उस कुल के राज का समय पुलोम के काल तक जान पड़ैगा; जो कि सब राजाओं में शिरोमणि था और संभव है कि हिंदुस्थान में उसके पीछे कोई ऐसा राजा नहीं हुआ होगा॥ कहते हैं कि पुलोम ने संपूर्ण हिंदुस्थान को जीत लिया था इस से हम इतना अर्थ लेते हैं कि वह अपने समय में बहुत बड़ा राजा होगा॥ पूरब की ओर उसने हिंदुस्थान की सीमा के बाहिर तक देश जीत लिये थे, और संभव है कि चीन तक उस का राज्य हुआ हो; परंतु चीनवालों में उसका नाम इतना प्रसिद्ध था कि उन्होंने हिंदुस्थान का नाम पुलोमैनकोफ अर्थात् पुलोम का देश रक्खा है॥ जब उसका राज्य अत्यंत बढ़ा था तब वह छहसै अड़तालीस ईसवी संवत् में गंगा के बीच आपही डूब मरा॥

तवारीख़ फरिश्ता नाम कथा में एक बड़े राजा रामदेव की चढ़ाइयों का बर्णन लिखा है जिस से जाना जाता है कि यह राजा भी उसी समय में था॥ रामदेव हिंदुस्थान के किसी राजा का सेनापति था और अपने स्वामी के मरण काल पीछे राजगद्दी पर बैठा॥ हो न हो यह राजा पुलोम की गद्दी पर बैठा॥ उसने बंगाले पर चढ़ाई की और बंगाले की राज धानी को लूटा जहां बहुतसा धन उसके हाथ लगा, तिसके चार बरस पीछे वह मालवे को गया; संभव है कि प्रमरा के निर्बल कुल पर चढ़ा होगा जो कि अब तक उज्जैन में राज्य करता था; उस कुल को बसमें करके हिमालय पहाड़ की ओर अपनी सेना को लेगया फिर वह कश्मीर को गया

और सब पहाड़ी राजाओं से कर ठहरा लिया, उसका राज्य छप्पन बरस रहा जिस में उसकी सदा मनोकामना पूरी होती रहीं॥ उसके मरने के पीछे उसके बेटों में झगड़ा पड़ा और उसका सेनापति प्रतापचंद यह औसर पा आप सिंहासन पर बैठ गया और अपने स्वामी की भांति युद्धों में लगा निदान तारीख फरिश्ता नाम कथा के अनुसार जब कि उसने इरानियों के बंधे ऊये कर के देने में निषेध किया, तब उन्हीं की सेना हिंदुस्थान पर चढ़ आई और उससे केवल सब पिछला ही कर न लिया परंतु कुछ और भी आगे को ठहरा लिया॥ कहते हैं कि उसके मरने के पीछे उसके सब सेनापति अपने अपने सूबे को दबा बैठे और इसी रीत से उसका राज्य डूब गया॥ हम इस वृत्तांत को और वृत्तांतों से मिला नहीं सकते परंतु यह बात होसकती है कि पश्चिम ओर की चढ़ाई से नोशेरवां की चढाई हो; कोई २ कहते हैं कि उसने कदाचित हिंदुस्थान में कनोज तक देश जीत लिये थे॥

कहते हैं कि अंध्र के कुल के पीछे अंधभृत्तास अर्थात् अंध्रके सेवक राजा ऊए जिस से यह बात निकलती है कि अंध्रका राज्य बिगड़ने के पीछे प्रत्येक अधिपति ने अपने अपने सूबे को दाबलिया और आप स्वाधीन होगया॥ बिष्णुपुराण जो कि मुसलमानो की पहली चढ़ाई के समय का बना है जाना जाता है कि उसमें इस पिछले कुल की हार होने से जो आपत्ति हिंदुस्थान में पड़ी थी उसका बर्णन इस रीत से लिखा है कि क्षत्री जाति का बऊधा नाश होगया था और बऊतेरी जातों ने ब्राह्मणों से लेकर पुलिंदों तक अर्थात् पहाड़ी जंगली जातों तक मगध, प्रयाग, मथुरा, कांतीपुर, काशीपुर, कनोज और अनुगंगा में अर्थात् उन देशों में जहां गंगा बहती है

स्वाधीन होकर राज्य किये॥ गुप्त जो कि सूद्र हैं मगध के एक देश में राज्य करते हैं॥ द्वारक्षत कलिंगा के उन देशोंमें राज्य करता है जो कि समुद्र के तीर पर हैं; और कलिंगा के दूसरे भाग में गोलोन का राज्य है और मूसधानोंने नैमिश निश्चिद्र और कुखुत्ति जो देश बनारस और बंगाले की पूरब ओर हैं अधिकार किया॥ सूरत और मारवाड़ और नर्बदा के तीर के देशों में सूद्र और अहीर राजा ऊए और सिंधु नदी के तीर देशों पर मेलच्छोंने अधिकार किया था॥

॥ छठा अध्याय ॥

चित्तोड़ के राजा—उनकी ईसाई संतान—गोहां—बापा— मुसलमानों की वृद्धि—मुसमानों की पहली चढ़ाईयां—चित्तोड़ की चढ़ाई और रक्षा—तवार का कुल—उज्जैन का बिगड़ना—चित्तोड़ की चढ़ाई ॥

अंध्र का कुल बिगड़ने के पीछे हिंदुस्थान के उत्तर भाग का हर एक देशाधिकारी राजा बन बैठा जैसा कि अभी हम पिछले अध्याय में बर्णन कर चुके हैं ॥ हिंदुस्थान में फिर आपत्ति फैली और सिंधु नदी के तटपर एक नवीन शत्रु आपहुंचा जो और शत्रुओं की अपेक्षा बड़ा भयंकर था जिन्होंने सिंधु नदी पार होके हिंदुस्थान को उजाड़ा था ॥ ये शत्रु मुसलमान थे जिन्होंने पहले पच्छिम के देशों और गुजरात और राजपूताने के देशों पर चढ़ाई की, इसीलिये अब हम पूरब के देशों का बिषय छोड़ देते हैं क्योंकि उनकी प्रतिष्टा में अब अंतर आगया है॥ और अब उन कुलों का बिषय लिखा चाहते हैं जो कि सिंधुनदी के पास रहते हैं ॥

मुसलमानों की चढ़ाई से मेवार अर्थात् उदय पुर के राजे जो कि उस समय चीत्तोड़ में राज्य करते थे बहुत प्रसिद्ध होने लगे ॥ यह राज कुल जो अब हिंदुस्थान में महा प्रतिष्ठित है लिखित पत्रों की साक्ष से और पश्चिम के हिंदुओं के बचन से राम के बड़े पुत्र लव की संतान अपने को मानता है ॥ वे पहले ही पहल सूरत में जाकर बसे थे और बलभी पुर को जो कंबे के आखात में है अपनी राजधानी किया ॥ ईसवी

संबत् ५२४ में यह नगर नष्ट ऊआ॥ और एक शत्रुने इस नगर के बासियों को तित्तर बित्तर कर दिया जो सिंधु के मार्ग से चढ़ आया था॥ ऐसा अनुमान करते हैं कि यह शत्रु ईरान के राजा नोशेरवां आदिल का पुत्र होगा॥ इस महा उपद्रव में केवल पुष्पवती नाम राणी बच कर मलिया पहाड़ की खोह में छिप रही॥ वहां उसके पुत्र जन्मा जिसका नाम गूह रक्खा॥ जब यह लड़का बड़ा ऊआ तब उसने ईदर को अपने अधिकार में लाकर वहां अपना राज स्थापन किया॥ अब के उदयपुर के राजा उसी के बंश में हैं॥ और उनको सूरज बंश के बड़े राजा के कुल में जान कर बारहसौ बरस पहले के हिंदूराजाओं में शिरोमणि कहते हैं॥ उदयपुर के राजा को हिंदुओं के राज कुल का सूरज कहते हैं॥ पर बड़ी दृढ़ साक्षियों से यह अचंभे की बात जानी जाती है कि उन शिरोमणि राजाओं का कुल मा की ओर से एक ईसाई राजकन्या की संतान है॥ राजपूतों का इतिहासवेत्ता ऐसा कहता है कि यह बात निश्चय है कि उदयपुर के राजा सब हिंदुओं में शिरोमणि हैं॥ हिंदुओं के और राजा सिंहासन पर बैठने से पहले उदयपुर के राजा से आदरपूर्वक तिलक लगवाते हैं जो कि राज मिलने का चिन्ह है॥ यह तिलक माथेपर मनुष्यों के रुधिर से लगाया जाता है, और उनकी पदवी राणा है और अपने को नोशेरवां आदिल की संतान में कहते हैं इस नोशेरवां का बेटा अपने पिता से प्रतिकूल ऊआ और लड़ाई में मारागया; पर उसकी संतान हिंदुस्थान में रही आई जिससे उदयपुर के राणा ऊवे इस बात को और लोग भी मानते हैं कि नोशेरवां की एक बेटी उदयपुर के राजघर में ब्याही गई थी नोशेरवां की मारिस नाम राणी

कुसतुंतुनिया के राजा की लड़की थी जो ईसाई था इसलिये राजपूतों के कुल का अंगरेज़ इतिहासवेत्ता कहता है कि इससे एक बड़े अचंभे की बात निकलती है कि हिंदुओं का सूरज जिसकी सौ पीढ़ियों से राज्य होता चला आया है और जिसका राम की संतान में से होना निश्चय जानते हैं जो कि सूरजवंश में मुख्य था यह एक ईसाई राज कन्या की संतान है अपनी संतान से पश्चिम के ईसाई राजाओं से संबंध रखता है॥

गूह के पीछे ईदर के सिंहासन पर आठ राजा बैठे जिन में से सब से पिछले राजा को उसके बेटों ने आखेट करते समय मारडाला परंतु इसका छोटा बेटा जिसका नाम बापा था भांडीर के गढ़ में पहुंचा वह गडरियों में पला और उसके लड़कपन और तरुणाई की बहुतेरी अद्भुत कहानियां कहते हैं, जिस भांति से कि और राजओं की कहानियां हैं जिन्होंने कि पहले ही पहल राज की नीम धरी॥ बापा से उस-की माने कहा कि वह चीतोड़ के राजाओं से संबंध रखता है जो प्रमरा की जात थे॥ इस बात के सुनने से उसके चित्त में एक बड़ा उद्योग हुआ और उसने ग्वाल पनके ओछे काम को छोड़ने का विचार किया; अपने कई मित्रों को इकट्ठा करके वह बहुधा सात सौ ७०० संवत् ईसवी में, चितोड़ की ओर चला वहां उसका संबंध खुलने से बड़ा आदर किया परंतु बड़े मनुष्यों को एक अनजाने लड़के पर इतनी छपा करनी बहुत बुरी जान पड़ी और बहुत अप्रसन्न हुए इसी काल में एक बड़ा बैरी आन पहुंचा और सब कुलीनों को अपनी अपनी सेना लेकर आवने की आज्ञा भई; परंतु सबोंने मता करके इस बात का निषेध किया, और निंदा

पूर्वक राजा से कहला भेजा कि अपने नवीन मित्र से सहाय- मांगो॥ बापा ने तुरंत चढ़ाई करना अंगीकार किया॥ ये शत्रु मुसलमान थे जो कि अब की बार पहलेही पहल हिंदुस्थान में घुसे थे॥ और कुछ काल पीछे यही देश उनकी बड़ी राज- धानी होगया॥

अब हम मुसलमानो का प्रहत बर्णन करते हैं जो कि हिंदु- स्थान के ऐसे बड़े बैरी थे कि उनके समान आजतक कोई नही ऊआ॥ महम्मद जो कि मुसलमानो के मतका स्थापक था मक्के नगर में जो कि अरब देश में है पांच सो उन्हत्तर ५६९ संवत् ईसवी में जन्मा था॥ उसने चालीस बरस की अवस्था में अपने को पैगम्बर प्रसिद्ध किया और खड्ग की सहायता से मनुष्यों को मुसलमान करने में ईश्वर की आज्ञा बताई॥ अपनी बिशद बाणी और बुद्धिवानी से अरब के बऊत से लोगों को अपने मत में करके और जातों को भी अपने अधि- कार और मत में लाने के लिये सेना इकट्ठी की और अपनी आयु में इतनी जीत करने का प्रारंभ किया जो कि उसके पीछे सिंहासन पर बैठनेवालोंने बड़ी धूम धाम से उनको पूरा किया॥ उसकी मृत्यु के पीछे जो लोग कि उसके सिंहासन पर बैठते गये वे भी उतना ही उद्योग और मत का पक्ष करते थे॥ उन्होंने दाहने और बायें इतनी शीघ्रता से देश जीतलिये कि किसी और ने कम किये होंगे एक एक देश उनके आधीन होता गया और एक एक राज्य उनके उपाय से हारता गया, पचास बरस बरन थोड़े ही काल में उन्होंने पच्छम के सब देशों के प्रबंध को बिगाड़ दिया॥ मुसलमानो के मत का प्रारंभ होने के दिन से मुसलमानो का यह उद्योग ऊआ कि सारी पृथ्वी में उनही का राज्य हो जाय और सब लोग एकही

मत और एकही पगैंबर और एकही देश संबंधी और मत संबंधी रीतों को माने॥ वह लिख गया है कि मत और देश संबंधी लड़ाई में जो जो मुसलमान मारे जांयगे उन को खर्ग और अप्सरा मिलेगीं॥ जब कि मुसलमानो ने हबश और स्याम को जीतलिया हो और ईरानियों के राज्य को बिगाड़ डाला हो बरन यूरप को भी अपना ही समझा हो तो ऐसी दशा में यह बात कब बिचार में आसकती है कि हिंदुस्थान के धनवान देश मुसलमानो के हाथसे बच रहे होंगे; जिनको प्राचीन काल से पश्चिम के जिस सचुने चाहा उसीने सिंधुनदी से पार होकर तुरंत अपने अधिकार में कर-लिया॥ जाना जाता है कि महम्मद के सिंहासन पर बैठने-वालोंने अबतक अपनी सामर्थ दृढ़ नकी थी कि उन्होंने इस धनवान देश पर चढ़ाई की॥ महम्मद के मरने के कई बरस पीछे दूसरे खलीफा उमर ने ईरान को जीतकर दजला और फ़रातनदी के मुहानेपर बसरा नगर इस आशय से बसाया कि मुसलमान गुजरात और सिंधु देश से जो सिंधुनदी के पूरब को हैं ब्योपार कर सकैं॥ उसने अबुलास को एक बड़े कटक के साथ हिंदुस्थान पर चढ़ाई करने को भेजा; वह हिंदुस्थान के बीच आरोर की पहली ही लड़ाई में मारा-गया॥ उसमान उमर के पीछे खलीफा हुआ उसने सिंधुनदी के तीर के देशों पर चढ़ाई करने के अर्थ वहां का समाचार जानने के लिये लोग भेजे॥ परंतु कई एक ऐसे बिघ्न हुए कि जिनके कारण उसकी मनोकामना पूरी न होसकी॥ चौथे खलीफा अली ने सिंधु का कुछ देश लेलिया जिसको उसके मरने के पीछे मुसलमानो ने आपही छोड़ दिया इसी भांति अपने समय की आदिसे मुसलमान हिंदुस्थान पर

चढ़ाई करने की इच्छा रखते थे; पर वलीद के समय तक चढ़ाई का अवसर न पा सके॥ सात सै पांच ७०५ और सात सै पंद्रह ७१५ ईसवी संवत् के बीच उसने केवल सिंधु देश ही को नही जय किया बरन निज सेना को गंगा तट तक लेगया और सारे देश से करलेने लगा॥ इसी खलीफा के सेनापतियोंने जिब्रालटर मुहाने से पार होकर यूरप में अपना झंडा खड़ा किया था, और स्पेन देश को एक ही चढ़ाई में अपने आधीन करलिया॥ जब कि हम विचार करें कि उन्ही दिनों में मुसलमानोने गंगा और ईब्रो नदी के तटों पर भी जय पाई थी और यही खलीफा हिंदुस्थान और यूरप के लेने की इच्छा करता था तब महम्मद के सिंहासन पर बैठनेवालों के उद्योग और परिश्रम का ब्योरा कुछ कुछ जान पडेगा॥ वलीद के समय की चढ़ाई से सारा उत्तर हिंदुस्थान कांप उठा हिंदुओं के इतिहास से जाना जाता है कि यदु भट्टी सिंधु के पार के जंगलों में भाग गया॥ मानकराय चोहान जो कि अजमेर का बीर राजा था लड़ाई में मारागया और उसका छोटा बेटा कोट पर तीर से मारा पड़ा और जो गहना कि वह उस समय पहरे हुवे था अब तक राजपूत अपने लड़कों को नही पहनाते हैं॥ सूरत के राजाओं से सब देश छिन गया॥ इस आपत्ति के करने वाले को हिंदू इतिहासवेत्ता कभी देव और कभी जादूगर कहते हैं परंतु उसके तईं म्लेच्छ सदा कहा करते हैं यद्यपि हिंदुओं के इतिहासों से इस चढ़ाई करनेवाले का वर्णन अच्छी भांति नही जाना जा सकता है परंतु संभव है कि उत्तर हिंदुस्थान के राजाओं में यह आपत्ति मुसलमानों की चढ़ाई से उत्पन्न भई थी*

---

*ईब्रो स्पेन देश की एक नदी का नाम है

वलीद की सेना जो गंगा पर के देशों में घुसी थी उस से तीन बरस पीछे उसके सेनापति कासम के पुत्र महम्मद ने हिंदुस्थान पर दूसरी बेर चढ़ाई की॥ वह एक बड़ा बीर कटक लेकर सिंधु में आया और दाहर से जो कि उस समय में गुज़रात का अधिपति था बहुत लड़ाइयां लड़ा निदान दाहिर की हार भई और मारागया महम्मद कासम का बेटा जयवंत सेना को लेकर चित्तोड़ की ओर चला जो कि हिंदुओं के आश्रय का स्थान था॥ उस काल में बापा जिसका कि पहले बर्णन होचुका है सेनापति हुआ यद्यपि कुलीनो ने लड़ाई में इकट्ठे होने का निषेध किया फिर भी जितनी सेना वह इकट्ठी कर सका उसही से वह रण भूमि में आया और शत्रुओं के सनमुख हुआ जो कि अपनी जय के कारण फूल रहे थे उनको संपूर्ण रीत से हरा दिया॥ महम्मद कासम का बेटा सिंधु और सूरत की बाट होकर फिर उलटा फिर गया बापाने गज़नी तक अर्थात् कंवें तक जो उसके घराने की प्रकृत राजधानी थी पीछा किया, वहां सलीम सिंहासन पर था, बापाने उसे अपने आधीन किया और फिर उसकी बेटी से बिवाह किया॥ चित्तोड़ को फिरते समय बापा ने कुलीनो से बिचार किया और उनकी सहायता से पहले राजा को सिंहासन से उतार आप राजसिंहासन पर बैठा॥ उस समय की कथाओं से ये बातें इस रीत से जानी जाती हैं; परंतु यह बात प्रसिद्ध करनी आवश्यक है, कि इतिहासों में निश्चय कुछ अंतर रहता है जिसको हम संगत नहीं मिला सकते हैं बापा के समय में थोड़े काल पीछे खालिफुल मनसूर ने सिंधु को फिर जीत लिया और उसकी राजधानी का नाम पलट कर मनसूरह रक्खा॥ चित्तोड के राजा बापाने जिसके

वंश में उदयपुर के राना हैं अपने देश पर अच्छी भांति अधिकार करके अपने देश और मत को छोड़ दिया और अपने कटक सहित सिंधु पार होकर खुरासान में चला गया जहां कि उसने बड़ुतसी मुसलमानियों से विवाह किया और बड़ुत संतान छोड मरा॥ इस बात से कि जो बड़ुत निश्चय है जाना जाता है कि बड़ुत काल नहीं बितीत ड़ुआ होगा कि तब तक हिंदुस्थान में और सिंधु नदी के पश्चिम ओर के देशों में आवा गमन रहता था॥

जो कि हिंदुस्थान पर मुसलमानों की पहली चढाई का वर्णन कर चुके हैं इसलिये अब यही कहना शेष रहा है कि उस समय में अर्थात् सातसै पचासेक बरस ईसवी में दिल्ली का राज्य एक नवीन घराने के अधिकार में था जो पांडव के कुल में शेष रहा था॥ यह राज्य उस समय से स्वामी रहित था; जब कि बिक्रमादित्यने सब से पिछले राजा को दूर किया कि जिस बात को सातसै बरस से अधिक बितीत हो चुके थे कि समय के फेर फार से उस घराने ने कि जिसको बड़ुधा तवार कहते हैं दिल्ली को नवीन राजधानी बना लिया उस दिन से अनंगपाल के समय तक उसी घराने के इक्कीस राजा दिल्ली के सिंहासन पर बैठे॥ अनंगपालने अपने दोहते पृथ्वीराज को गोद लिया जो कि दिल्ली के हिंदूराजाओं में सब से पिछला था॥ उसके मरने के पीछे मुसलमानों का झंडा इस प्राचीन राजधानी पर पांचसै बरस तक फहराता रहा॥

जबकि वलीद की सेना हिंदुस्थान में घुसी उसी समय के आस पास परमरा का कुल जिसने कि उज्जैन में चिरकाल राज्य किया था घटने लगा॥ इस राजकुल की बड़ाई हम

जब जान सकें ॥ तब उन संबतों की संख्या ओर सामर्थ बिचार करें जो कि उसके बिगड़ने से जुदे जुदे देशों के राजा होगये तवार के कुल ने दिल्ली में अपना अधिकार करलिया ओर एक बड़ा राज्य बनाया ॥ गुज़रात स्वाधीन होगई ॥ ओर वह प्रथम चवरों के आधीन रही पीछे सोलंकिओं के ॥ इन्होंने नरवाला अर्थात् अनरवाला को अपनी राजधानी बनाई ॥ गहलोटोंने चीत्तोड़ को अपने राज्य में मुख्य स्थान बनाया ॥ कुछ पीछे कन्नोज कोरवों के अधिकार में आई कुछ एक यह-लासा चमतकार होने लगा ॥ ओर हिंदुस्थान के उत्तर बिभाग का रूप पलट गया उज्जैन ओर पाटलिपुत्र का तो राज्य नष्ट हुआ नये नये राज्य उत्पन्न हुए उनके स्वामियों के जुदे जुदे उद्योग थे ॥ होते होते अंत में मुसलमानो की जय से हिंदुस्थान में एक ओर भांति की व्यवस्था हो गई ॥

जान पड़ता है बापा के समय से कुछ काल पीछे तक मुसल-मानोने हिंदुस्थान पर कोई ओर चढ़ाई न की इस राजा के बेटे ओर पोते के राज्य में ऐसी कोई बात न हुई जिसै स्मरण करें परंतु उसके पड़पोते खमान को जो बड़ा बीर था सिंहा-सनपर बैठते ही मुसलमानो के साथ अपने बल की परीक्षा करनी पड़ी ॥ खमान ने संबत् आठ सो बारै ८१२ ईसवी से आठ सो छत्तीस ८३६ के संबत् तक राज्य किया हिंदुस्थान पर मुसलमानो की इस चढ़ाई का सेनापति खुरासानपति महमूद कहाता है ॥ परंतु इसमें कुछ संदेह नही कि वह मामून बग-दाद के खलीफा हारूनरशीद का पुत्र ओर ग्रारलमनशाहन-शाह का मित्र था ॥ उसके बापने उसको खुरासान देश दे दिया था ॥ मामून बड़ा कटक लेकर चीतोड़ पर आया ॥ ओर जो हम मामून की सेना की सामर्थ का उस कटक की

संख्या पर बिचार करें जो कि चीतोड़ के बचाने के लिये इकट्ठी ऊई थी तो हमें जान पड़ेगा कि वह कैसी बलवान् थी॥ हिंदुस्थान के और राजाओंने जाना कि जो आपत्ति चीतोड़ पर है वह हमारे लिये भी है॥ इस बिचार से इकट्ठे होकर चीतोड़ के बचाने को चले॥ हिंदुस्थान की उत्तर ओर के प्रत्येक बिभाग से चीतोड़ की सहायता को जितनी जाति के लोग थे उन सब जातों का बर्णन बड़े बिस्तार से एक रजपूत कविने किया है॥ इसमें कुछ संदेह नही कि उत्तर की सब सेना उस शत्रु को एकही बार में हटा देने के लिये इकट्ठी भई॥ जिसकी चढ़ाई का अंत नही जाना जाता था॥ इन सेनाओं की सहायता से खमानने मुसलमानो से जय पाई॥ कहते हैं कि उसने उनसे चौबीस लड़ाइयों से न्यून न की होंगीं इन चढ़ाइयों से उसका यश दूर २ तक शत्रु मित्र सबों में फैल गया॥ और बऊत काल तक उसके देश के लोगों के मनमें मुसलमानों के संग लड़ने के समय उसके नाम लेने से बीरता उत्पन्न होती थी॥ कहते हैं कि उसने ब्राह्मणों के कहने से अपने पुत्र को सिंहासनपर बैठाय राज सौंप दिया परंतु पीछे उसने फिर अपना राज लेलिया और जाना कि ब्राह्मणों के कहने में छल था इसलिये बऊतेरों को मरवा-डाला और उन्हों के कुल को नष्ट करने का उद्योग किया॥ निदान खमान को उसके पुत्र ने मार डाला पर इसका उसके बाप के सेनापतियों ने पलटा लिया॥

उस समय से डेड़सौ बर्ष १५० तक मुसलमानों ने हिंदुस्थान पर कोई और चढ़ाई न की॥ उस समैं के हिंदू इतिहास शुद्ध और निस्संदेह नही हैं उसने इतिहास की सी एक ही बात लिखी है॥ जो उस समय में निकम्मी जान पड़ती

थी पर पीछे उससे बऊत कार्य निकले॥ कन्नोज के राज्य ने जहां हिंदुओं के मत ने पुष्टता पाई एक नये घराने के राजाओं के राज्यों ने फिर चमत्कार पाया॥ और पहले के समान फिर बढ़ती होती चली महमूद ग़ज़नवी की चढ़ाई से कुछ काल पहिले अथवा अब से नौसै बरस के आस पास उदीश्वर ने जो कि बिदियों के कुल के राजाओंमें से था और बंगाले का राजा था॥ नदिया उसकी राजधानी थी अपने ब्राह्मणों की मूर्खता से अप्रसन्न हो वैरासिंहदेव कन्नोज के राजा से ऐसे ब्राह्मणों के लिये प्रार्थना की जो कि मत व्यवहार के विषय में विशेष ज्ञान रखते होंय॥ कन्नोज के राजा ने पांच ब्राह्मन उसके पास भेजे अबके बंगाली ब्राह्मन जो उस देश के नही हें अपने को उन्होही की संतति में मानते हैं॥ और कायस्थ जो बंगाले में ब्राह्मनों के नीचे गिने जाते हैं अपने को उन पांच सेवकों की संतति में बताते हैं जो कि उन पांचो ब्राह्मणों के साथ बंगाले में गये थे॥

॥ इति प्रथम बिभाग॥

॥ दूसरा बिभाग ॥

॥ मुसलमानो का समय ॥

॥ सप्तम अध्याय ॥

समानियों का राज्य—गज़नी के राज्य की वृद्ध—सुबुकतगीं की हिंदुस्थानपर चढ़ाई—गजनीन के राजा महमूद का वृत्तांत—हिंदुस्थान की अवस्था—महमूद की हिंदुस्थानपर अन्य अन्य चढ़ाइयां—थनेश्वर—कन्नोज— सोमनाथ—महमूद की मृत्यु

अब हम उस समय का व्योरा लिखते हैं जिससे कि हिंदुस्थान में मुसलमानों के राज्य का आरंभ जाना जाता है॥ वलीद और हारूनुलरशीद के राज्य में जैसी कि हम लिखि आये हैं हिंदुस्थान के जितने के लिये बड़त घोर चढ़ाई ऊई थी परंतु हिंदू मुसलमानो से जय पाते रहे॥ पिछली चढ़ाई से डेढसौ वर्ष पीछे तक यवनोने कभी हिंदुस्थान के लिये उद्योग न किया परंतु परिणाम सिंधु से थोड़ा दूर पर

एक नवीन मुसलमानों का घराना स्थापित हुआ और हिंदुस्थान लेने का बिचार निश्चित किया ॥

संबत् हिजरी के पहले सैंकड़े में मुसलमानोंने मावरुलनहर और खुरासान के धनवान और बिस्तृत देशों को जीत लिया था ॥ और एकसौ अस्सी बरस से अधिक खलीफा के देशाधिकारी उनपर आज्ञा करते रहे ॥ परंतु अपने कुल में नामी हारूनुलरशीद के मरने से पीछे खलीफों का बल घट गया और केवल महम्मद के स्थानापन्न होने के नाम से दूर दूर के देशाधिकारी खलीफों के आधीन न रह सके एक एक देश इन्हों के राज्य से छूटता गया यहां तक कि खलीफों के बहुत बड़े राज्य में बगदाद और उसके पास के गांव इस से बिशेष कुछ न रहा ॥ उन देशाधिकारियों में से जो कि उस समय में स्वाधीन राजा हो गए इसमाईल समानी मावरुलनहर और खुरासान का अधिकारी था जो कि संबत् दोसौ तरेसठ २६३ हिजरी में समतुल आठसौ बासठ ८६२ ईसवी के राजा हुआ और एक नवीन राज्य स्थापित किया जिस में कि उन दोनों देशों के भिन्न काबुल अफगानिस्थान कंधार जाबुलिस्तान थे ॥ बुखारा उस कुल की राजधानी निश्चित हुई ॥ और यह कुल इतिहासों की पोथी में समानियों का कुल करके लिखा है। चार राजाओं ने ९० वर्ष तक भलाई और प्रशंसा के साथ राज किया ॥ चौथे राजा ने अपने मरने के समय एक लड़के मनसूर बिख्यात को राज्याधिकारी किया परंतु और सभासद प्रधानों के बिचार में अंतर हुआ ॥ क्योंकि कितनेक हारूनुलरशीद के चाचा को राजसिंहासनपर बिठलाया चाहते थे परिणाम इस बात में अबसतगी अथवा अलपतगी अधिकारी खुरासान का जिसकी राजधानी गजनी

थी पंच ठहरा उसने भी चाचाही को राजा बनाने का विचार किया परंतु बुखारा में इस बिबेचना के जानने से पहिले दोनो ओर में निबटेरा होगया था॥ और उन्होंने मनसूर को राज-सिंहासनपर बिठला दिया था॥ इस तरुण राजाने अवसतगी के ऐसा मता करने से क्रुद्ध हो उसको बुखारा में बुलवाया॥ परंतु वह ऐसा बिचारवान् था कि अपने शत्रुओं के हाथ न आया और तुरंत उसने अपने ताईं स्वतंत्र राजा माना॥ मनसूर के सेनापति उसपर चढ़ गये परंतु वे दो वेर लगातार लड़ाई हारे और अवसतगी खुरासान और जाबुलस्तान का निर्भय राजा रहा जिन्होपर उसने पंद्रह वर्ष तक अधिकार रक्खा॥ और मरने के पीछे अपने बेटे इसहाक को उनका अधिकारी छोड़ गया॥ बुखारा के राजा ने उन फिरे हुए देशों पर अपना स्वत्व भी नही छोड़ा था इसलिये इसहाक ने सिंहासनपर बैठने से थोड़े काल पीछे अपने सेनापति सुबुकतगीं के साथ मनसूर के देश पर उस मनोरथ से चढ़ाई की कि मनसूर दीन होकर उसे स्वतंत्र राजा माने॥ सुबुतकगीं बिजयी हुआ॥ और मनसूर से खुरासान का स्वतंत्र राजा होने का पत्र प्राप्त किया॥ इसहाक अपनी मदांधतासे मृत्यु को प्राप्त हुआ और सेनानें तत्काल अपनी इच्छा से सेनापति सुबुकतगीं के गजनी के सिंहासनपर स्थापित किया यह राजा अपने को उन ईरानियों की संतति में जो कि सल्सानीदों के कुल में कहाते हैं कहताथा जिस कुल का अंत का राजा यजदीजुर्द उस समय में जब कि मुसलमानोंने आकर इसके देश को अपने राज्य में मिलालिया तब निज देश से निकाला गया॥ यद्यपि सुबुकतगीं राज पुत्र था तो भी संयोग से उस पर बड़ी कंगाली आगई और लड़कपन में

आबस्तगी के हाथ बिक गया जिसने कि उसको होन हार बिचार करके क्रम क्रम से बड़े बड़े अधिकार दिये॥ इहां तक कि परिणाम वह सब राज संसर्गियों से अधिकार में बिशेष होगया था॥ अपने राज्य के पहिले वर्ष अर्थात् संवत् नोसो सत्तर ९७० ईसवी में वह हिंदुस्थान पर सेना चढ़ा लाया॥ उस समय में हिंदुस्थान के सब देशों में गजनी के नवीन राज्य के निकट लाहोर में जैपाल नाम राजा था॥ जब कि मुसलमान मनसूर के समय में सिंधुनदी को उतर आये उससे पीछे लाहोर के राजाओंने वीर और पहाड़ी सिंधु के पश्चिम तट के रहनेवाले अफगानों से दृढ़ बचन कर लिये थे उस कारन से मुसलमानों को हिंदुस्थान में आने से रोक टोक रही मुसलमान तवारीख फरिश्तः पुस्तक के अनुकूल उस समय से सिंधु देश के मार्ग से भिन्न और कोई हिंदुस्थान में आने का मार्ग नही पा सकते थे॥ सुबुक्तगींने अफगानों को हिंदुस्थानियों से छुड़वा कर अपनी सहायता करने के लिये दृढ़ किया॥ इस रीति सिंधुनदी के पार की रक्षा जाती रही लाहोर और मुलतान भी चढ़ाई करनेवालों के वश में शीघ्र आगए सुबुक्तगींने पहलीही चढ़ाई में हिंदुस्थान के कई गढ़ ले लिये॥ और बहुतसी लूट लेकर अपनी राजधानी को उलटा फिर गया॥ जैपालने सुबुक्तगीं की फिर चढ़ाई करने के संदेह से बहुतसी सेना इकट्ठी की और सिंधु पार होकर मुसलमानो पर उन्ही के देश में चढ़ाई की परंतु उसका मनोरथ सुफल न हुआ और उसके आधीन होना पड़ा और उसने कर में प्रति वर्ष रुपयों और हाथियों का देना अंगीकार किया। जो कि उस से सब कर एकही बार दिया न गया इसलिये उसने बिश्वासित मनुष्यों को कर के लेने के लिये लाहोर तक अपने

साथ भेज देने की प्रार्थना की; जैपालने अपनी राजधानी में आनकर और वहां अपने देश को सुबुकतगीं के उलटा फिर-जाने का समाचार सुन कर इस नए बचन के तोड़ने की इच्छा की; उसकी सभा में उसके सेनापति क्षत्री सिंहासन की बांई ओर खड़े थे; और ब्राह्मन दाहिनी ओर थे॥ क्षत्रियोंने उसे स्मरण करवाया कि दुष्ट शत्रु के साथ संग्राम करने में कितनी आपत्ति पड़ी थी और कहा कि महाराजने कर के देने का बचन किया था पर ब्राह्मनों ने कहा कि अब गज़नीन से कुछ डर न रहा और कर के न देने का उपदेश किया; पछतावा है कि उसने ब्राह्मनो का कहना अंगीकार किया और रुपये लेने के लिये जो मनुष्य आये थे उन्होंको कैद किया॥ सुबुक-तगींने बिस्वास घात का समाचार सुन के अपनी सेना इकट्ठी की॥ और जैपाल के देश पर बड़ी धूम धाम से आया॥ यद्यपि यह राजा अपने बचन के तोड़ने के कारन से शत्रु को अपने ऊपर आप चढ़ा लाया था परंतु फिर भी उत्तर के हिंदू राजा उस चढ़ाई को रोकने के लिये साथी हुये; दिल्ली अजमेर कालिंजर और कन्नोज के राजा लाख सेना से उसके सहायक हुए; और दोनो सेना लमगान के तट सनमुख हुईं॥ हिंदु-ओंने हार पाई और नीलाब के तट तक उनका पीछा हुआ॥ वह युद्व सिंधुनदी के पश्चिम की ओर हुआ क्योंकि उस समय में उस नदी के पार होने में कुछ दोष नहीं गिन्ते थे; जाना जाता है कि उस लड़ाई के पीछे सुबुकतगीं के राज्य में और लड़ाई हिंदुओं से न हुई; वह युद्व बाईस बरस तक रहा॥ संबत् नोसौ सत्तानवे ९९७ ईसवी में सुबुकतगीं मरा; और उसके पीछे प्रथम उसका पुत्र इसमाईल राजा हुआ परंतु दो महीने के पीछे उसका भाई बड़ा नामी महमूद गजनवी सिंहासनपर बैठ गया॥

महमूद गज़नवी जिसने कि हिंदुओं के राज्योंपर बहुतसी आपत्ति फैलाई; उसकी चढ़ाइयों का वर्णन करने से पूर्व हिंदुस्थान की उस समय की दशा संक्षेप रूप से लिखना योग्य है॥ नर्वदा के उत्तर के देशों में इस रीत से राज्यों का बिभाग था॥ दिल्ली तवार के कुल के अधिकार में थी॥ राठोर अपने इतिहासवेत्ताओं के अनुसार कनोज पर अधिकार रखते थे; यद्यपि इस बात के बहुतसे प्रमाण हैं कि कनोज का सिंहासन कौरवों के पास था। घलोत मेवार पर और सोलंकी गुजरात पर अधिकार करते थे॥ इनमें से किसी पराक्रमी कुल के आधीन और कई छोटे राजा थे॥ दिल्ली और कनोज की सीमा काली नदी थी॥ दिल्ली का राजा पश्चिम की ओर सिंधु नदी तक के देशों में अधिकार रखता था और उसकी प्रजा में १०८ ठाकुर थे जिनमें कितनेहीं सब भांति राजा सरीखे थे परंतु राजा न कहाते थे॥ कनोज के राज्य की उत्तर सीमा हिमालय श्रेणी थी; पूरब में बनारस; पश्चिम में बुंदेलखंड और दक्षिण सीमा मेवाड़॥ मेवाड़ की उत्तर सीमा अर्बली नाम पहाड़ थे; दक्षिण सीमा प्रमरावालों का धारनगर जो कनोज के आधीन था; पश्चिम में उसकी सीमा गुजरात के राज्य से लगीहुई थी; गुजरात की पश्चिम सीमा सिंधुनदी, दक्षिण में समुद्र, और मरु भूम उत्तर में॥ बैद्य कुल के राजा बनारस में राज्य करते थे॥ हिंदुस्थान की अत्यंत दक्षिण सीमा में मदूरा के राजा बहुत काल तक प्रधान रहे; परंतु अब बर्द्धनशीलटैंजोर के कुल के आगे आधेक अस्त होगये हैं॥ ऐसा जान पड़ता है कि यादव दक्षिण देश के नैऋत कोण में राज्य करते थे संभव है कि वे जात के अहीर थे॥ उनके उत्तर में खान देश के बीच सोलंकी कुलवालों का राज्य

था॥ महमूद की बड़ी और पूरी चढ़ाई के समय हिंदुस्थान बहुतसे राजाओं के पास था, और उन सबों का बिचार और उद्योग अलग अलग था इसलिये इस लड़ाई के लड़ने में वे योग्य न थे॥

महमूद गज़नवी जिसने मुसलमानो में से पहलेही पहल आकर हिंदुस्थान में दृढ़ता पूर्बक जय प्राप्त की सो तीस बरस की अवस्था में अपने बाप के सिंहासन और देशों का स्वामी हुआ॥ सिंहासनपर बैठने से ४ चार बरस तक वह अपने ही देश के प्रबंध और बखेड़े मिटाने में लगा रहा॥ एक सहस्र एक संबत् ईसवी में उसने हिंदुस्थानपर चढ़ाई का प्रारंभ किया और लगातार बारह १२ बेर से कम हिंदुस्थान पर न आया॥ अगस्त महीने में वह दस सहस्र १०००० मनुष्य लेकर गज़नी से चला और पेशावर में अपने बाप के पुराने बैरी जैपाल के साम्हने हुआ; और हिंदुओं की सेना हारी और जैपाल आप बंदुआ हुआ और इस दूसरी हार के पीछे उसने राज अपने बेटे आनंदपाल को दिया आप जीते जी आग में जलकर संसार के दुख से छूटा॥ महमूदने सिंधु-नदी के पश्चिम के देशों में अपने मुसलमान सूबेदार नियत किये और आनंदपाल से कर ठहरा लिया परंतु छोटे छोटे राजाओंने लाहोर के नवीन राजा को संभव कि आनंदपाल के सिखाने से अपने २ बट का कर देने का निषेध किया उन फिरेहुओं में भटनेर का राजा प्रधान था, उसको दंण्ड देने के लिये महमूदने दूसरी चढ़ाई की॥ भटनेर का गढ़ जो बीका-नेर के अत्यंत उत्तर में है, तीन दिन के घेरने में जीत लिया और राजाने बैरी के हाथ से बचने के लिये अपने तई आप तलवार से मार डाला॥ एक सहस्र पांच संबत् ईसवी में

आनंदपाल के सिखाने भलाने से मुलतान का दाऊद नाम सूबेदार फिर गया महमूद ने फिर अपनी सेना को सजाया और इस झगड़े उठानेवालेपर चढ़ चला उसको आधीन करने से उसी दाऊदने उसके आधीन होना अंगीकार किया और बड़ा करदेना ठहराया॥ और एक सहस्र आठ संवत् ईसवी में महमूदने आनंदपाल को दंड करने के लिये इच्छा की क्योंकि उसने दाऊद की बात में बिश्वासघात किया था और हिंदुओं-पर चौथी बेर सेना चढ़ाई॥ आनंदपालने महमूद की यह बात सुनकर सब हिंदू राजाओं के पास समचार भेजे और मुसल-मानो को हिंदुस्थान से निकाल देने के लिये मिलकर उद्योग करने की बात वर्णन की॥ उज्जैन, ग्वालियर, कालिंजर, कनोज, दिल्ली और अजमेर के राजा उसकी सहायता के लिये चले॥ ये सेना इतनी थी कि उनके समान कभी कोई कटक मुसल-मानो से लड़ने के लिये इकट्ठा नही भया था॥ कहते हैं कि उस समय में स्त्रियोंने युद्व के खरच के लिये अपने आभूषण उतार दिये थे॥ हिंदुओं का कटक सिंधु नदी की ओर चला और पेशावर में उतरा जहां कि मुसलमान भी आये और दोनो कटक चालीस दिन तक आमनह साम्हने पड़े रहे॥ निदान महमूदने थोड़ासा झुंड धनुषधारियों का लेकर चढ़ाई की परंतु उनको बीर गकरोंने जो बेहत और सिंधुनदी के बीच बसते और अबके जाटों के बड़े थे ऐसे पराक्रम से हटा दिया कि पांच सहस्र मुसलमान मारे गये और उनकी जय होने में संदेह रहा; परंतु जिस हाथी पर आनंदपाल हिंदुओं का सेनापति चढ़ा ऊआ था वह एका एकी चौंक कर भागा इससे हिंदुओं के कटक में ऊल्लड़ मच गया और वे बऊत घब-राकर भागे और उनके बीस सहस्र मनुष्य मारे गये॥

दूसरे बरस में महमूदने पांचवीं बेर हिंदुस्थान पर चढ़ाई की और नगरकोट जिसको भीम कहते हैं और वह ज्वाला-मुखी के पास है उसे लेने की इच्छा की, इस स्थान में बड़ा द्रव्य था और यह गढ़ दृढ़ता में प्रसिद्ध था॥ हिंदुस्थान के राजाओंने उसकी दृढ़ता का भरोसा करके अपना २ भंडार रक्खा था वह महमूद के हाथ सहजही आगया और सब धन को लूटकर ग़ज़नी में लेगया जहां कि उसने एक बड़ा जश्न किया और अपनी प्रजा को हिंदुस्थान की लूट दिखलाई॥

एक सहस्र ग्यारह सौ ईसवी संबत् में महमूद ने सुना कि थनेसर हिंदुओं का प्राचीन तीर्थ और धनवान है और हिंदू उसे ऐसा मानते हैं जैसें मुसलमान मक्के को समझते हैं इस-लिये उसके लूटने का उद्योग किया॥ महमूदने अपने बचन करने के अनुसार आनंदपाल से निज कटक को रोक टोक बिना जाने देने के लिये प्रार्थना की॥ और कहते हैं कि आनंदपालने कटक समेत महमूद को जिमाया बरन यह बात भी लिखी है कि हिंदू राजाने अपने भाई के साथ मह-मूद को यह कहला भेजा कि हिंदू थनेसर को बड़ा पवित्र-स्थान जानते हैं और जो आप के मत में हिंदुओं के मत पर चढ़ाई करना धर्म था तो नगरकोट के बिगाड़ने से आपने अभी अपना मत संबंधी धर्म कर लिया और जो आप थनेसर को छोड़दीजे तो आनंदपाल प्रसन्नता से आपको थनेसर का बरसवारी कर बरसवेंदिन दिया करैगा॥ महमूद के उत्तर से उसके उद्योग का समाचार अच्छी भांति जाना जाता है क्योंकि उसने यह उत्तर दिया कि मुसलमानों के मत की यह आज्ञा है कि जितना मुसलमानी मत फले और मुसल-

मान देव पूजा को दूर करने में जितना उद्योग करेंगे उसी के अनुसार उनको स्वर्ग में फल मिलेगा और मुझको योग्य है कि सब हिंदुस्थान में से देव पूजा की जड़को उखाड़ डालूं॥ तो ऐसी दशा में थनेसर क्योंकर बच सकता है॥ महमूद के इस उत्तर से हिंदुओं को महमूद से कुछ भरोसा न रहा इसलिये दिल्ली के राजाने सब हिंदुओं को थनेश्वर के बचाने के लिये बुलाया परंतु उनके इकट्ठे होने से पहलेही मुसलमानोने थनेसर लेकर लूट लिया बहुधा मूरतों को तोड़ डाला और उन में से बहुत बड़ी मूरतों को ग़ज़नी में मुसलमानो के पांओं के नीचेदबवाने के लिये भेजा और उसके साथ दो लाख हिंदू भी पकड़ करके भेजे और ग़ज़नी में इतने हिंदू दिखाई देने लगे कि वह एक हिंदुओं का सा नगर दृष्ट आने लगा॥

थनेसर के जय होने के पीछे कई बरस तक पहले की अपेक्षा हिंदुस्थान में आनंद रहा; परंतु ईसवी संवत् एक सहस्र सतरह में महमूद एक लाख पैदल और बीस सहस्र सवार और बीस सहस्र मुसलमान लूट के लालच से मतकी लड़ाई में इकट्ठे हुए इन सबको साथ लेकर फिर हिंदुस्थान पर चला॥ ऐसा कहते हैं कि प्रथम उसने मेरठ नगर को जय किया और यह नगर केवल बहुतसा रुपया देने के कारण लूट से बचा॥ यहां से वह महावन को गया जो वृंदावन के राजा की राजधानी थी वहां का राजा हारा और अपनी रानी को लेकर भागा और शत्रु ने तत्ता होकर उसका पीछा किया इसलिये उसने अपनी रानी की पति बचाने के लिये तलवार से मारडाला और अपने तईं भी काटगेरा॥ तिस पीछे मुसलमानों की सेना मथुरा को चली जो कृष्णचंद का जन्मस्थान है यह नगर मंदिरों से भरा हुआ था जिन में रत्न चमकते थे॥ महमूदने

तलवार हाथ में लिये नगर में पैठ मूरतों को बिगाड़ा और जो सोने चांदी की थीं उनको गलवा गेरा॥ थोड़ेसे मंदिर बचे या तो इस कारण से कि वे बड़े दृढ़ थे या उनको बहुत सुंदर जानकर छोड़ दिया॥ महमूदने इस नगर से ग़ज़नी के अधिपति को एक पत्र में यह लिखकर भेजा कि यहां अनगिनत मंदिरों को छोड़कर और भी सहस्रों घर हैं जो कि मुसलमानों के मत के समान दृढ़ बने हैं॥ जिनमें बहुतसे संगमरमर के हैं॥ यह नगर हजारों दीनार खरच करने से बना होगा ऐसा नगर दोसौ बरस से कमती में नहीं बन सकता है॥ मथुरा के द्रव्य और सुंदरता का वर्णन जो महमूदने किया है वह उस समय की कथा की शुद्धता जानने के लिये बहुत आवश्यक है॥ इस नगर की लूट में पांच मूरतें सोने की आईं जिनकी आंखों में लाल थे एक और मूरत में बड़े मोल का नीलम था इनको छोड़ कर और सौ मूरतें चांदी की थीं जो बहुतसे ऊटों पर लादी गई थीं॥

महमूद छब्बीस दिन मथुरा में रहकर ऐसी हानि करता रहा जो फिर न सुधर सके और फिर वहां से कनोज गया वहां उसने ऐसा एक नगर देखा जो मुसलमान इतिहासवेत्ताओं के अनुसार वह ऊंचाई में आकाश से बातें करता था॥ यह नगर दो सहस्र बरस से भी अधिक २ हिंदू मत का मुख्य स्थान रहा और वह पंद्रह कोस में बसता था॥ उसके चमत्कार का जो बर्णन किया है सो कठिनता से मन में आसकता है वहां के राजाओं के पास इतनी सेना थी कि जब तक पीछे की सेना के डेरे भी न उखड़ते थे इस से पहले हरावल सेना मंजिल पर पहुंच जाती थी॥ कहते हैं कनोज में जो सदा सेना रहती थी सो इतनी थी ८०००० सहस्र मनुष्य

झिलम पहने रहते थे; और तीस सहस्र ३०००० सवार झिलम पहरे रहते थे; और तीस लाख पैदल और दो लाख धनुर्धर और परसे वाले थे और इनको छोड़ एक हाथियों का दल था जिनपर बीर चढ़ते थे॥ इस नगर का चमत्कार इस बात के कहने से कुछेक जाना जायगा कि इस में केवल तीस सहस्र पनवाड़ियों की दूकाने थीं; गवइयों के साठ सहस्र घर थे॥ इस नगर का राजा कुंवरराय था जो कि बड़ी धूम धाम से रहा करता था; परंतु उन तीनो बड़े नगरों की दशा देख के जिनको महमूद ने अभी बिगाड़ा था कुंवर राय भी उसके आधीन हुआ और कहते हैं कि वह अपनी स्त्री और लड़कों समेत मुसलमानो के कटक में आया और महमूद से बिनती करके नगर बचाया॥ महमूद केवल तीन दिन उस नगर में रहा और फिर गज़नी को चला और बहुतसे हिंदू कैदी अपने साथ लिये गया इस कारण उनकी ऐसी बहुतात हुई कि दो रुपये से भी कमती में बिके थे॥ इस बिरियां में महमूद लूट जो लेगया उसको पचास लाख रुपये का धन बिचारते हैं; परंतु संभव है कि इस से बहुत अधिक होय क्योंकि उस समय के सिक्के चलते हुए का प्रमाण अच्छी भांति नहीं जानते हैं॥ यह बात भी बर्णन करनी चाहिये कि इतिहासवेत्ता फरिश्तह जिसका कहना बहुधा बिश्वास योग्य कहता है कि मेरठ और मथुरा से पहले कनोज पर महमूदने चढ़ाई की थी परंतु ये दोनो नगर महमूद के मार्ग में थे इसलिये बिचार में आता है कि पहले उन्होंपर चढ़ाई की हो और उनके जय होने से कनोज का राजा भी आधीन हुआ हो॥ यह इतिहासवेत्ता भूगोल बिद्या थोड़ी जानता था और हमारे बिचार में आता है कि वह इन नगरों की चढ़ाई से कनोज की चढ़ाई के पहले

ठहराने में भल गया है परंतु इससे उसके शुद्ध वर्णन करने में कुछ संदेह नही होता॥

महमूद ने हिंदुस्थान के नगरें का चमत्कार देखने से प्रसन्न होकर अपनी राजधानी में जाकर उसको भी आभूषित करने का उद्योग किया॥ उसने संगमरमर और दालचने के पत्थर की मस्जिद बनवाने की आज्ञा दी उसकी सुंदरता देखकर हरेक मनुष्य अचंभा करने लगा॥ उसके पास उसने एक चमत्कारी वस्तुओं का स्थान और पुस्तकालय बनवाया जिसमें नाना प्रकार की भाषाओं की पुस्तकें थीं॥ हिंदुओं के स्थान देखने से वह महमारी की बिद्या में बड़ा कुशल हुआ उसने चाहा अपनी राजधानी को उन नगरें के समान बनावें जिनको उसने जय किया था॥ उसकी देखा देखी से कुलीनोंने घर बनवाने का प्रारंभ किया और हर एक इस लालसा में रहा कि मेरा सबसे चमत्कारी बने इस समय के थोड़े बरस पहले उस नगर में थोड़ेसे घर थे वे भी बुरे परंतु तिस पीछे एशिया के अत्यंत चमत्कारी नगरें की गिनती में आया और जो जो घर बनाने की बिद्या के चमत्कार हैं उन करके सुशोभित हुआ॥

हम महमूद के राज्य के कितनेही पिछले बरसें का वर्णन छोड़ देते हैं क्योंकि उनमें भी वह लड़ाई लड़ता रहा जैसे पहले करता था, उसी समय में एक बरस के बीच वह कालिंजर के राजा पर चढ़ा जिसने कनोज के भूपति को मारडाला था इस बात पर कि वह महमूद के आधीन होगया था; और अब हम उसकी पिछली और अत्यंत प्रसिद्ध चढ़ाई का बर्णन करते हैं॥ संबत् १०२४ ईसवी में महमूद तीस सहस्र सवार और बहुतसी स्वेच्छा से लड़नेवाली सेना गज़नी

से लेकर सोमनाथ पर चढ़ा जो गुजरात देश में देव के निकट है श्रोर एक महीने में मुलतान तक पऊंचा ॥ तिस पीछे उसने बीस सहस्र ऊंटों की सहायता से एक मरु भूमि को पार किया श्रोर मार्ग में. अजमेर को लूटा ॥ निदान वह सोमनाथ के निकट पऊंचा, जहां उसने एक गढ़ पहाड़ पर बना ऊश्रा देखा, उसके तीन श्रोर समुद्र था श्रोर गढ़ का कोट योद्धाश्रों से भरा ऊश्रा था ॥ जब महमूद निकट आपऊंचा तब उन्होंने यह ढंढोरा फिरवा दिया कि हमारे देवताने उन नास्तिकों का एकही बेर सत्यानास करने को श्रोर उन्होंने जो हिंदुश्रों को दुख दिया है उसका दंड देने को इस स्थानपर आकर्षण कर लिया ॥ अत्यंत बिश्वास करने योग्य बर्णन है कि यहां एक प्रकृति शिवलिंग स्थापन ऊश्रा, जैसे बऊतसे देशों में इस देवकी मूरत स्थापन ऊईं जब से इस देव की पूजा का प्रारंभ ऊश्रा ॥ जैसा हम अभी वर्णन कर चुके हैं कि एक महादेवकी मूर्त्ति उज्जैन में स्थापित भई जिसको महा काल कहते हैं ॥ सोमनाथ में स्वायंभू अर्थात् स्वयं उत्पन्न शिव को जानकर पूजते थे ॥ मुसलमानोंने देखा कि सोमनाथ का जय करना सहज नही गढ़रक्षकोंने बल पूर्बक रोक टोक रक्खी श्रोर आस पासके राजा अपनी २ सेना इकट्ठी करके सोमनाथ के नीचे अपने शत्रु से लड़े निदान महमूदने जय पाई ॥ जब सहायक राजाश्रों की सेना हार गईं श्रोर पांच सहस्र मनुष्य गढ़ में के मारेगये तब ब्राह्मणोंने श्रोर सहायता से निरास होकर नगर को रीता कर दिया श्रोर नावोंपर चढ़कर एक निकटवर्त्ती द्वीप में चले गये ॥ महमूद सोमनाथ में पैठा श्रोर मंदिर के पास पऊंच कर एक बड़ा दृढ़ स्थान देखा उसमें एक दालान था जिसमें छप्पन खंभ ऊंचे २ थे उसमें एक मूरत

सोलह फुट ऊंची थी जिसमें से छह फुट धरती में गड़ी ऊई थी ग्रैार उसके ऊपर तंबू छह खंभें पर खड़ा था जिनमें रत्न जड़े ऊए थे॥ उसने मूरत के फोड़ डाला ग्रैार उसके टुकड़ें के गज़नी में भेजने ग्रैार वहां जामत्र् मस्जिद के ग्रागे डाल देने की ग्राज्ञा दी इससे यह जाना जाय कि मुसलमानों के मतने जय प्राप्त की ग्रैार कुछ टुकड़े जो जय के चिन्ह थे मक्के ग्रैार मदीने में भेजने की ग्राज्ञा की॥ एक बात प्रसिद्ध है परंतु उस पर कुछ बिश्वास नही ग्रासकता कि जब मुहमूदने मूरत के तोड़ने की ग्राज्ञा की तब ब्राह्मणेंाने उसकी इस ग्राज्ञा के रोकने के लिये उसे बऊतसा द्रव्य देना किया परंतु महमूदने उनकी एक बात न मानी ग्रैार मूरत के फोड़ने की ग्राज्ञा की ग्रैार जाना गया कि जितना द्रव्य ब्राह्मणोंने देना किया था उससे भी ग्रधिक उस मूरत में से निकला॥

उस समय में सोमनाथ ग्रैार सब तीर्थों से ग्रधिक धनवान् ग्रैार प्रसिद्ध था॥ कहते हैं कि एक ग्रहण में वहां दे तीन लाख मनुष्य याची इकट्ठे होजाते थे॥ ग्रैार उस मंदिर के खरच के लिये दे सहस्र गांव थे, ग्रैार नित्य मूरत के स्नान गंगाजल से करवाते थे जो पांच सै कोस से ग्राता था॥ ग्रैार दे सहस्र ब्राह्मण उस मंदिर के पुजारी थे ग्रैार पांच सै नाचनेवाली वेस्या थीं, तीन सै कलावंत मंदर के थे ग्रैार तीन सै नाई याचियें का मुंडन करने के थे॥ मंदिर में केवल एकही दीया जला करता था उसकी ज्योत सब रत्नों पर लगती थी जो वहां जड़े थे ग्रैार उनकी प्रतिभा से सारे मंदिर में जगा जोत हो जाती थी॥ महमूदने वहां से इतना धन लिया कि उस समय में इतना द्रव्य किसी राज भंडार में भी न था॥ कहते हैं कि उसे इस स्थान की सुंदरता ग्रैार स्थिति

के फल ऐसे अच्छे दिखाई दिये कि जिनके कारण उसने उसे अपनी राजधानी बनाना ठहराया परंतु उसके सेनापतियों- ने उसे नाही की और कहा कि यह स्थान आपके पश्चिम देश की सीमा से अत्यंत दूर है जहां बड़ा भय रहता है॥ हिंदु- स्थान से चलने के पहले महमूद ने दाविश्लीम नाम पुरुष को सिंहासन पर बैठाया परंतु उस नाम की उत्पत्ति नही जानी गई कि वह कहां से निकला है॥ महमूद सिंधु के मार्ग से गज़नी को चला और सिंधु के बेहड़ में उसके कटक ने बहुत खेद पाया तिसके पांच बरस पीछे ईसवी संवत् १०३० में यह महा विजयी अपनी तरेसठ बरस की अवस्था में मरगया॥

किसी चढ़ाई करनेवालेने हिंदुस्थान पर इतना अन्याय नही किया था जितना महमूदने॥ उत्तर में हिंदुओं के संपूर्ण प्रबंध में अंतर आगया उसने अच्छे से अच्छे नगर लूटे और जला दिये और अच्छे से अच्छे देश उजड़ कर दिये बरन सहस्रों दरिद्री यहां के निवासियों को दूर और पराये देश में बंधुवे करके लेगया तोभी बग़दाद के अधिपतिने हिंदुओं पर उसकी जय होने के समाचार सुनके एक पत्र लिखा जिसमें उसने महमूद को मतं और देश का रक्षक ठहराया॥ उसने विद्या फैलाने में उद्योग किया तोभी अपने धन और पराक्रम के अनुसार नही॥ वह न बहुत लंबा था न ठिंगना था, उसके मुख पर माता के बहुत चिन्ह थे; उसका उद्योग बीरता सहित और दृढ़ पूर्वक था वह अति हिंसक और निर्दई था॥ परंतु उसमें ऐसे गुण इकट्ठे हुवे थे कि जिनसे बड़ा मनुष्य हो जाता है॥ वह निश्चय करके इस योग्य था कि समय पाकर एक राज्य स्थापन करे॥ महमूद को जो दोष लगाते हैं कि वह रुपये का लालच इस कारण नही करता था कि उससे बहुत

काम निकलते हैं बरन केवल सूम पने से रुपये का लालची था तो यह बात ठीक ही है। मरने से दे दिन पहले उसने अपने सब चांदी सोने और रत्न के जो कि हिंदुस्थान में से लूट लेगया था अपने साम्हने फैलाने की आज्ञा दी कि मैं उनके देखनेसे अपनी आंखों को सुखदूं महमूद थोड़ीसी बिरियां तक उनके ताका किया और फिर आंसू भर लाया परंतु उसमें से दीन और किसी के कुछ न दिया यद्यपि वह भली भांति जानता था कि मैं इसका भोग बहुत ही थोड़े काल तक करूंगा॥ दूसरे दिन उसने सब सेना पैदल और सवार और हाथियों को अपने साम्हने लाने के लिये आज्ञा की और उनके छोड़ जाने के बिचार से फिर आंखों में आंसू भरलाया उन सूबों के छोड़ कर जो कि सिंधु नदी के पूर्वतटपर हैं महमूदने उन देशों में जिनका उसने बहुधा सत्यानाश किया था कहीं दृढ़ राज्य न किया; परंतु अपनी राजधानी से जो कि सिंधुनदी के पार पहाड़ों में है कभी कभी इस रीत से हिंदुस्थानपर चढ़ाई करता था जैसे कि उकाब घोंसले से अपनी अपनी अहेर पर झपटता है और वहां से बड़े बड़े मोल की वस्तु लूट ले जाता था॥ उसका बाप सुबुकतगीं ग़ज़नीन काबुल बलख और थोड़ासा कंदहार का राज्य उसके लिये छोड़ मरा था॥ परंतु उसने ऐसी शीघ्रता से दूर दूर तक जय पाई थी कि केवल तीस बरस के बीच उसने फारस के खाल से लेकर आराल समुद्र तक और गुरदिसतान के पहाड़ों से लेकर सतलज तक सब देश अपने आधीन करलिये यद्यपि इतना बड़ा राज्य था परंतु उसका अभिमान इस बात पर बड़ा था कि प्रतिमाओं का तोड़नेवाला कहाता हूं॥

॥ आठवां अध्याय ॥

मसऊदने राज्य पाया—सेलजूक की चढ़ाइयां—तुग़रलबेग—शिवजी की पूजा दक्खन में फैली—श्री चन्द्रदेवने कनोज में राठोरों का राज्य स्थापन किया—मादूद सिंहासन पर बैठा—हिंदुओं ने अपनी सामर्थ फिर प्राप्त की—इबराहीम और मसऊद का राज्य—ग़ोरी के कुनबे की वृद्धि—महमूद गज़नवी के कुनबे का लोप ॥

महमूद जौड़िया दो पुत्र छोड़ मरा दोनोंने राज्य लेना योग्य समझा ॥ महम्मद नाम बड़ा बेटा दयालु और प्रेमी था ॥ यद्यपि वह कोमल चित्त था और उसमें दृढ़ता न थी तोभी बाप उसही को चाहता था इसलिये महमूद ग़ज़नवी का बड़ा राज्य उसेही मिला यद्यपि यह बात प्रत्येक के विचार से विरुद्ध थी ॥ उसका भाई मसऊद पिता के समान पराक्रम और उद्योग रखता था ॥ जान पड़ता है कि महमूदने पहलेही जान लिया था कि मेरे मरे पीछे दोनो भाइयों में निश्चय करके झगड़ा होगा और उसके दूर करने की आस पर उसने मावरुलनहर का अधिकार महम्मद को दिया होगा जिसकी राजधानी जुरजान थी जो उसी देश में है जिसको गर्द के में हरकानिया कहते थे और जो कि क—

दक्खिन पूरब ओर को है और मसऊद को अपने राज्य के अत्यंत पश्चिम के विभाग में अधिकारी किया ॥ महम्मद के सिंहासन पर बैठतेही मसऊदने उसको लिख भेजा कि राज्य के लेने की मुझे कुछ इच्छा नही है परंतु केवल इतनीही बांच्छा है कि तीनो सूबे जो कि मैंने अपनी तरवार की सहायता से लिये थे मेरेही अधिकार में रहें और मेरा नाम भी खुतबे में पढ़ा जावे परंतु इस बात को महम्मदने अंगीकार न किया और उसका भाई जो कि सबों का प्रिय था, वह सेना लेकर ग़ज़नी की ओर चला और उससे थोड़ीसी दूर तकियाबाद पर एक बड़ी भारी लड़ाई हुई जिसमें मसऊद की जय हुई और अपने भाई की आंखें निकलवाईं ॥

जिस बरस में महमूद मरा उसी बरस में मसऊद सिंहासन पर बैठा परंतु जवानी में जो उसे आस थी सो पूरी न भई ॥ उसके समय में दिन दिन राज्य घटने लगा एक गड़रियों के तुर्कमान नाम कुल के लोग जो कि सलजूक नाम से प्रसिद्ध थे पश्चिम के सूबों पर जम बैठे और सदा चढ़ाई करने का समय तकते रहते थे और उन उद्योगी शत्रुओं की चढ़ाई जो कि सदा होती रहीं जब तक कि ग़ज़नी का थोड़ासा राज्य उनको न दिया गया ॥ हिंदुस्थानियों के लिये यह ऐसा अच्छा हुआ कि मसऊद को पूरब ओर की चढाइयों और लूट का कुछ ध्यान न रहा संवत् एक सहस्र तेतीस ईसवी में मसऊद हिंदुस्थान की ओर चला और कश्मीर को आधीन किया ॥ दूसरे बरस फिर वह सेलजूक नाम जाति को पश्चिम की ओर से हटाने में लगा और उन पर जयसेन को जो कि अपने हिंदुस्थानी कटक का सेनापति था भेजा ॥ इस बात से प्रगट है कि मुसलमान उस समय से भी हिंदुओं को सेना में भरती करते थे और

हिंदू सिंधुनदी पार होकर लड़ने में कुछ बुराई नही जानते थे ॥ ईसवी संवत् १०३६ में मसऊद ने हिंदुस्थान पर फिर चढाई करने का बिचार किया यद्यपि यह बात उसके अत्यंत बुद्धवान सभासदों के बिचार से बिपरीत थी ॥ उन्होंने कहा कि केवल सेलजूकियों के दूर करने के लिये संपूर्ण कटक चाहिये ॥ उसने हांसी के दृढ गढ़ का जो कि जमना से पश्चिम को तीस कोस पर है घेरा करके जीत लिया और वहां के मंदिरों को ढाकर संपूर्ण धन लेगया फिरते समय उसने अपने पुत्र को मुलतान का सूबेदार किया; जान पड़ता है कि यह मुलतान देश दृढ़ता पूर्वक गज़नी के राज्य में मिल गया ॥ मसऊद के पीछे उसके बैरी सेलजूकों की सामर्थ बहुत बढ़ी होगई थी और उसके सभासदों के कहने के अनुसार वे चैंटी से अजगर होगये थे ॥ मसऊद को बड़े जाड़े पाले में उनसे युद्ध करने के लिये मावरुलनहर में जाना पड़ा जहां कि उसने कई युद्ध किये पर निदान हारगया ॥ तुग़रलबेग नाम सेलजूकने गज़नी तक उसका पीछा किया और उस नगर को लेलिया और राजा का इस्तबल लूट लिया और थोड़ासा नगर भी बिगाड डाला ॥ उन चढ़ाइयों के रोकने के लिये मसऊदने सेजूलकों को अपने देश में रहने के लिये एक स्थान देना अंगीकार किया इस पर वे प्रसन्न होगये परंतु समय पाकर वे फिर चढ़ाई करने लगे मसऊदने अपने तईं देखा कि इनका सामना नही कर सकता इसलिये नई सेना भरती करने के हेतु हिंदुस्थान को चलने का बिचार किया ॥ उसने गढ़ों में से सब रुपया इकट्ठा करके ऊंटों पर लदवा कर लाहोर को गमन किया ॥ और संकट के समय में अपने भाई महम्मद को बुलाया जिसकी आंख नौ बरस पहले उसने फुडवा गेरी थी ॥

जब कि वह सिंधु नदी के तट पर पहुंचा तब उसी का कटक उसका भंडार लूटने लगा और उसके क्रोध से डरकर उसके भाई को राजा बनाया ॥ दोनो भाइयों का स्थान आप से आप पलट गया महम्मद बंदीगृह में से निकल सिंहासन पर बैठा और मसऊद को सिंहासन से उतार कर बंदीगृह में रक्खा और दस बरस राज्य करके ईसवी संवत् १०४० में वहीं मारा गया ॥

उस समय से शिव की पूजा दक्षिण तक फैलने लगी सोमनाथ के बिगडने से थोड़े से काल पहले सोलंकी कुलने गुजरात और खान देश को संपूर्ण रूप से जीत लिया था और उसी कुल के दूसरे कुनवे ने दक्खन में बहुतसा देश लिया था और उस कुल के बहुतसे राजाओं में से किसी राजा के समय में एक पुरोहितने जो कि शिव को मानता था अपने बहुत चेले किये और दक्खन से जैन के मत को बहुत सा दूर करके इस देवता के मान्नेवालों या कि लिंगातियों की पूजा फैलाई ॥ दक्षिण के राजाने इस नवीन पूजा के रोकने की इच्छा की और उसको शिव के पूजनेवालोंने क्रोधित होकर मारडाला ॥

हम पहले कह आये हैं कि कनोज का राजा बुद्धवानी जानकर महम्मद गज़नवी के आधीन होगया था इस कारण आस पास के राजा उसके बैरी होगये और उन्होंने उस पर चढ़ाई करके उसको मारडाला क्योंकि उसको उन्होंने हिंदू रहने के योग्य न जाना था ॥ वह कोरह के कुलका अंतका राजा था उसी राजा के मारने का पलटा लेने के लिये महमूद ने हिंदुस्थान पर नोवीं बेर चढाई की थी अब कनोज का सिंहासन राजा बिन था इसलिये उसके चाहनेवालों के लिये समय आगया निदान श्रीचंद देवने दक्षिण में से जैन मत दूर करने के छह बरस पहले केवल अपनेही पराक्रम से कनोज के

राज्य को जय किया था॥ वह कहता था कि मैं सूरजबंशमें ऊं और इस बात के बझतसे प्रमाण हैं कि उसी राजा के समय से कनोज के सिंहासन पर राठोर बैठते थे और• इससे पहले उन्होंने कनोज का देश भी नही लिया था और उस समय में सोलंकी कुल के एक घरानेने वारंगोल का राज्य स्थापित किया जो दक्षिण में है और उस राज्यने मुसलमानो के इतिहास में बड़ा नाम पाया॥

अब हम फिर मुसलमानो का इतिहास कहा चाहते हैं मसऊद का बेटा मादूद जो कि बल्ख का सूबेदार था अपने बाप के मारडालने के समाचार पाते ही गज़नी की ओर चला जहां कि लोगोंने उसको सिंहासन पर बैठादिया फिर सिंहासन पर बैठतेही वह महमूद अंधे के बेटों से एक लड़ाई लड़ा जिस में वह जयवंत भया अब केवल उसका एक ही शत्रु अर्थात् उसका भाई रहा जो कि अपनी तरवार की सहायता से सिंहासन पर बैठा चाहता था॥ उन दोनो भाइयों में एक युद्ध ऊआ जिस में मादूद की जय ऊई॥ उसका भाई थोड़े दिनों पीछे शयनस्थल म मरा ऊआ पाया॥ इन घर के झगड़ों से और पश्चिम में तुर्कमानो के पराक्रमी होने से हिंदुओं को फिर साहस ऊआ मुसलमान इतिहासवेत्ता कहता है कि लोमड़ी की भांति वे पहले अपने भिटों से पांव बाहर न निकाल सकते थे परंतु अब सिंह बन गये॥ दिल्ली के राजाने बझतसी सेना इकट्ठी की और थनेसर और हांसी नगर फिर लेलिये और नगर कोट भी चार महीने तक घिरा रहा तिस पीछे हाथ आया, मंदिर फिर बनाये और मूरतें जो मुसलमांनो से फोड़ी गई थीं उनके स्थान में और नवीन मूरतें स्थापित भई और ब्राह्मणों के उपायों से उनको फिर

वैसे ही मानने लगे हरेक ओर से सहस्रों मनुष्य पूजा के लिये इकट्ठे हुये राजाओंने भेटैं रक्खीं और मंदिरों में फिर उतना ही द्रव्य इकट्ठा हो गया जितना मुसलमानो की लूट से पहले था॥ उस समय से उनका मन बढ़ गया उन्होंने लाहोर पर चढ़ाई करके घेर लिया जो हिंदुस्थान में मुसलमानों की राजधानी थी वह सात महीने तक घिरा रहा परंतु निदान घिरेहुओने निकल कर बड़े पराक्रम से हिंदुओं को हटा दिया॥ जाना जाता है कि वे देश जो कि हिंदुओंने फिर लेलिये थे मादूद के समय तक उन्ही के आधीन रहे मादूद का राज्य नो वरस तक रहा ईसवी संवत् १०४९ में पूरा हुआ॥

मादूद के पीछे नो बरस में लगातार चार राजा गज़नी के सिंहासन पर बैठे जिनके नाम लिखने कुछ आवश्यक नही॥ ईसवी संवत् १०५८ में इबराहीम नाम बादशाह सिंहासनपर बैठा कहते हैं कि वह बहुत नेमी और विद्यावान था और अपने धर्म पर बहुत चलता था उसने कुरान को अपने हाथ से कई बेर लिखा और सुंदरलिप की उन नमूनो को जो कि राजा की अपेक्षा लेखक को वडा नाम है मक्कह और मदीनेके पुस्तकालय में रखवाया॥ सेलजूक तुर्कमान जो कि उसके घराने के बड़े शत्रु थे फिर चढ़ाई करने लगे और उसने वे सब देश जो कि तुर्कमानोने जय किये थे उन्हें इस बचन पर दे दिये कि आगे तुम और हाथ न बढ़ाना॥ उन्होंने इस बात को मान लिया और उस पर दृढ़ रहे॥ उन पश्चिम के बैरियों से छुटकारा पाकर उसने पूरब में हिंदुओं के उद्योग रोकने के लिये सेना सजाई॥ कहते हैं कि वह हिंदुस्थान में इतनी दूर तक चला आया जितना उसका कोई पूर्वजन

आया था और एक लाख से अधिक हिंदुओं को बंदुवे करके गज़नी में लेगया उसका राज्य चालीस बरस तक रहा और ईसवी संवत् १०९८ में हो चुका॥

इबराहीम के पीछे उसका मासूद नाम बेटा बादशाह ज्ञआ जो दयावान और सुशील था उसके सोलह बरस के राज्य में न कोई घर का झगड़ा उठा न किसीने बाहर से चढ़ाई की वह अपने पुत्र को गद्दी पर छोड़ गया वह राज्य पातेही अपने भाइयों को बंदी गृह में भेजने लगा परंतु बहराम अपने मामा संजर सेलजूक तुर्कमान के पास भाग गया और उससे सहायता मांगी इस बात को उसके मामाने झट अंगीकार किया॥ तुर्कमानो के एक कटक ने गज़नी में आकर आरसलेन को निकाल दिया॥ परंतु आरसलेन फिर आकर लड़ा और अपना सिंहासन लेलिया फिर निदान तीन बरस राज्य करके मारा गया॥ अब बहराम बिना झगड़े राज्य का स्वामी ज्ञआ उसने बड़ी बुद्धवानी सुशीलता से राज्य किया और विद्यावानों को बज्जत मानता था उसका राज्य ३५ बरस तक रहा और अपने राज्य के अंत में पराक्रमी कुनबे गोर के साथ लड़ने में लगा उसने थोड़ेसे काल पीछे गज़नी के राज कुल को सत्यानाश करके सब राज्य लेलिया कुतुबुद्दीन महम्मदगोरीने बहराम की बेटी से बिवाह कर लिया था परंतु वह किसी अपराध से सब लोगों के साम्हने मारा गया था॥ उसका भाई सैफुद्दीन उसका पलटा लेनेके लिये चला और बहराम को निकाल आप गज़नी के सिंहा- सन पर हो बैठा परंतु वह नगरनिवासियों को प्रसन्न न रख सका क्योंकि व अपने पूर्व राजा का होना चाहते थे बहरामने वह दशा देख झट पट गज़नी में आ अन्याई को

पकड़ लिया और उसका मुंह काला करवा बैल पर चढ़वा नगर के चारों ओर फिरवा सिर कटवाया ॥ उसका भाई अलाउद्दीन यह समाचार सुनकर पलटा लेने के लिये एक बड़ी सेना लेकर ग़ज़नी पर आया और बड़ी घोर लड़ाई हुई जिसमें बहराम संपूर्ण रूप से हारा और हिंदुस्थान में भाग आया यहां उस पर बड़ी आपत्ति रही और ईसवी संवत् ११५२ में मरगया ॥

इस रीति से ग़ज़नी का कुल सिंधुनदी के पश्चिम के देशों में से दूर हुआ बहराम का बेटा खुसरो लाहौर में आया उसने अवस होकर लाहौर को अपनी राजधानी किया ॥ महमूद के देशों में से उसकी संतान के पास केवल हिंदुस्थान के देश रहे ॥ अलाउद्दीन ग़ज़नी में घुसा और उसने उस बड़े नगर को सात दिन तक लूटा और बड़े बड़े सुशील और विद्यावानों को फ़ीरोज़ नाम पहाड़ में लेगया जहां गोरियों का घर था और वहां उन्हें मार डाला ॥ इस भूपालने ऐसी कटा और लूट की कि जिसके कारण उसको लोग संसार दाहक कहते थे ॥ खुसरो सात बरस राज्य करके लाहौर में मरगया उसका बेटा खुसरो मलिक नाम सिंहासन पर बैठा और उसने हिंदुस्थान के सब उन देशों को जो एक बेर भी किसी समय में उसके घराने के आधीन रहे थे उन सब को जीत लिया परंतु ग़ज़नीवालों का समय अब बिगाड़ का था ॥ अलाउद्दीन को उसके भाई महम्मद गोरीने सहायता दी, इसलिये कि वह ग़ज़नी ही के देश पर संतोष न करके हिंदुस्थान के देश भी अपने राज्य में मिलाया चाहता था ॥ ईसवी संवत ११८० में वह लाहौर को चला परंतु उसको जय न करसका और उसको खुसरो मलिक से मिलाप करना पड़ा ॥

कहते हैं चार बरस पीछे मिलाप जाता रहा और महम्मद ने दूसरी बेर लाहोर को घेरा परंतु वह फिर निरास हुआ॥ थोड़े दिनों पीछे फिर उसने तीसरी बेर चढ़ाई की और केवल छल और अधर्म से जय पाई॥ उसने खुसरो के पास मिलाप करने का समाचार भेजा और उसने सच्चापन दिखाने के लिये खुसरो के बेटे को उसके पास भेज दिया जिसको पहली बेर मिलाप के समय ओल में लिया था॥ वह वृद्ध बादशाह अपने बेटे से मिलने को नगर के बाहिर चला महम्मद गोरी बीस सहस्र सवार लेकर शीघ्र घूम के आया एकाएकी खुसरो के डेरे को घेर लिया तब खुसरोने बचने का कोई उपाय न देख अपने शत्रु से बिनती की महम्मदने लाहोर को अपने आधीन करने के लिये कहा जिसको खुसरोने रीता करदिया और इस रीति से ईसवी संवत् ११८७ में गज़नीवालों से गज़नी का राज्य गोरी के कुल के हाथ लगा॥

॥ नवां अध्याय ॥

बनारस के राजा—कनोज के राठोड़—दिल्ली के तवार—घर के झगड़े—जयचंद का अभिमान—पृथ्वी राज जो दिल्ली का सब से पिछला राजा था—भोजराज—महम्मद गोरी का कुल—उसकी चढ़ाई हिंदुस्थान पर—तैगर की लड़ाई—कनोज और गुजरात की जीत—महम्मद का मरण ॥

महम्मद गोरी जिसने हिंदुस्थान में मुसलमानो का दूसरा राज कुल स्थापन किया और जो कि महमूद ग़ज़नवी से भी अधिक हिंदुओं का बड़ा शत्रु था उसके इतिहास और चढ़ाइयां वर्णन करने से पहले यह आवश्यक है कि हम हिंदुओं के ग़ज़नवी राज्य के पिछले समय का संक्षेप लिखते हैं॥

उन बातों से जाना जाता है जो कि देखत में सत्य हैं कि महम्मद गोरी के समय से कुछेक काल पहले कनोज के राजा उन देशों के राजाओं में जहां कि गंगा बहती है सबसे अधिक पराक्रमी न थे॥ लिखा है कि बनारस के राजा जिनके कुल की पदवी पाल थी तिनका बड़ा अधिकार था और अचंभा है कि वे बुध के मत को मानते थे ईसवी संबत् १०७० में भूपाल के पीछे जो कि उस कुल का पहला राजा था राजा पाल गद्दी पर बैठा जिसके बेटे सूरजपालने उड़ीसे तक

का देश लेलिया यह कुल महम्मद गौरी की चढ़ाई के थोड़ेसे काल पहले समाप्त होचुका था और आस पास के राजाओं ने उसके देश पर अधिकार कर लिया था. लक्ष्मन सिंह बंगाले के पिछले राजा ने बहार और गोड़ को लेलिया और दूसरे भाग को कनोज के राजा ने अपने आधीन कर लिया और उसने अपना कोई बैरी न देख गौरी से ऐसा एक व्यवहार रक्खा कि जिसके कारण उसका राज्य और कुल डूबगया॥ पूर्व लिख आये हैं कि कोरा के कुल में कनोज का सब से पिछला राजा मुसलमानो के आधीन होजाने के कारण मारा गया और चन्द्रदेवने कनोज के राज्य को लेकर वहां राठोरोंके कुल को स्थापन किया॥ उनके समय से लेकर जयचंद के समय तक जो कि उस कुल का सबसे पिछला राजा था उस कुल के पांच राजासिंहासन पर बैठे॥

और हमने यह भी वर्णनकिया है कि तवार के कुलने ईसवी ९०० वें शतक में दिल्ली के राज्यको लेलिया जो कि चिरकाल से बिना खामी पड़ा था और उन्हों की इतनी सामर्थ बढ़ गई थी कि उत्तर के सब राजाओं में उनको बड़ा समझते थे अनंगपाल उस कुल के अंत के राजा का नाना था उसके दो लड़कियां थीं जिनमें से एक तो सोमेश्वर चोहान को व्याही गई जो कि आधीन अजमेर का राजा था और दूसरी कनोज के राठोर राजा को दीगई थी जब कि कनोजवाले दिल्ली के राजाओं को दुखी करते थे तब चोहान सदा उनकी सहायता करते थे और जोकि सोमेश्वरने दिल्ली के राजा की अति प्यारी बेटीसे बिबाह किया था इसलिये उसके बेटे पृथ्वीराज को उसकेनाना ने अपने पीछे दिल्ली के सिंहासनपर बैठाने के लिये गोदलिया॥ आठ बरस की अवस्था में उसे गद्दीपर बैठाया॥

कनोज के राजाने जो कि बनारस के राजकुल के नष्ट होने से बनगया था दिल्ली के सिंहासन पर छोटे से लड़के के बैठने का निषेध किया और उस बात में गुजरात के राजाने उसकी सहायता की जो कि दिल्ली और कनोज के झगड़ों में बहुधा कनोज का साथी रहता था इस कारण यह जान पड़ता है कि चोहान दिल्लीवालों की ओर रहते थे और यह कनोजवालों की ॥ इस भांति जिस समय महम्मद गोरी उत्तर हिंदुस्थान में से हिंदुओं का नाम मिटाया चाहता था तब हिंदू राजाओंने अपने स्वाधीन होने और मतकी रक्षा करने के लिये मेल मिलाप रखना चाहिये था पर वे आपस में छुपा छुपा बैर रखते थे या कि प्रत्यक्ष में बैर भाव करते थे ॥ उत्तर हिंदुस्थान में दो भाग थे एक में गुजरात और कनोज और दूसरे में दिल्ली और अजमेर के चोहान और चीतोड़ के राजा थे ॥ उन झगड़ों के कारण से वे अपने शत्रु के आधीन हुवे और इस भांति हिंदुस्थान में सदा से यह चाल चली आती है कि हिंदू एक दूसरे पर भरोसा नहीं रखते हैं इसलिये अपने सबके भले में एक नहीं होजाते हैं ॥ वही अविश्वासपना अब तक हिंदुस्थान में चला आता है जिसके कारण मुसलमानोने सहज ही उनको जय करलिया ॥ और हम बहुत थोड़ा संदेह करते हैं कि केवल इसी कारण से अन्य देश के राजा का साम्हना करना या पराये राज्य के उलटा देने की सामर्थ्य नहीं हिंदुस्थान में है ॥ परस्पर का मिलाप स्वाधीन होने का कारण है ॥ और जब तक कि यह बात हिंदुस्थानियों में नहीं हो तब तक हिंदुस्थानी निश्चय करके स्वाधीन न होंगे ॥

कोई कोई इतिहासवेत्ता कहते हैं कि कनोज के सब से पिछले राजा जयचंद्रने दिल्ली के राजा से शत्रुभाव करके

हिंदुस्थान पर चढ़ाई करवाने के लिये महम्मद गोरी को बुलाया था परंतु यह ऐसे छल का कर्म्म है कि बिना कोई प्रमाण हम उसका बिश्वास नही कर सकते॥ परंतु इस में कुछ संदेह नही है कि जयचंद हिंदुस्थान के सब राजाओं में मुख्य था और अपनी इस बड़ाई के लिये उसने अश्वमेध यज्ञ करने की इच्छा की॥ यह पुरानी कहनावत है कि जिस राजाने इस यज्ञ करने का बिचार किया चाहै वह पूरा ऊवा या न ऊआ पर उसपर निश्चय कोई न कोई आपत्ति आई॥

अवध के दशरथ राजाने अश्वमेध यज्ञ किया था तिसके थोड़ेही दिनो पीछे उसे अपने पुत्र रामचन्द्र का बियोग ऊआ जिन को बन बास ऊआ था और वहां उनकी स्त्री हरी गई॥ युधिष्ठिरने भी यही यज्ञ किया था, उसे अपना राज्य छोड़ना पड़ा और देश निकाला पाकर बरसों तक हिंदुस्थान के देशों देशों में भ्रमता फिरा॥ और जयचंद जो इस यज्ञ करने-वालों में सबसे पिछला राजा था उसने शीघ्र अपना जीव और राज्य खोया॥

जब कि कनोज के राजाने अश्वमेध यज्ञ के समाचार सर्वत्र भेजे तब उत्तर हिंदुस्थान के सब राजा उसकी सेवा में उपस्थित ऊवे परंतु पृथ्वीराजने जो कि दिल्ली में चोहान के कुल का केवल एक ही राजा ऊआ था अपने बैरी की बड़ाई न मानी और चीतोड़ के राजाने उसकी बड़ी सहायता की॥ इस महा यज्ञ में आवश्यक है कि कैसाही छोटे से छोटा काम होय राजाओं के हाथ से किया जाता है॥ और जो कि दिल्ली के राजाने अपने आने का निषेध किया इसलिये उसके स्थान में एक उसकी सुवर्ण की मूरत बनाके पौरिये की भांति द्वारपर खड़ी की॥ इस महा यज्ञ में कनोज के राजाने

अपने देश के प्राचीन व्यवहार के अनुसार स्वयंबर किया कि उसकी बेटी उन राजाओं में किसी को बरै॥ कहते हैं कि पृथ्वीराज जो कि बड़ा बीर था और चढ़ाइयों के करने में बड़ा प्रसन्न होता था कनोज के राजद्वार में पहुंचा और कनोज के राजा की बेटी को मोहित करके जीत लेगया परंतु यह बात निश्चय नही होती है कि पृथ्वीराज उस ही समय में या उसके पीछे कनोज में गया था॥ ऐसी ऐसी अज्ञान और आलस्पन की बातों में हिंदुस्थान के राजा अपना समय लगाया करते थे ऐसे समय में महम्मद गोरी आन पहुंचा जो हिंदुस्थानियों से पलटा लेने की इच्छा करता था॥

इस मुसलमानो की चढ़ाई के वर्णन करने से पहले भोज-राज के कुछेक गुण कहा चाहते हैं जो कि निश्चय करके इस पिछले काल में बड़ा हिंदू राजा था वह परमरा के कुल का था जो कि अब तक उज्जैन और धार नगर में राज करते हैं परंतु पहली सी धूम धाम उनके राज्य की अब नही रही है॥ उस छोटे देश के सिंधु नाम राजा के कोई पुत्र न था उसने मंझा नाम पेड़ों के झुंड में एक छोटासा लड़का पड़ा हुआ पाया जिस को उसने गोद लिया और मंझा नाम रक्खा॥ सिंधुने एक अलग स्थान में मंझा से कहा कि मैंने तुम्हें परमरा के कुल में गोद लिया था परंतु मंझा की रानीने यह बात सुनी जो वहां छिपी हुई बैठी थी और मंझाने इस बात के प्रगट न होने देने के लिये उसका सिर काट डाला और कहा कि जो बात छह कान तक पहुंची सो छिपी नही रहती तिस पीछे सिंधु के एक पुत्र जन्मा उसका नाम सिंधुला रक्खा॥ थोड़े दिनो पीछे मंझा को सिंहासन पर बैठाया और सिंधु अपने पुत्र सिंधला को उसे सोंपआप दक्खन को चला गया

परंतु उस पशुने गुण पर कुछ ध्यान न करके उसकी आंखें निकलवा डालीं॥ भोज सिंधुला का बेटा था और ज्योतिषियों ने कहा था कि भोज राजा होगा॥ इस बात से मुंजा का चित्त बहुत जला॥ इसलिये उसने भोज के मारने की आज्ञा दी परंतु छिपा छिपी उसकी आज्ञा नही की गई॥ थोड़े दिनो पीछे इस अपराध से उसकी अत्यंत उदासी हुई; परंतु इस बात के सुनने से कि लड़का नहीं मारा गया अति आनंद हुआ॥ तब वह धारानगर का राज्य भोज को देकर बहुतसी सेना लेकर दक्खिन में इस आस पर चला गया कि वहां अपने लिये एक नवीन राज्यस्थापन करूं; परंतु वहां वह हार गया और महा कष्ट में पड़ा॥ भोज ने अपने बड़ों के सिंहासन पर बैठ के गुण ग्राहकता बड़ी की इससे उसका राज्य बड़ा प्रसिद्ध हुआ॥ उसकी राज सभा में विद्यावान लोग इकट्ठे होने लगे जो बिक्रमादित्य की सभामें आ भरे थे॥ कोई कोई ऐसा अनुमान करते हैं और संभव भी है कि वह बिक्रम के कुल में था॥ प्रत्येक दिशा से विद्यावान लोग उसके यहां आये और उसने राजाओं की भांति उनका बड़ा आदर मान किया॥ कवियों ने उसके राज्य को प्रसिद्ध किया है और उसका स्मरण अब तक चला आता है भोज का नाम सब पंडितों में ऐसा फैल रहा है जैसा रामचंद और युधिष्टर का है यद्यपि वे यह बात नही जानते हैं कि सात सौ बरस हुये वह था और गुण ग्राहक पने में सब से पिछला नामी राजा था॥

अब हम महम्मद गोरी के कुल का विषय लिखते हैं; जिसने हिंदुस्थान में मुसलमानों का दूसरा कुल स्थापम किया॥ उसने उत्तर हिंदुस्थान के सब राजाओं का राज्य धूल में मिला दिया॥ मुसलमान कवि और इतिहासवेत्ताओं ने इसको

प्रशंसा की रीत से प्राचीन और प्रतिष्ठित ठहराया है परंतु अधिक सच्ची पोथियों से जाना जाता है कि निस्संदेह एज़्ज़ुद्दीनहुसेन ने उस कुल की प्रतिष्ठा बढ़ाई ॥ वह ग़ज़नी के मासूद नाम राजा का नाकर हुआ और उसका ऐसा प्यारा होगया कि मासूदने उसको गौर का अधिपति बनाया और अपनी बेटी से उसका बिवाह कर दिया उसके सात पुत्र हुए बहुधा सात तारे कहलाते थे उनमें से दो लड़के ऐसे हुवे जिन्होंने नवीन राज्य बनाये । उनमें से कुतबुद्दीन नाम लड़का ग़ज़नी के बहराम नाम राजा की लड़की से बिवाह करके राजा कहलाया और फ़ीरोज़खोहस्थान को अपना राजधानी किया ॥ बहरामने उसको मरवा डाला इसी कारण से गौर और ग़ज़नी के कुल में झगड़ा उठा और ग़ज़नीवालों के नष्ट होने तक वह झगड़ा बना रहा ॥ ऐज़ुद्दीन कुतबुद्दीन का बाप था जिसने कि ग़ज़नी और गौर के सिंहासन पर बैठ कर अपने छोटे भाई महमूद को अपना सेनापति बनाया और यह बात निस्संदेह है कि उस हल के समय में महमूद यद्यपि प्रत्येक चढ़ाइयों में जयवंत होता रहा तो भी अपने निर्बल भाई के मरण काल तक अर्थात् उनतीस बरस उसके आधीन रहा ॥

महम्मद गोरीने खुसरो मलिक नाम ग़ज़नी के अंत के राजा को बंदुवा करके ईसवी संबत् ११९१ में हिंदुस्थान पर चढ़ने का उद्योग किया ॥ और हिंदुस्थानियों के लिये यह ऐसी एक आपत्ति की आंधी चली जो हिंदुस्थानी राजाओं को उनके सिंहासन से उड़ा लेगई और एक मुसलमानों की जात जब दिल्ली के सिंहासन पर बैठी तब उसका अंत भया ॥ पढ़नेवालों को स्मरण होगा कि महम्मद ग़ज़नवी के सिंहासन पर बैठनेवा-

लों ने जो कि बहुधा निर्बल और निरुद्योगी थे केवल मुलतान और लाहोर के सूबों पर संतोष किया था जिनको कि उस कुल के आदि पुरुषने हिंदुओं से छीन लिये थे, यद्यपि वे गंगा के तीरवर्ती देशों पर कभी कभी चढ़ाई करते थे परंतु उन्होंने कोई और हिंदुस्थानी सूबे अपने देश में नहीं मिला लिये थे। हिंदू राजा अपना राज्य करते थे और जब कभी मुसलमानी कटक आता तब नाल बंदी देते और जों जों ग़ज़नी के राजाओं की सामर्थ घटती जाती थी तों तों उनका पराक्रम बढ़ता जाता था॥ जिस समय कि ग़ज़नी का कुल ग़ोरियों की चढ़ाई से नष्ट हुआ तब हिंदुस्थान में मुसलमानों की चढ़ाई करने का कुछ चिन्ह न रहा था परंतु सिंधु नदी पर के सूबे जिनको कि हिंदू कभी फेर नहीं लेसके हिंदुओं के आधीन थे, मुसलमानो ने जो जो हान की थीं, वे फिर सुधर गईं थीं, देश फिर बस गये थे द्रव्य और मूरतें पहले की सी फिर हिंदुस्थान में भर गई थीं॥ और हिंदू राजा अपनी पूर्व चाल के अनुसार आपस के बैर में लगे परंतु महमूद से भी अधिक एक और नवीन शत्रु होने को उपस्थित था और जो उत्तर में सब हिंदू राज कुलों को नष्ट करा चाहता था॥

दिल्ली के अज्ञान और बीर पृथ्वीराज राजा ने कनोज के कुल से निरर्थक लड़ाई कर करके अपनी सामर्थ घटा गेरी थी, उसके एकसौ आठ सेनापति थे उन में से चोंसठ इन व्यर्थ झगड़ों में मारेगये थे; परंतु तोभी जबकि ईसवी संबत् ११९१ में महमूद पहली चढ़ाई में बितंडा नगर को लेकर अपने पुरखाओं के देश को फिर चला, तब पृथ्वीराजने सब अपने और अपने सहायकों का कटक इकट्ठा किया जो गिनती में दो एक लाख घोड़ों का होगा और उस नगर को फिर

लेने के लिये चला॥ महम्मद उसके आने के समाचार पाकर अपनी सेना लेकर नगर के बचाने को चला और एक स्थान पर जिसे तिरोरी कहते हैं जो थनेसर से सात कोस था दोनो ओर के कटक की मुट भेड़ होकर लड़ाई होने लगी, महम्मद ने बड़त बीरता दिखाई परंतु उसकी सेना भागने लगी निदान वह अपनी रणभूमि छोड़ भाग गया॥ जब वह अपने गोर देश में पऊंचा उसने सब सेनापतियों को जिनके कदराहट से उसने लड़ाई हारी थी दंड किया हिंदू बितंडा को गये और यह नगर एक बरस के घेरे के पीछे हाथ आया॥

कहते हैं कि इस जय के पीछे पृथ्वीराज ने अपने राज्य का ध्यान छोड़ दिया और आप आलसी बन गया और रणवास में रहने लगा परंतु उसके शत्रु महम्मद की चाल इससे बड़त बिपरीत थी वह इस हार से बड़त सोच में रहता था और अपने मित्रों से कहता था कि न कभी मैं आराम से सोता ऊं और जागते में कभी बिना चिंता में न रहता ऊं और मेरा बिचार यह है इन देवपूजकोंने जो मेरी प्रतिष्ठा बिगाड़ी है उसे फिर प्राप्त करूं और नही तो इसी बिचार में अपना त्याग करूं॥ निदान महम्मदने अपनी सेना को इकट्ठा करके और किसी अपने शिक्षक का कहना मानके उन कलंकी सेनापतियों को फिर अपने अपने काम पर स्थापित किया और तातार देश की जंगली जातियों के बीस सहस्र सवार चुनेऊवे लेकर चला और सिंधुनदी के पार ऊआ॥ पहले उसने पृथ्वी राज को दूत के हाथ कहला भेजा कि तुम मुसलमानो का मत अंगीकार करो नही तो तुमको इसके बड़े फल मिलेंगे॥ पृथ्वीराज ने इसका उत्तर बड़े अभिमान से दिया परंतु वह

अनेक प्रकार के आनंद में ऐसा मगन रहता था कि जो उसका साला चीतोड़ का राजा परिश्रम न करता तो संभव कि वह मुसलमानी सेना से जो कि हिंदुस्थान पर टीड़ीदल सा चला आता था घिर जाता॥ समारसी चितोड़वाला जो कि उस समय के बीरों में सब से अधिक गिना जाता था दिल्ली की सहायता के लिये तीन सहस्र चुनी ऊई सेना लेकर आया जिसमें से बऊत थोड़े फिरके गये होंगे॥ गुजरात और कनोज के राजा जो उत्तर में बऊत पराक्रमी थे वे उस लड़ाई का तमाशा देखने में रहे और उन्होंने दिल्ली के राजा को जिससे कि वे अत्यंत बैर रखते थे इस झगड़े का दुख सहने के लिये छोड़ दिया और उस बात पर कुछ ध्यान न दिया कि दिल्ली के जय होजाने के पीछे शत्रु के और हमारे बीच में कोई रोक टोक बाकी न रहैगी यद्यपि कनोज और गुजरात के राजा उन सबों के कष्ट को दूर करने में संगी न ऊवे तो भी दिल्ली के झंड़े के नीचे ड़ेढसौ सेनापतियों से कमती इकट्ठे न भये थे और कहते हैं कि पैदल सेना छोड़ कर कम से कम तीन लाख घोड़े और तीन सहस्र हाथी थे॥ उन सब राजाओंने छेड़ छाड़ की रीत से महम्मद को कहला भेजा कि तुझ को आज्ञा है कि तू उलटा फिरजा तेरी कोई रोक टोक न करैगा महम्मद ने इसके उत्तर में कहला भेजा कि मैं केवल अपने भाई का नायब ऊं और तुम्हारे कहने के अनुसार अपने भाई की आज्ञा मागूंगा हिंदुओं ने उस उत्तर से निस्संदेह होकर संपूर्ण रात आनंद में खोई॥ कागर नदी दोनो सेनाओं के बीच में थी महम्मद उनके असावधान होने के कारण अवसर पाकर रात को सेना सहित पार उतर आया और प्रात कालही जब तक कि शत्रुओं की खुमारी भी नहीं

मिटी थी कि लड़ाई करने लगा, वह हिंदुओं के सामने एक एक टोली लाकर लड़ाता गया और दिन ढले जब वे थक गये थे आप अपनी शेष सेना लेकर जो कि अब तक नही लड़ी थी उनके सनमुख हुआ और सबको हराता गया, हिंदू हारते ही भागे, चीतोड़ का राजा अपने राजपूतों को लेकर बड़ा लड़ा और मारा गया और दिल्ली का राजा शत्रु के हाथ पकड़ा गया और मुसलमानो ने हिंदुओं के कटक में से बड़ा द्रव्य लिया उस हार के समाचार सुनने से बड़े बड़े नगर मुसलमानो के आधीन हुवे महम्मद आपही चीतोड़ में गया और उसे जय किया और वहां के सहस्रों निवासियों की कटा की और फिर वह दिल्ली को घेरने के लिये चला परंतु वहां का राजा जो कि पहले राजा का बेटा था और उसके मरने के पीछे सिंहासन पर बैठा था उसके आधीन हुआ, इस कारण से उसने उस नगर को लूट से बचादिया और महम्मद अपने प्यारे संगी कुतुबुद्दीन को जो कि पहले उसका दासथा बहुतसी सेना देकर और दिल्ली के निकट छोड़कर आप ग़ज़नी को चला और मारग में प्रत्येक प्रसिद्ध स्थान को लूटता गया ॥ कुतुबुद्दीन अपने स्वामी की भांति बहुत उद्योगी और बुद्धवान था उसने झट मेरठ को अपने आधीन करके तिस पीछे राजधानी को लेकर उसको निज राजधानी बनाई इस कारण से यह कहनावत चली आती है कि दिल्ली का राज्य एक दासने स्थापन किया था निदान इस भांति हिंदुओं का राज्य नष्ट होगया ॥

कनोज और गुजरात के राजा जलन के मारे अपने शत्रु दिल्ली के राजा का राज्य महम्मद के हाथ से बिगड़ता हुआ देख कर प्रसन्न होते रहे उनको भी शीघ्र महम्मद के कटकने

कष्ट दिया॥ महम्मद बहुत काल तक ग़ज़नी में न ठहरा बरन अपनी सेना में नवीन सिपाही भरती करके फिर सिंधुनदी से पार हुआ और कनौज़ के सबसे पिछले राजा जैचन्द्र पर चला चंदबाड़ और इटाये के बीच एक स्थानपर लड़ाई हुई जिस में कनोज का राजा हारा और कुतबुद्दीन के तीर से मारा गया॥ बहुतसे हिंदुओंकी कटा हुई, राजा सात सौ हाथी जो मुसल-मानो पर चढ़ा लाया था उनमें से नब्बे हाथी शत्रुओंके हाथ लगे जिनमें एक स्वेत हाथी था इससे जाना जाता है कि उस समय में कनोज के राजा भी बुध के मत में चलते थे॥ महम्मदने जीतते जीतते असनी के गढ़ को लेलिया जहां कि राजा का भंडार था॥ और बनारस में जाकर नगर को लूटा और एक सहस्र मंदरों को फुड़वाया॥ एक इतिहासवेत्ता लिखता है कि इस समय में मुसलमानो की सेना चीन की सीमा तक पहुंची थी परंतु इस बात का कुछ प्रमाण चाहिये॥ महम्मद गंगाजी के तीरपर के देशों मं से हिंदुओं की संपूर्ण सामर्थ खो कर और बड़ी भारी लूट लेकर अपनी राजधानी को गया जो सिंधुनदीके पार थी॥ उत्तर के सब पराक्रमी राज्यों में से केवल गुजरातवाले की राजधानी नरहवाला अकेली बचरही थी॥ दूसरे बरस कु-तबुद्दीन चढ़ा और उस देश को सब ओर से लूट खसोट कर अपने आधीन किया॥ इस रीत से केवल तीन बरस के थोड़ेसे काल के बीच उत्तर से हिंदुओं की सामर्थ संपूर्ण नष्ट होगई और उस दिन से आज तक उन्होने फिर कभी अपना राज्य न पाया॥ राजधानी दिल्ली के आधीन होनेके पीछे दो चार गढ़ जो शेष रहे थे वे एक एक करके उद्योगी कुतबुद्दीन के हाथ लगते गये॥

चंद कविने एक पुस्तक छंद में लिखी है जो बिस्तार में महा-भारत के समान है और उसके पढने से महाभारत की भांति

चित्त में उत्साह उपजता है और वह महाभारत के समान प्रसिद्ध है॥ चंदने हिंदू राजाओं के मरने का विषय बहुत अच्छी भांत लिखा है॥ यह कबि राजपूतों की बीरता और कुल का बरणन करता है॥ और राजपूतों की ३६ छत्तीस जात अबतक अपने बड़ों की बीरता मन लगाकर उस कविता में पढते हैं॥ हिमाचल की ओर से जब बड़े बड़े कटक आते थे तब उनके बड़े इनके साथ युद्ध में अति बीरता दिखाते थे॥

महम्मद अपने भाई का मरना सुनते ही ग़ज़नी को गया, और वहां रीत के अनुसार मुकट पहरा परंतु बहुत काल तक राज न किया॥ वह अपना राज्य पश्चिम की ओर फैलाया चाहता था, परंतु वहां वह हारा और उसे भागना पड़ा॥ ककर नाम बीर और जंगली जाति के लोग जो नीलाब नदी के तट पर बसते थे बहुत काल से मुसलमानो पर ऐसा अन्याय करते थे कि हिंदुस्थान और पेशावर के आवा गमन में अंतर आगया था॥ महम्मदने अपनी पहली बीरता के अनुसार उन पर चढ़ाई की और उसने केवल उनको अपने आधीन ही नहीं किया परंतु उन्हें मुसलमान भी कर डाला॥ और जब महम्मद ग़ज़नी को फिरा आता था तब उसके तंबू में सोते हुए उसी जाति के दो मनुष्योंने उसे मार डाला महम्मदने बत्तीस बरस राज्य किया जिसमें उनतीस बरस अपने भाई की युवराजपदवी में रहा और तीन बरस तक आप राजा रहा॥ उसने अपने मरे पीछे जो भंडार छोड़ा सो अन गिनत था; और इस बात के बिचारने से उसके भंडार का मोल जान पड़ेगा कि पांच मन केवल हीरे उसके यहां थे उस भंडार को उसने हिंदुस्थान पर चढ़ाई करके इकट्ठा किया था और हरएक बेर हिंदुस्थान से जितना द्रव्य उसके हाथ लग सका लूट लेगया॥

॥ दसवां अध्याय ॥

चंगेज़खां की जय—कुतबुद्दीन—दिल्ली का महाराज—बख़्तियारख़िलजीने बंगाले को जीता—आसाम में उसकी चढ़ाई—उसकी हार और मृत्यु—अलतमश—सुलतानारेज़िया—नाज़िरुद्दीन—बालिन—कैकुबाद—गोरी के कुल का अंत ॥

महम्मद गोरी के राज्य के अंत में चंगेजखांने मुग़लों के राज्य को स्थापन किया ॥ कास्पिअन सागर, चीन, और साइबीरिया के बीच जो विस्तृत पहाड़ हैं वहां प्राचीन काल में हन और तुरक बसा करते थे, इस समय में पशुपालकों की कई सूर बीर जाति वहां रहती थीं ॥ जिनका स्थान स्थिर न था जबकि ये लोग वहां इतने बढ़ गये कि उन्हें वहां भक्षण भी न मिल सका तब वे तलवार हाथ में ले लेकर दख्न की ओर गये और वहां के लोगों को निकाल उनका स्थान आप ले लिया ॥ उस देश पर इस भांति की कई चढ़ाईयां हुई थीं तिस पीछे चंगेज़खांने उस देश पर चढ़ाई की और उसने यूरप के बीचों बीच से लेकर एशिया की पूरब सीमा तक देशों का सत्यानाश कर दिया ॥ चंगेज़खां का बाप उन पशुपालकों की तेरह जात पर जिनमें के चालीसेक सहस्र सूर बीर मनुष्य थे अधिकार रखता था, चालीस बरस की अवस्था में चंगेज़खां ने आस पास की जातों पर अपना अधिकार स्थापन करके

और दूर तक अपना राज्य फैलाने का बिचार किया॥ एक बड़ी सभा ऊई जिसमें मुग़ल इकट्ठे ऊये थे चंगेज़खां एक नम दे पर बैठा था जिसे बऊत काल से एक प्रसाद समझते थे, उस समय सबों ने उसे बड़ा खां या मुग़लों और तातारियों का राजाधिराज कहा॥ उसने किसी भांति की सिच्चा न पाई थी और लिखने पढ़ने में तो अज्ञान ही था, और उसकी जाति के बऊत से लोग ऐसे ही अज्ञान थे॥ और उसने केवल अपने ज्ञान और बड़ी वुद्धिवानी से और अपने बीर संगियों की सहायता से संसार में बड़ी उलट पुलट करदी थी॥

अपने देश की जंगली जातों को आधीन करके वह उत्तर के सब पशुपालकों की जातों का अधिपति ऊआ, इस जाति में लाखों पशुपालक और सिपाही थे जो कि अपने स्वामी की भांति उद्योगी थे और दच्चिण के नम्र और धनाढ्य लोगों पर चढ़ाई करने को असंतोषी हो रहे थे उन्होंने चीन पर बड़ी धूम धाम से चढ़ाई की थी और चीन की दीवाल से अगाड़ी बढ़ कर नब्बे नगर लेलिये और वहां के बादशाह को पीली-नदी के दच्चिण में जाना और उत्तर का देश चंगेज़खां के लिये छोड़ देना पड़ा॥ पश्चिम की ओर चंगेज़खां का देश सुल-तान ख़ारज़म की सीमा तक था, जो कि फारस से सिंधुनदी तक का देश अपने आधीन रखता था इस बादशाह से जो कि उस समय के सब मुसलमानों में बलवान् भी था मुग़ल मिलाप रक्खा चाहता था परंतु महम्मद ने उसके तीन दूतों को मरवा गेरा था और इस अन्याय का वह सहन नहीं कर सकता था॥ सात लाख सेना लेकर चंगेज़खां बड़ी आंधी की भांति ख़ारअज़म् के राज्य पर चला और चार लाख सेना ने उसका सामना किया पहली लड़ाई में एक लाख साठ

सहस्र ख़ारअज़मी मारे गये और महम्मद ने मैदान में मुग़ल का सामना करना असंभव जान कर निज सिपाहियों को उन नगरों में बांट दिया जो कि उसकी जान में चंगेज़ख़ां से अच्छी भांति सामना कर सकते थे परंतु दस बडे बड़े नगर विजयी के हाथ लगे और ख़ार अज़मका बादशाह मैदान और गढ़ों में हार गया तब इकेला कास्पिअन समुद्र के एक निर्मनुष्य द्वीप में जाकर मर रहा॥ इस समुंद्र से लेकर सिंधुनदी तक जो कि एक सहस्र मील से अधिक दूर होगा सब देशों का मुग़लों ने सत्यानाश किया और जो हानि ऊई सो पांचसौ बरस तक भी पूरी न होसकी॥ महम्मद ख़ार-अज़मी का बेटा बीर जलालुद्दीन प्रत्येक स्थान में लड़ा और कई बेर उनकी वृद्धि उसने रोकी, पर उन्हें संपूर्ण रूप से रोक देना उसकी सामर्थ से बाहिर था, और उनके सनमुख से हटते हटते वह सिंधुनदी के तट तक पऊंचा और उस नदी में उसने कई अपने संगियों सहित नदी पार करने को घोड़े डाले इस आस पर कि कदाचित् हिंदुस्थान में कहीं मुझे शरण मिले परंतु इस बात से वह निरास ऊआ॥ चंगेज़-खां की सेना लूट लेकर अपने जन्म देश में आनंद करने की इच्छा करती थी; और उनके अधिपति ने उलटे फिरने का और उन नगरों को जिनका सत्यानाश किया था फिर बसाने का बचन किया और अपनी सेना को जेऊन और सेऊन नदियों के पार लेगया वहां वह अपने दो सेनापतियों से मिला जिनको उसने ईरान के पश्चिम के भाग को जय करने के लिये भेजा था और उन्होंने केवल पूरी जय ही न पाई थी बरन कास्पिअन समुद्र के तीर ही तीर जय करते चले गये और ऐसी चढ़ाई जब तक कभी न ऊई थी और न

जबसे कभी किसी ने उस चढ़ाई के करने का उद्योग किया है चंगेज़खां अपने जनम देश को गया और अपने बेटों को चीन की जय करने के लिये अंत समै कह कर ईसवी संवत् १२२७ में मर गया ॥ हमने इस पराक्रमी बादशाह के युद्ध का बर्णन इसलिये किया है कि यद्यपि उसने हिंदुस्थान पर न चढ़ाई की थी तो भी उसने सिंधुनदी के पश्चिम के देशों की दशा बिगाड़ गेरी थी जहां कि मुग़लों ने उस समय से ऐसा अधिकार पाया जिससे हिंदुस्थान के प्रबंध में बक़त अंतर आगया उसकी संतान की अद्भुत जीतों का बिषय हिंदुस्थान की कथा से कुछ प्रसंग नहीं रखता है बरन सब कथाओं से मिलता है इसलिये केवल इतना ही कहना बक़त है कि वे हिंदुस्थान के आस पास सदा लगे रहते थे और अवसर पाकर चढ़ाई करते थे परंतु उसके ठीक २९९ बरस पीछे मुग़लों ने सुलतान बाबर की आधीनी में हिंदुस्थान के राज्य पर अधिकार किया ॥

महम्मद गोरी के कोई लड़का न था उसने अपने दासों में से बड़े बुद्धवानों को सुशिक्षित किया और उनकी बुद्धिवानी के अनुसार उनको अच्छे २ अधिकार दिये सब में एक नामी कुतबुद्दीन ईबक था जिसने पहलेही पहल हिंदुस्थान में मुसलमानी राज्य स्थापन किया वह महम्मद के संग हिंदुस्थान में उस समय आया था जबकि उसने सिंधुनदी के पार उतर कर चढ़ाई की थी जैसा कि हमने बर्णन किया है और महम्मद अपनी राजधानी को फिरा तब उसने उसकी बीरता और बुद्धिवानी के पारितोषिक में उसको दिल्ली के निकट की सेना का अधिपति किया ॥ थोड़े ही दिनो पीछे दिल्ली उसके हाथ लगी और उसकी राजधानी ऊई ॥ उसने अपने स्वामी की इच्छा पर हिंदुओं की स्वाधीनता दूर करने के लिये इस

भांति परिश्रम किया कि हिंदुओं की सामर्थ महम्मद की बीरता पूर्वक चढ़ाइयों की अपेक्षा इसकी दृढ़ और लगातार चढ़ाइयों से अधिक घट गई॥ यद्यपि वह बड़ा पराक्रमी था और एक जयवंत सेना उसके आधीन थी और अपने बादशाह की दृष्टि से बहुत दूर था फिर भी उसकी आधीनताई में पक्का रहा परंतु यह बात निस्संदेह है कि वह स्वाधीन होने का अच्छा अवसर ताकता था॥

हिंदुस्थान में जो मुसलमानो का राज्य प्राचीन राजधानी में स्थापन हुआ, इस कारण से मुसलमानो को और भी जय करने का उत्साह हुआ॥ कुतबुद्दीनने जो कि इन बातों के पूरे करने को चाहता था उत्तर में हिंदुस्थान के राजाओं को जय करते ही सेना सहित बख़तयार खिलजी को बहार के जय करने के लिये भेजा॥ कुतबुद्दीनने बख़तियार को मोल लिया था, यद्यपि वह सुरूपवान् न था तो भी अपने स्वामी की सेवा में बुद्धवानी दिखाने के कारण उसका काम बढ़ता गया॥ ईसवी संबत् ११९९ में वह सेना लेकर बहार को गया और उसकी राजधानी को लूट कर सब देश को अपने आधीन किया और दो बरस पीछे लूट लेकर अपने स्वामी के पास दिल्ली में आया॥ इस जय की प्रतिष्टा के प्राप्त करने से लोग उसके शत्रु हो गये और कुतबुद्दीन का चित्त उससे हटा देने के उपाय में लगे॥ एक समय सभा में बहार के जय होने की बात चली तब जलनेवाले सभा के लोगोंने कहा कि जयवंत की बीरता की परीक्षा एक हाथी के संग लड़ने से अच्छी भांति हो जायगी॥ कुतबुद्दीनने इस बात को मान लिया क्योंकि वह पहलेही से अपने सेनापति पर जलता था॥ एक मस्त हाथी को मंगवा कर इस बीर पर हूला उसने हाथी की झपट

को फुर्तीं से बचा कर उसकी सूंड पर अत्यंत पराक्रम से एक ऐसा वार किया कि वह चिंघार कर भागा इस युद्ध को देख के बख़तियार के शत्रु घबराये और इस कारण से कुतबुद्दीनने उसकी अधिक प्रतिष्टा की और बहार देश का अधिकार फिर उसको सोंपा और बंगाले के जय करने की आज्ञा दी॥

बहुत काल से बंगाला बैद्यों के कुल के अधिकार में था, इस कुलवालों ने एक नवीन संबत् स्थापन किया जो उनके बिगड़ने से पीछे भी कई सौ बरस तक चलता रहा निदान अकबर ने इस संबत् को मिटा दिया उस समय में बंगाले का लछमनसेन राजा था जो अवस्था में ८० असी बरस का था॥ उसके जन्मलेने से पहले उसका बाप मरगया और हिंदुस्थानी इतिहासवेत्ता कहते हैं कि ज्योतिषियों के कहने से उसके जन्म होने में ढील लगाने के लिये ऐसे उपाय किये कि जिनसे उसकी मा मर गई॥ वह जन्म लेतेही सिंहासन पर बैठा और यद्यपि उसका राज्य बिस्तार के कारण प्रसिद्ध है परंतु उसकी छपा, उदारता, और न्याय के कारण और भी प्रसिद्ध हुआ॥ वह बहुधा नदिया में रहा करता था परंतु जाना जाता है कि बनारस के राजकुल का नाश होने से उसने उत्तर में अपना राज्य फैलाया और प्राचीन नगर गोड़ या लखनोटी में भी अपना बास किया॥

बख़तियार के मन का बिचार नदिया के राजद्वार से छुपा न रह सका॥ कहते हैं कि ब्राह्मणोंने राजा के निकट जाकर उससे यह बात कही कि आप की पुरानी पुस्तकों में कहा है कि एक समय ऐसा होगा कि बंगाले को तुरक अपने आधीन कर- लेंगे और उनको निश्चय हुआ कि वह समय अब आन पहुंचा है इसी लिये उन्होंने सेना के लिये न कहा बरन किसी दूर

ओर गुप्त स्थान में चलाजाने के लिये शिक्षा दी निर्बल ओर हद्धि बादशाहने इस बात को न माना परंतु सब प्रधान २ लोगोंने अपने अपने कुनबे ओर चीज बस्तु को उड़ीसे में भेज दिया ॥

कदाचित् हिंदुस्थान के इतिहास में बंगाले के जय करने के भिन्न कोई ऐसी बात न लिखी होगी जो कि बंगालियों को ऐसी लज्जा का कर्म होय॥ हम अभी कह चुके हैं कि दिल्ली के राजाने अपनी बड़ी सूरबीर सेना लेकर शत्रु का सामना किया ओर जब उसके सिपाहियों के मरने से रणभूमि भर गई तब अपनी स्वाधीनता ओर राज्य को अपने हाथ से छोड़ा॥ कनोज का राजा अपने स्वाधीन रहने के लिये बीरता दिखाकर मारा गया॥ चीतोड़ ओर गुजरात के राजाओंने बड़े परिश्रम से बीरता पूर्वक बिन युद्ध किये अपनी स्वाधीनता न छोड़ी परंतु बंगाला आप ही आप आधीन हो गया यद्यपि बख़्तियार दो बरस तक बंगाले की सीमा पर मंडलाता रहा परंतु उस से युद्ध करने के लिये उसने कुछ तैयारी न की वह नदिया तक निस्संदेह निज सेना लेकर चला आया ओर अपनी सेना को थोड़ीसी दूर छोड़ कर आप नगर में केवल सतरह सिपाही लेकर घुसा ओर बादशाह के संगियों को कटा करने लगा बादशाह उस समय भोजन कर रहा था प्रजा की हाय हाय सुनकर चोंका ओर यह सुनकर कि शत्रु आन पहुंचा एक गुप्त द्वार के मार्ग से निकला ओर एक छोटी सी नोका पर चढ़कर जब तक कि वह उड़ीसे में जगन्नाथ तक न पहुंचा तब तक कहीं न ठहरा ओर इस भांति बंगाले में से हिंदुओं का स्वाधीन राज्य नष्ट हुआ॥

बख़्तियारने नदिया में प्रवेश करके अपने सिपाहियों को लूट करने की आज्ञा दी ओर फिर तुरंत गोड़ देश को चला

जहां कि उसका राज्य सहज ही स्थापन ज़ुआ और वैसी ही वहां उसने हानि की॥ हिंदुओंके मंदिर फुड़वा गेरे और उनके मसाले से मुसलमानो की मस्जिद मद्रसे और सरायें बनाईं॥ एक बरस के बीच सब देश जीत लिये और उस दिन से पलासी की लड़ाई तक मुसलमानो की सामर्थ बनी रही, बंगाले के हिंदुओंने साड़े पांनसै बरस से अपनी स्वाधीनता प्राप्त करने के लिये कुछ भी उद्योग नही किया॥ बख्तियारने बंगाले को जय कर तिब्बत और बूतान में अपनी सेना लेजाने का उद्योग किया परंतु उसने जान लिया कि उन बीर पहाड़ियों के जय करने में जो कि हिमालय की घाटियों में रहते थे और मैदान के नम्र निवासियों के जय करने में बड़ा अंतर है, जो जो उस चढ़ाई के लिये उसने किया वह उस युद्ध के योग्य न था॥ वह दस सहस्रसवार लेकर उन पहाड़ियोंपर चढ़ चला जो कि हिंदुस्थान तातार और चीन के बीच हैं॥ ऐसा जाना जाता है कि जिस मनुष्य को उसने मुसलमान कर लिया था वह उसे मगध के पहाड़ों पर से उतार के ब्रह्मपुत्र नद तक लिवा लेगया जो आसाम में बहता है यद्यपि यह नदी बोगमती कहलाती है परंतु उसका फाट गंगाजी से तिगुना है और समुद्र में मिलजाती है इसलिये यह नदी ब्रह्मपुत्र के भिन्न कोई और नही निश्चय हो सकती॥ दस दिन तोड़ी उसी नदी के तीर ही तोर सेना चली गई निदान एक पत्थर के पुल पर पज़ंचे जो जिसमें बाईस दर थे और उसके पार उतरे और पंद्रह दिन तक बड़ी कठिन घाटियों में चलते गये निदान वह तिब्बत के एक बड़े मंडल में पज़ंचे और थोड़े से काल पीछे एक ऐसे नगर में गये जहां बड़ा दृढ़ दुर्ग था, वहां के लोगों ने बीरता पूर्वक इन से बड़ी लड़ाई की

उनके शस्त्र बांस के थे जो कि कच्चे रेशम से बंधे हुवे थे॥ मुसलमान दिन भर अच्छी भांति लड़के केवल दो चार बंदुवे लेकर अपने डेरों को फिरे बंदुओंके कहने से उनको जान पड़ा कि यहां से साढ़े सात कोस पर एक बड़ा दृढ़ नगर है जिसको कर्म पत्तन कहते हैं उस में ब्राह्मण और बूतानी बसते हैं उनका राजा एक ईसाई मत का है और बीर तातारियों की सेना उसके यहां नौकर है और एक सहस्र वा पंद्रह सौ टांगन नित बजार में बिक जाते हैं इस समाचार के सुन्ने से बखतियार को चिंता हुई और उसने वहां से तुरंत उलटे फिरने की इच्छा की और वहां के निवासियों ने सब दाने और चारे में आग लगादी और अनेक भांति से उस मार्ग में बाधा की निदान बड़ी कठनाई से वह फिर उसी पुल तक पहुंचा परंतु उसे निश्चय हुआ कि जो सेना हम मार्ग खुला रखने के लिये पीछे छोड़ गये थे उसको आसाम के बादशाह ने अपने आधीन कर लिया और पुल के दो दरों को तोड़ गेरा आसामवालोंने मुसलमानो को घेर लिया उन्होंने अपने बचाव के लिये पांवों पांवों नदी उतर जाने को मार्ग ढूंढा॥ नदी में झुंड के झुंड डूब गये और थोड़ेसे बच के दूसरे तीर पर पहुंचे और उनमें उनका सेनापति भी था जो कि शेष सेना लेकर बंगाले को फिरा जहां कि वह तीन बरस चिंता में रह कर मर गया॥ १२० बरस तक बंगाला दिल्ली के राज्य में मिला रहा॥ यद्यपि बहुत दूर होने के कारण से सूबेदार स्वाधीन होजाने की बहुधा इच्छा करते थे और कभी कभी उनकी यह इच्छा भी पूरी हो जाती थी॥

ईसवी सवत् १२०६ में महम्मद गोरी मरा और उसके कोई लड़का न था इसलिये सिंहासन पर बैठने का झगड़ा

हुआ ॥ कुतबुद्दीन दिल्ली का अधिपति संपूर्ण राज्य भर में पराक्रमी था परंतु महम्मद के भतीजे महमूदने गोर को अपने आधीन रक्खा दूसरे सूबेदार अलदोज़ ने काबुल और कंदहार को आधीन कर लिया और कुतबुद्दीनने हिंदुस्तान के राज्य का अधिकार चाहा अलदोज़ ने कुतबुद्दीन पर चढ़ाई की परंतु हार गया ॥ कुतबुद्दीन जय करता हुआ गज़नी को चला जहां कि वह सिंहासन पर बैठा परंतु वह शीघ्र आलसी होगया अलदोज़ को यह समाचार पहुंचे और उसने तुरंत उस पर चढ़ाई की और उसे फिर हिंदुस्तान में हटा दिया तब से कुतबुद्दीन ने उसी देश पर संतोष किया इसीलिये उसको जो हिंदुस्तान का पहला मुसलमान बादशाह विचार ते हैं सो ठीकही है ॥ उसने बड़ी सावधानी और बुद्धवानी से हिंदुस्तान में राज्य किया यद्यपि वह बहुत काल तक सिंहासन पर न बैठा क्योंकि वह अपने स्वामी से पांच बरस पीछे अर्थात् ईसवी संवत् १२१० में मर गया ॥ उसी काल में तकाश खारअज़्मी ने सिंधुनदी के पश्चिम में एक नवीन और दृढ़ राज्य स्थापन किया उसने संपूर्ण फ़ारस को जय कर लिया और थोड़े काल पीछे उसने अलदोज़ पर चढ़ाई करके गज़नी गोर और सिंधुनदी के पश्चिम के सब देशों को अपने राज्य में मिला लिया ॥

कुतबुद्दीन के मरने पीछे उसका आराम नाम पुत्र दिल्ली के सिंहासन पर बैठा परंतु वह अपने बड़े राज्य पै आज्ञा करने के लिये अत्यंत अयोग्य था, क्योंकि तब तक राज्य का प्रबंध अच्छी भांति न बंधा था ॥ एक बरस के बीच शमसुद्दीन अलतमशने उससे राज्य छीन लिया ॥ यह अलतमश एक बड़े कुल का था परंतु बालकपन में गुलामी में बिका था और कुतबु-

हीनने उसको मोल लिया था और उसको होनहार जान कर अपनी बेटी उससे व्याह दी थी और उसको बज़त बड़ा अधिकार दिया था॥ ईसवी संबत् १२११ में अलतमश सिंहासन पर बैठा और पचीस बरस राज्य किया॥ उसके राज्य के दसवें बरस में जलालुद्दीन हिंदुस्थान में आया यह खारअजम के बड़े राज्य का बादशाह था और मुग़लोंने वहां से इसको निकाल दिया था, और अलतमश की सेनाने उसका सामना किया॥ बज़धा अलतमश मुसलमान सूबेदारों को आधीन करने में लगा रहता था जो खाधीन होने का उद्योग रक्खा करते थे॥ सब सूबेदारों में बंगालेका सूबेदार बड़ा था उसने बज़त काल से कर नहीं दिया था अलतमश ने उस पर चढ़ाई की और गौड़ नाम राजधानी लेकर अपने नाम का सिक्का चलाया और अपने पुत्र को गौड़ का सूबेदार किया॥ अलतमशने उन हिंदुओं पर भी चढ़ाई की जो कि उस काल तक संपूर्ण रूप से आधीन नहीं ज़ये थे॥ एक बरस के घेरे के पीछे उसने गवालियर को जय किया तिस पीछे मालवे की ओर जाकर उज्जैन को लेलिया और महा काल के बड़े मंदिर को फोड़ गेरा जिस को बिक्रमाजीतने बारह सौ बरस पहले बनवाया था॥ और देवी सहित बिक्रमाजीत की मूरत को वह दिल्ली में लेआया और जामअमस्जिद के द्वार पर उनको फुड़वा गेरा॥

अलतमश के पीछे उसका पुत्र बादशाह ज़आ और वह तरुणावस्था के आनंद में लगगया छह महीने के पीछे वहां के प्रधान लोगोंने उसे सिंहासन से उतार अलतमश की रज़िया नाम राजकन्या को सिंहासन पर बैठाया यह स्त्री बज़त गुणवान् थी और अपने बाप के जीतेजी राज काज किया करती

थी पहले ही पहल उसने बड़े प्रबंध और सावधानी से राज्य किया परंतु एक हब्शी से बक्रत मेल रखती थी इसलिये उस पर ऐसी ऐसी कृपा करने लगी जो करने योग्य न थी इस कारण से वहां के प्रधान लोग उससे अप्रसन्न भये और उन्होंने उससे सिंहासन छीनने के लिये कटक इकट्ठा किया॥ वह पकड़ी गई और बिंतड़ा के गढ़ में बंदवा रही वहां के अधिपति को उसने मोहित करके उसके संग बिवाह करलिया और उसकी आज्ञा में सेना इकट्ठी करके राज्य लेने के निमित्त दो वार घोर युद्ध किये परंतु दोनो बेर हार गई और पिछली लड़ाई में अपने पति सहित शत्रुओं के हाथ में आई और साढ़े तीन बरस राज्य करके मारी गई॥ बहराम और मसऊदने जो कि उसके पीछे बादशाह ऋये छह बरस से अधिक राज्य न किया इस काल में कोई ऐसा काम न ऋआ कि जिस का लिखना आवश्यक होय॥ परंतु केवल यह है कि ईसवी संबत् १२४४ में मुग़लोने तिब्बत के मार्ग से बंगाले के पूर्व भाग के देशों पर चढ़ाई की॥ हम आगे लिख चुके हैं कि चंगेज़खां की संतानने संपूर्ण चीन को जय किया और बिचारते हैं कि चीन की सीमा पर के देशों से उन्होंने बंगाले पर चढ़ाई करने के लिये सेना भेजी थी इस चढ़ाई को कहते हैं कि चीनवालों की चाढ़ई है परंतु यह मुगलों की अंत की चढ़ाई का खेद था॥

संबत् १२४६ ईसवी में अलतमश का नज़ीरुद्दीन नाम बेटा दिल्ली के सिंहासन पर बैठा जो बंगाले का सूबेदार था॥ उसके बाप की रानीने उसको बक्रत खेद दिया था और बंदीगृह में रक्खा था जहां उसने लिखाई करके अपने दिन काटे थे इस कारण मध्यता नम्रता और बुद्धवानी उसमें भर गई थी॥ उसने राजगद्दीपर बैठते ही बिद्यावानो की बड़ी प्रतिष्टा

की ओर कवियोंने उसकी प्रशंसा लिखने में बहुत परिश्रम किया उसने अपने बहनोई बुलबुन अर्थात् बालीन को अपना बड़ा प्रधान किया इस मनुष्य से ओर कोई अच्छा नही। मिल सकता था क्योंकि बालीन अपने समय में सबसे बड़ा बिचार करता ओर बीर था॥ ओर उसके प्रबंध से संपूर्ण देश बसगया ओर उन हिंदू राजाओं के आधीन करने में अपना राज्य दृढ़ किया जो थोड़े बहुत भी स्वाधीन थे॥ परंतु बड़ा भय पश्चिम की ओर से था जहां कि मुगल ग़ज़नी काबुल कंदहार बलख़ ओर हिरात में अपना दृढ़ निवास किया था ओर इसीलिये सिंधुनदी की रक्षा करने का कार्य बहुत बड़ा गिना जाता था॥ ओर उस अधिकार पर प्रधान का भतीजा शेरखां नियत हुआ था वह सब प्रधान लोगों में मुख्य था उसने पंजाब ओर मुलतान को मुग़लों की चढ़ाइयों से बचाया ओर इसके भिन्न सवारों के कटक को युद्ध विद्या सिखा के उनकी सहायता से मुग़लों को ग़ज़नी से निकाल बाहर किया ओर थोड़े काल तक उसको दिल्ली के राज्य में मिला दिया॥

नज़रुद्दीन के राज्य के सातवें बरस में छल करके प्रधान पने के काम से बुलबुन को दूर करके अमादुद्दीन आप प्रधान हो गया ओर शेरखां से पश्चिम की सीमा का अधिकार लेलिया ओर बादशाह के मन को अपने बस में करके पहले प्रधान के मित्रों को उनके अधिकार से निकाल दिया निदान उसका प्रबंध लोगों को ऐसा बुरा लगा कि दस सूबेदारोंने बुलबुन को राज्य का प्रबंध बिगड़ने का समाचार कहला भेजा ओर फिर राज्य का अधिकार लेने के लिये प्रार्थना की ओर इस काम के लिये उन्होंने कटक इकट्ठा किया ओर बादशाह से लड़ाई की बादशाहने देखा कि मैं युद्ध के बीच इनका साम्हना नही कर

सकता इसलिये उनका कहना मानना पड़ा॥ वे यह कहते थे कि अन्याई प्रधान दूर हो जाय और बुलबुन फिर प्रधान होय क्योंकि उसके समय में राज्य के बीच बड़ा चमत्कार हुआ था बादशाहने ये सब बातें मान लीं अमादुद्दीन को दूर किया और बुलबुन को प्रधान बनाया॥

१२५८ ईसवी संवत् में हलाकू नाम चंगेज़खां के पोते का दूत दिल्ली के बादशाह के यहां आया॥ इस दूत को दिल्ली के राज्य का बड़ा प्रताप जताने के लिये बड़ी धूम धाम से उसकी अगोनी की॥ प्रधान आप पचास सहस्र सवार और दो सहस्र हाथी लेकर उसके लेनेको गया॥ दूत के आने के पीछे ऐक दिन बड़ी धूम धाम से राजसभा की तब दूत का बादशाह से मिलाप हुआ॥ इस बादशाह के चारों ओर वे पचीस बादशाह खड़े हुवे थे जिनको कि मुगलोंने अपने अपने स्थान से निकाल दिया था इस दूत के जाने से कुछ काम सिद्ध न हुआ॥ उस समय में मुगलोंने हिंदुस्थान पर चढ़ाई करने का कुछ उद्योग न किया इसका कारण तो यह था कि वे बादशाह के प्रताप में दब गये या पश्चिम की ओर का उनको भय था॥

ईसवी संवत् १२६६ में नसीरुद्दीन मरगया और उसके पीछे उसका मंत्री बुलबुन बादशाह हुआ उसका न्याय और बुद्धिवानी ऐसी प्रसिद्ध हुई कि ईरान और तातार के बादशाहोंने उस से मित्रता रक्खी परंतु तो भी इतिहासवेत्ता उसको अपने भतीजे शेरखां को किसी रीत से मरवा डालने का दोष लगाते हैं कि जिसका ऊपर वर्णन हो चुका है॥ वह अपने सेनापतियों का सुभाव अच्छी भांति जानता था॥ और उसने बड़े बड़े काम बुद्धिवान ही मनुष्यों को दिये परंतु उसने यह एक रीत

ठहराली थी कि कोई हिंदू किसी बड़े काम पर न होने पावै॥ इस बात से वह अपने राज्य का बड़ा नाम समझता था कि उन नरपतियोंने जिनको कि मुगलोंने सिंधुनदी के पश्चिम के राज्यों से निकाल दिया था उसके राज्य में शरण ली थी उसके समय में मुसलमान दिल्ली के राज्य को अत्यंत प्रतापवान् और शिष्ट समझते थे उस समय वहां बड़े बड़े प्रसिद्ध विद्यावान इकट्ठे हुये थे जो कि राज्य में से बहुतसा द्रव्य पाते थे अगले बादशाहों में किसी की सवारी ऐसी धूम धाम की न थी ऐसे बड़े बड़े स्थान किसी के राज्य में न बने थे वह व्यवस्था के अनुसार चलता था और आप बड़े नियम से रहता था॥ उसके ऐसे गुण थे कि जिनके कारण वह युवा अवस्था में प्रसन्न रहा॥

गुजरात मुसलमानों की आज्ञा से निकल गया था इसलिये वहां के प्रधान लोगोंने उसको गुजरात के जय करने के लिये उपदेश किया परंतु उसने बड़ी बुद्धवानी से उत्तर दिया कि जब तक पश्चिम और उत्तर में मुगलों का भय है तब तक यही बुद्धवानी है कि मैं केवल उन्ही देशों को थांभे रक्खूं जो कि मेरे अधिकार में हैं और न चाहिये कि और देशों के लेने के उद्योग में अपने देशों को भयभीत करूं॥ ईसवी संवत् १२७९ में तुग़रलखां जो कि बंगाले का अधिपति था फिरगया॥ यह बीर अधिपति उड़ीसे में जगनगर के राजा पर सेना चढ़ा लेगया और वहां से कई सौ हाथी और और बहुतसा धन लाया था और इस बात का कुछ भी समाचार बादशाह को न भेजा था॥ कुछेक काल पीछे बादशाह के मरने का उड़ता हुआ समाचार सुनके बंगाले का स्वाधीन बादशाह अपने को प्रसिद्ध किया॥ तब दिल्ली के बादशाहने लगातार उस पर दोबेर सेना भेजी पर दोनो बेर हार गई बादशाहने अपनी

प्रजा की ओर से छेड़ छाड़ कुछ देख आप युद्ध भूमि में जाने का उद्योग किया और भराभर चौमासे में बड़ी भारी सेना लेकर बंगाले पर चढ़ गया ॥ तुगरलखां अपने हाथी बस्तु और सेना लेकर बंगाले को रीता करके आप उड़ीसे को चला गया और बादशाही कटकने उसका अच्छी भांति पीछा किया यद्यपि सेना उड़ीसे के भीतर तक गई परंतु शत्रु का कहीं कुछ खोज न मिल सका परंतु मलिक मुकद्दर नाम बादशाह का सेनापति था एक दिन चालीस सवार साथ लिये चला जाता था दैवसंयोग से तुग़रल की छावनी देखी तब उसने उस पर चढ़ाई करने का बिचार किया इस बात को पहले इतिहास-वेत्ता असंभव और भयंकर जानते हैं इन थोड़ेसे लोगों सहित उसने शत्रु की सेना में घुस कर सेनापति के तंबू की ओर जाने का बिचार किया और निज मित्रों सहित साधारण सभा के डेरे में जाकर पुकारा कि बुलबुन बादशाह की जय हो और जिसने उसका साम्हना किया उसको काटा की तब तुग-रलखांने बिचारा कि संपूर्ण बादशाही कटक मुझपर चढ़ आया घोड़े पर चढ़ पकड़े जाने से पहले महा नदी उतरूं ऐसा बिचार के भागा मलिक मुकद्दरने उसका बहुत पीछा किया और जब वह नदी में पैरता था उसके एक तीर मारा तो तुग़रलखां पानी में गिर पड़ा और उसका पीछा करनेवाला तुरंत उसके मृतक शरीर को तीर पर लेआया और उसका सिर काट बादशाही कटक की ओर चला तुग़रलखां के न दिखाई देने से उसकी सेना को संदेह हुआ और यद्यपि उस-का किसीने पीछा नही किया था तो भी वे लोग बचने के लिये भागने लगे ॥ यद्यपि बुलबुनने बीर मलिक मुकद्दर को असावधानी का दोष लगाया परंतु उसकी बीरता का उसे

फल दिया बादशाहने इस जय की कुछ बड़ाई न जानी क्योंकि झगड़ालुओं के कुल में एक एक को कटा की यहां तक कि स्त्रियों और बालकों को भी मार डाला बरन उसने और भी अन्याय किया कि एक सौ भिखारियों को भी मरवाडाला जिन को तुगरलखां पालता था उसने बंगाले का अधिकार अपने बेटे कुराखां को दिया और तीन बरस के पीछे फिर दिल्ली को फिरा ॥

उसी काल में मुगलोंने फिर सिंधुनदी के तीर आकर मुलतान को अपने बस करलिया बादशाह के बेटे महम्मदने शीघ्र उन पर चढ़ाई की और उनको वहां से निकाल दिया दूसरे बरस तीमूरखां जो कि फारस के दक्षिण भाग का बादशाह था मुगलों की हार का पलटा लेने के लिये बड़ी भारी सेना लेकर चला एक बड़ा युद्ध हुआ जिस में महम्मद की जय हुई परंतु उसने अत्यंत दूर तक शत्रु का पीछा किया इसलिये वह शत्रु के दो सहस्र घोड़ों के झुंड में घिर गया जो बन में छिपे हुवे थे राजकुमार अत्यंत बीरता सहित लड़ा परंतु शत्रु की अधिक सेना होने के कारण निदान घायल हो गिर पड़ा बुलबुन उस समय में अस्सी बरस का होगा पुत्र का मरना सुनके जो कि कुलदीपक था बड़ा शोकाकुल होकर कुमला गया और ईसवी संवत् १२८६ में और अपने राज्य के २१ वें बरस में मर गया ॥

बुलबुनने मरने से थोड़ेसे काल पहले कुराखां नाम अपने पुत्र से युवराज पदवी लेकर अपने पोते कैखुसरो को दी जो कि प्रिय और स्वर्ग बासी महम्मद का बेटा था ॥ परंतु दिल्ली के प्रधान अधिपतिने बड़े बड़े अधिकारियों को इकट्ठा करके बुलबुन के किये हुवे से बिपरीत करने के लिये सब से कहा

ग्रैार क़राखां के बेटे कैकुबाद के। सिंहासनपर वैठाना ठहराया इसका कुछेक ते। यह कारण था कि कैखुसरो हठीला था ग्रैार दूसरा यह था कि क़राखां बंगाले में बड़ा कटक रखता था संभव कि अपनी संतान में से राज्य नष्ट होने के कारण शत्रु बन जाता॥ कैकुबाद बादशाह होते ही क्रीड़ा में पड़ गया ग्रैार अपने मंत्री निज़ामुद्दीन के। राज काज का भार दिया॥ उस दुष्ट का केवल यह आशय था कि अपने अज्ञान ग्रैार किशोर वय स्वामी से सबें का झगड़ा करवा के आप बादशाह हो-जाऊं॥ क़राखांने राजकाजियों से यह समाचार पाकर अपने बेटे के। इस भय के समाचार भेजे निदान चिट्ठी पत्री लिखने पढ़ने से कुछ फल न देख वह आप कटक लेकर दिल्ली के। गया ग्रैार उसके बेटेने मंत्री के कहने से सेना इकट्ठी की ग्रैार युद्ध की इच्छा करके पिता से मिलने के। चला गोगरानदी के तीर दोनो कटक की मुटभेड़ हुई वृद्ध पिताने निश्चय किया कि निस्संदेह युद्ध होगा तब एक स्नेह सूचक पत्र निज पुत्र के। लिखा ग्रैार चाहा कि युद्ध के पहले एक बेर मिलाप हो जाय यह बात बेटे के मन में आई ग्रैार उसने बाप से मिलने का बचन किया परंतु दुष्ट मंत्री के कहने से यह नियम किया कि पहली बेर के मिलने में हम के। स्वामी जानकर तुम आवो बाप पुत्र से मिलने का यह अबसर पा न चूका ग्रैार वह बात मान ली डेरे खड़े किये ग्रैार कैकुबाद सिंहासन पर बैठ कर अपने बाप के आने की बाट देखता रहा जब वह राजद्वार में आया तब उसे तीन बेर बादशाह का शिष्टाचार करने की आज्ञा मिली ग्रैार नक़ीब पुकारा कि क़राखां राजद्वार में आया है इस निंदा से प्रतिष्ठित क़राखां आंसू भर लाया ग्रैार उसका बेटा यह दशा देख न सका सिंहासन से उतरके अपने बाप

को गले लगाके मिला और ऐसी स्नेह की बातों के पीछे बाप को सिंहासन पर बैठाया और उसके साम्हने आप खड़ा रहा इस मिलाप के अंत में बाप बेटे में मित्रता हो गई॥ और बीस दिन के बीच" कई बेर बड़ी प्रसन्नता पूर्वक मिलाप हुआ॥ क़राखांने बिछड़ते समय पुत्र को अनेक शिक्षा कीं और बिचारा कि अब फिर पुत्र से मिलने की आस नही॥, और बिशेष करके पुत्र से कहा कि इस दुष्ट मंत्री को अलग करदेना॥ परंतु तरुण बादशाह दिल्ली में आते ही शीघ्र शिक्षाओं को भूल गया और फिर आप संसारी सुख में लगा इस कारण से वह थोडे दिन जिया और राजद्वार में कई धड़े हो गये जिन को कि आलस्यी और सुख भोगी बादशाह न मिला सका मुग़ल बादशाह की ओर हुवे और ख़िलजिओंने अपनी जात में से एक मनुष्य को बादशाह बनाने का उद्योग किया बादशाह को पक्षाघात होगया था इसलिये अपने राजमंदिर में पड़ा था निदान दोनो धड़ों की सेना लड़ने का बिचार करके आमने साम्हने हुईं ख़िलजिओंने मुग़लों को हटा दिया और जिस तंबू में बादशाह का छोटा सा बेटा था वहां लड़ करके पहुंचे और लड़के को निकाल लेगये॥ ख़िलजिओं के अधिपति जलालुद्दीन ने बादशाह के मारने के लिये कई मनुष्य राजमंदर में भेजे उन्होंने सोटे मार मार बादशाह का सिर फोड़ गेरा और उसके मृतक शरीर को खिड़की में से जमना में फेंक दिया इस कुकर्म के होने से गौरियों का कुल नष्ट हुआ जलालुद्दीन सिंहासन पर बैठा उसने मुसलमानी तीसरे कुल अर्थात् ख़िलजिओं के कुल को स्थापन किया॥

॥ ग्यारवां अध्याय ॥

जलालुद्दीनने खिलजिओं के कुल को स्थापन किया—अलाउद्दीनने दक्खन में चढ़ाई की—उसने अपने पिता को छिपके मारडाला—उसका सिंहासन पर बैठना॥ उसका राज संबंधी प्रबंध—गुजरात पर चढ़ाई—और चीतोड़ पर भी—काफूरने दक्षिण को जय किया—अलाउद्दीन की मृत्यु—उसकी चाल और कर्म—खिलजिओं के कुल का अंत—ग़ाज़ीबेग तुगरल सिंहासन पर बैठा ॥

मुसलमान गज़नी और गौर के मुसलमानो की हिंदुस्थान में स्थिति होने से जितनी हिंदुओं की स्वाधीनता नष्ट हुई उसी भांति तीसरे खिलजिओं के कुल की स्थित होने से पहले दोनो कुलों की स्वाधीनता नष्ट हुई ॥ महमूद गज़नवीने उत्तर के राजाओं को आधीन करके सिंधुनदी के तीर के देशों को आधीन करके निज राज्य में मिलाया था ॥ दोसै बरस पीछे महम्मदगौरीने नर्मदा के उत्तर के राज्यों को जड़ से उखाड़ के हिमालय पहाड़ से ले इसी नदी तक के देशों में अपना अधिकार स्थापन किया ॥ एक सौ बरस पीछे खिलजिओंने नर्बदा की सीमा से बढ़कर मुसलमानो का राज्य दक्षिण तक फैला

था॥ जलालुद्दीन जिसने जब खिलजिओं के कुल को स्थापन किया सिंहासन पर बैठा तब सत्तर बरस का था उसने दृढ़ होते ही अपने कटा किये गये स्वामी के छोटेसे बेटे को मरवा डाला परंतु इसके भिन्न उसने और किसी को कभी कटा न की॥ निश्चय करके उसकी यह बड़ी भारी भूल थी कि वह अनुचित् दया किया करता था इस कारण से बहुत अपराध होने लगे और बड़े बड़े मनुष्योंने आज्ञा माननी छोड़ दी॥ उसके बादशाह होते ही एक झगड़ा उठा जिसके मिटाने को उसका बेटा गया॥ झगड़ालुओं की हार हुई और पकड़े आये और उसने उनके अपराध क्षमा करके उन्हें छोड दिया॥ उसकी ऐसी नम्रता देख कर उसके सरदार उस से अप्रसन्न हुवे और उन्होंने शिक्षा की कि थोड़े से थोडा इतना दंड तो उनको चाहिये कि उनकी आंखें निकाल ली जांय परंतु बादशाहने उत्तर दिया कि मैं अब दृद्ध हुआ हूं मेरी इच्छा यह है थोडीसी मेरी शेष आयु में और अधिक मनुष्य मारण न करूं॥

जिस बात से कि खिलजिओं के कुल का नाम दक्खन के जय करने से हुआ ईसवी संबत् १२९३ में और थानेश्वर की लडाई से पूरे सौ बरस पीछे बादशाह के भतीजे अलाउद्दीनने चंदेरी के दक्खन के हिंदू राजाओं पर चढ़ाई करने के लिये अपने चचा की आज्ञा ली॥ और शीघ्र अपने करा नाम सूबें में जाकर उसने आठ सहस्र मनुष्य इकट्ठे करके बीरता सहित नर्बदा के पार हो देव गढ़ के हिंदू राजाओं पर चढ़ाई की जहां कि रामदेवने नगर से दो मील दूर जाकर उस से युद्ध किया परंतु वह आप ही हार गया नगर अलाउद्दीन के हाथ लगा उसने नगर को लुटवाया॥ अलाउद्दीन का प्रसिद्ध

किया कि मुसलमानो की सेना उस बड़े कटक का हरावल है जो पीछे पीछे दक्खन को आता है इस समाचार से दक्खन के और राजाओं की बीरता नष्ट हो गई और वे रामदेव की सहायता न करसके उसने अपने भले के लिये बहुतसा रुपया देना ठहराया अलाउद्दीनने यह बात अंगीकार की और जब चला जाने को उपस्थित था कि रामदेव के बेटेने जो कि सेना इकट्ठी करने में लगा हुआ था और उसकी सेना मुसलमानो से तिहाई थी मुसलमानो को आज्ञा दी कि तुम लूट का द्रव्य लाये हो सब छोड़ जाओ इस धमकी का फल लड़ाई का होना था अलाउद्दीन को बहुत घबरा गेरा जो उसका सेनापति मलिक नुसरत जो कि किले को घेर लेने के लिये नियत हुआ था बिना आज्ञा आप स्थान छोड़ उसकी सहायता को न आजाता तो संभव था कि अलाउद्दीन की हार हो जाती ॥ शत्रुने भूल से मलिक नुसरत के कटक को वह सेना जानी जो दिल्ली से आनेवाली थी घबरा गया और भागा ॥ इस लड़ाई को रामदेव के बेटेने अपने पिता के बिना कहे की थी मुसलमानोंने अधिक दण्ड लेने का छल किया हिंदू राजा को निज द्रव्य देना पड़ा जिसकी संख्या कुछ मन में न आ सकती थी ॥ अलाउद्दीनने उससे छह सौ मन मोती दो मन हीरे लाल पन्ने चुन्नी और इस भांति सोना चांदी लेगया परंतु उस समय का मन अबके मन से न्यून होगा यह लूट लेकर अलाउद्दीन अपने पहुंचने से पच्चीसवें दिन पीछे वहां से फिरा मालवे गंधवाने और खान देश जो फिरे हुये थे उनमें होकर निर्बिघ्न अपने घर पहुंचा ॥ उन चढ़ाइयों में जो मुसलमानो के इतिहास में लिखी हैं यह सबसे बड़ी बीरता की थी दक्षिण के राजाओं को अत्यंत खेद हुआ इस चढ़ाई से दक्षिण देशों के

ह्व्य निर्बलता के समाचार प्रगट हो गये और मुसलमानोंने जान लिया कि उनका जय करना बड़त सहज था ॥

बादशाह को शीघ्र समाचार पड़ंचे कि तुम्हारे भतीजेने देवगढ़ को जय कर लिया और वहां से इतना धन लाया कि दिल्ली के किसी बादशाह के निकट इतना धन न था ॥ हटु जलालुद्दीनने उस भंडार को अपना धन जाना परंतु उसके सावधान सभासदोंने शीघ्र जान लिया कि जयवंत बीरने अपना मरना ठान कर यह धन औरों के हेतु नही इकट्ठा किया था ॥ कईने तो शीघ्र उस पर चढ़ाई करने के लिये कहा परंतु जो वृद्धवान परिणाम दर्शी थे उन्होंने यह उपदेश किया कि जब तक अलाउद्दीन प्रत्यक्ष में आज्ञा माननी न छोड़दे तब तक चुप रहना उचित है अलाउद्दीनने जाना कि राजसभा में मेरे कई शत्रु थे इसलिये उसने अपनी इच्छा को प्रगट न किया और सब उपाय बादशाह के पकड़ने के लिये किये ॥ उसने अपने भाई को राजसभा में भेजा कि वह जाकर अपने चचा से छल करे और उसको यह बात समझा दे कि उस भंडार के पाने की केवल यही एक रीत है कि बादशाह आप जाकर करानगर में अपने भतीजे से मिलें ॥ रुपये के लालच से जिस को निर्बल मनुष्य अस्सी ८० बरस का कुछ काम में नही ला सकता वह करा की ओर सेना लेकर चला अलाउद्दीन उसकी अगोनी करने के लिये अपने नगर से बाहर निकला और अपने भाई अलमासवेग को जो कि छल करने में अति प्रसिद्ध था बादशाह को समझाने के लिये भेजा कि आप बड़त भीड़ मिलाप के समय अपने पास मत रक्खो ॥ अज्ञान निर्बल मनुष्य केवल एक दो मनुष्यों सहित अपने भतीजे से मिलने को गया ॥ पीछे उसके कटकने बादशाह को घेर कर

मार डाला और उसके सिर को काट और एक बरछी में लटका कर सारे कटक में फिराया ॥

अलाउद्दीन इस कलंक से कलंकित होकर शीघ्र दिल्ली की ओर चला और इस मृतक बादशाह के बेटे को देश निकाला देकर ईसवी संबत् १२९६ में आप सिंहासन पर बैठा ॥ अपना कलंक सबों के चित्त से भुलाने के लिये उसने प्रजा को आनंद मंगल के काम कर करके बहलाया और बड़े बड़े राजगामी निंदा न करैं इसलिये उनके अधिकार बढ़ाये ॥ वह अपने सब राज्य में पश्चिम की ओर मुगलों पर और दक्खन में हिंदुओं पर जय प्राप्त करता रहा ॥ सिंहासन पर बैठने से एक बरस पीछे उसने गुजरात पर कटक भेजा यद्यपि पहले समय में लोगोंने इसको बिगाड़ा परंतु संपूर्ण रूप से कभी किसी के आधीन नही हुआ था ॥ सोलंकियों का प्राचीन कुल नष्ट हो कर भगलियों का नवीन कुल स्थापन हुआ और इस कुलने एक सौ छब्बीस बरस तक वहां राज्य किया अर्थात् जब तक गुजरात मुसलमानी राज्य में आगया जब अलाउद्दीन गुजरात की ओर चला तब जितना कि वह पहली चढ़ाइयों से बिगड़ गया था उसी भांति फिर वह सुधर गया था और देश में पहलासा चमत्कार हो गया था ॥ सोमनाथ फिर बन गया था और उसमें मूरतें और पुजारी फिर आगये थे परंतु चढ़ाइयों के कारण जो कि गुजरात और सूरत के उर्वरा देश में एका एकी बिगाड़ आगया मनुष्य के परिश्रम का प्रत्येक चिन्ह मिट गया और देश नष्ट हो गया ॥ नरहवाला का प्राचीन राज्य धूल में मिल गया ॥ बड़ा चमत्कारी पत्तन नगर उजड़ गया जिस में अनेक स्थान अजमेर की खान के मर मर पत्थर से बने हुवे थे सोमनाथ के पास एक मस्जिद बनाई गई बुध की मूरत

फेंकी गई और वहां के प्रहृत निवासियों की मत संबंधी पुस्तकें बुध के मत की या पुरान सब जलाये गये और लूट में ये दो वस्तु लाये एक काफूर नाम सेवक जो बड़ा सुंदर था और वहां के राजा की एक कौला देवी नाम राणी जो सुरूप में हिंदुस्थान के बीच एक ही थी॥ राणी को अपने मंदर में भिजवा दी और काफूर को एक अधिकार मिला जिस में उसका बड़ा नाम हुआ और थोड़े काल पीछे दक्षिण के लिये और एक आपत्ति रूप उपजा॥

गुजरात की चढ़ाई पूरी होते ही मुग़लों के दो लाख घोड़े सिंधु नदी के तीर पर आये और सिंधु और दिल्ली के बीच के देशों को सत्यानाश करके दिल्ली को घेरा जहां कि देश देश के लोग बचने के लिये भाग कर आबसे थे और बड़ी भीड़ हो गई इसलिये अकाल पड़ा निदान बादशाहने मुग़लों से युद्ध करने का बिचार किया इस कारण कि भूख के मारे मरने से युद्ध करके मरना उत्तम है॥ कहते हैं कि बादशाह तीन लाख घोड़े लेकर बाहर नगर के निकला और कटक को रणभूम में लाकर ज़फ़रखां को दाहनी ओर के कटक का अधिपति बनाया यह मनुष्य उस काल में बड़ा बीर था॥ दोनो कटक में युद्ध होने लगा और ज़फ़रखांने पराक्रम सहित चढ़ाई करके साम्हने की कतार को तोड़ डाला बादशाहने ज़फ़रखां के भाई को उसकी सहायता के लिये आज्ञा दी परंतु उसने जलन से बादशाह की बात को टाल दिया॥ ज़फ़रखां शत्रुओं को भगाता हुआ पंद्रह कोस तक चला गया जहां कि एक नवीन कटकने उसपर चढ़ाई की और वहां बड़ी बीरता दिखा कर मारा गया॥ ज़फ़रखां का डर मुग़लों के मन में ऐसा व्याप गया था कि जब कभी मुग़लों के घोड़े चोंक पड़ते

थ तो वे कहते थे कि क्या ज़फ़रखां दिखाई दिया परंतु तो भी उसके अगुणग्राहक स्वामीने कहा कि मैं उसके बड़े बड़े गुणों से डरता था इसलिये उस सेनापति के मारे जाने से मुझै ऐसी प्रसन्नता ऊई जैसी मुग़लों से जय पाने में॥

अलाउद्दीन बड़ा गुणवान राजकुंवर था परंतु उसके उद्योग व्यर्थ थे और वह उनके पूरे करने में उपाय नहीं करता था उसने महम्मद की भांति एक नवीन मत स्थापन करना बिचारा परंतु बड़ी कठनाई से उसके मंत्रियोंने उसे उस काम से रोका॥ उसने बिद्या प्राप्त करने में बड़ी असावधानी की थी इसलिये वह पढ़ना लिखना नहीं जानता था परंतु उसने बड़ी अवस्था में फारसी पढ़ने का अभ्यास किया और उस भाषा के पार ऊआ॥ उसके राज्य के तीसरे बरस में एक सरदार जिस की उसने अप्रतिष्टा की थी वह हमीर चोहान रणथंबोर के राजा के वहां शरण लेने गया यह गढ़ हिंदुस्थान के सब गढ़ों में दृढ़ है॥ अलाउद्दीनने अपराधी को हिंदू राजा से मांगा तब उसने यह अच्छा उत्तर दिया कि सूरज चाहै पश्चिम में उदय हो और सुमेर चाहै धरती में मिलजाय परंतु हम अपने शरणागत को बिश्वास घात करकै नहीं पकड़ा देंगे॥ इस बात से उसने झट रणथंबोर को घेर लिया और निदान उसे जीत लिया परंतु सूरबीर हमीर उसके बचाने में मारा गया और उसके रणबासने उसके पीछे जीना अच्छा न जान सब राणियां आग में जल मरीं॥ जब तक अलाउद्दीन उस चढ़ाई पर था तब तक उसके देश में कई स्थान पर झगड़े उठे॥ जब वहां से फिरा उसने अपने सभासदों को इकट्ठा किया और देश भर में बिगाड़ होने का कारण पूछा तब उन्होंने कहा कि आप देश के कामों में ध्यान नहीं लगाते और मदिरा बऊत

पीते हो ग्रोर बड़े २ लोग आपस में संबंध करते हैं ग्रोर द्रव्य का बांट समान नहीं होता है इसलिये देश का सब प्रबंध बिगड़ गया है॥ इस बात को मिटाने के लिये बादशाहने राज काज में अपना बहुत मन लगाया ग्रोर तहखानों में से शराब गलियों में बहा दी ग्रोर निज प्रजा को भी मदिरा पीने का निषेध किया ग्रोर बड़े लोगों से कहदिया कि तुम मेरी आज्ञा बिना आपस में संबंध न किया करो ग्रोर द्रव्य का समान बांट करने की रीत दूर करने के लिये उसने सब प्रजा को दीन करदेने का उद्योग किया ग्रोर राज काज में ध्यान लगाया ग्रोर नाज का भाव अपने मनके अनुसार ठहरा दिया ग्रोर इसी भांति सब वस्तु उलट पुलट करके अपने कटक को नई रीत से सजाया ग्रोर गिनती के समय जान गया कि उसका कटक चार लाख पिछत्तर सहस्र घोड़ों का था॥

उसके राज्य में ईसवी संबत् १३०३ का बरस बड़ा प्रसिद्ध हुआ॥ उसने बंगाले के मार्ग से तिलंगाना में सेना भेजी ग्रोर आप चीतोड़ पर जो कि राजकुल मेवाड़ की राजधानी है चढ़ाई करने को गया हिंदुस्थानी इतिहासों के अनुसार यह उसकी दूसरी चढ़ाई थी॥ प्रथम उसने पद्मनी रानी के लिये चीतोड़ को घेरा था यह भीम की अति सुंदर रानी थी ग्रोर उसने कहा कि जो तुम उसे मुझे दो तो चीतोड़ का घेरा छोड़दूं जब यह बात अंगीकार न हुई तब उसने केवल यह मांगा कि मुझे एकही बेर उसे दिखादो चाहै शीशे ही में उसका प्रति-बिंब दिखादो इस बात को राजाने मान लिया अलाउद्दीनने निडर हो थोड़े मनुष्य ले नगर में प्रवेश करके अपनी प्रिय को देखा॥ भीम भी इसी भांति अलाउद्दीन के कटक तक उसके साथ गया परंतु हिंदू राजाने अपने शत्रु से छल पाया

अलाउद्दीनने बिश्वास घात करके उसको पकड़ रक्खा और कहा जो अपनी रानी को दो तो तुम छूटो जब यह बात पद्मनी रानी तक पहुंची तब उसने अपने तईं अपने को इस बात पर सोंप देना अंगीकार किया कि मैं शत्रु के कटक में अपनी प्रतिष्ठा के योग्य अपनी सहेलियों को साथ लेकर आऊंगी सात सो डोली मुसलमानी कटक में उसके साथ आईं यद्यपि प्रत्यक्ष में यह जान पड़ता था कि उसकी सहेलियां उनमें हैं परंतु वस्तुता अच्छे शस्त्र पहरेहुवे सिपाही उनमें थे उनमें से एक फिरती हुई डोली में उसने अपने पति को बैठाकर भगा दिया शत्रु की सेना के किनारे पर पहुंचकर वह एक बड़े शीघ्र गामी घोड़े पर चढ़ चीतोड़ को चला परंतु अलाउद्दीनने शीघ उसे घेरलिया मेवाड़ की सेना उसके बचाव में बहुत मारी गई परंतु बादशाह को उलटा फिर आना पड़ा और यह बात जान पड़ती है कि पद्मनी रानीने भी निज भागने का उपाय किया ईसवी संबत् १३०३ में अलाउद्दीनने फिर चीतोड़ को घेरा और उसके बचाव में राजा के सब बेटों में से केवल एक बेटा बचा उस लड़के को उसके बापने भागने के लिये कहा इस कारण से कि राजकुल नष्ट न होने पावै और वह बाप का कहना मान कर भाग गया जब कि बचने की कुछ आस न रही तब नगर में लकड़ियां जलाकर अच्छे २ कुलों की स्त्रियां जल मरीं राजाने नगर द्वार को खोल दिया और कई प्रसिद्ध बीरों को साथलेकर निकला और शत्रु पर चढाई करके जैसे वह चाहता था वैसे ही लड़के मारा गया बादशाहने नगर में घुस कर देखा कि गली गली में रक्षक मरे पड़े हैं और पद्मनी रानी सहेलियों समेत चिता बना कर जल मरी थी उसका धुवां मार्गों

में भर रहा है॥ वह थोड़े काल तक नगर की रचना देख-कर प्रशंसा करता रहा परंतु तो भी नाना प्रकार का अन्याय करता रहा मंदरों को ढवा डाला और राजमंदरों को ढवा-कर धूल में मिला दिया [इस दुर्दशा में भीम और पद्मनी रानी के मंदर बचे और दुर्ग का अधिकार झालोर के राज-कुमार को मिला॥

दो सेना दो ओर थीं उन में ऐक तो चीतोड़ को घेरे ऊवे थी और दूसरी दक्खन को जाती थी॥ मुग़लोंने एक लाख बीस सहस्र सेना सहित सिंधु नदी के पार होने की फिर इच्छा की उन्होंने सब देश में लूट मचा दी और दिल्ली के बाहर तक के स्थानों को लूटा जिस रीत से वे हटाये गये उसको इतिहासवेत्ताओंने नहीं लिखा है परंतु केवल इतना लिखा है कि बादशाहने किसी ऋषी की प्रार्थना की और उसने बादशाह को कुछ दैवी सामर्थ दी थी॥ ईसवी संबत् १३०५ और १३०६ में वे फिर सिंधु के पार ऊवे परंतु दोनों चढ़ाइयों में हार गये॥ डरा देने के लिये बादशाहने सब कैदियों का सिर कटवा के उनकी खोपड़ियों की एक लाट दिल्ली में बनाने की आज्ञा दी और स्त्रियों और बालकों को दास पदवी में बेच डालने की आज्ञा की इस वृत्तांत के पीछे उसके राज्य में केवल एक और चढ़ाई ऊई और फिर मुग़ल ठंडे पड़ गये बादशाह की सब चढ़ाइयों में जय ऊई और इस कारण से अज्ञान मनुष्य ऐसा बिचारते हैं कि उसको दैवी सहायता ऊई थी॥

देव गढ़ के राजाने कर के भेजने पर कुछ ध्यान न रक्खा इसलिये एक बड़ा कटक दक्षिण को जाने के लिये उपस्थित ऊआ इस कटक का सेनापति मलिक काफूर ऊआ जिस का

वर्णन आगे कर चुके हैं कि बादशाह उससे ऐसा मोहित हो-गया था कि राजकुल के सब लोगों का अधिपति बना दिया था॥ मलिक काफूर इस पदवी के पाने योग्य ही था क्योंकि युद्ध बिषय और देश संबंधी कामों में बड़ा कुशल था इस बात में उसने अपने स्वामी को निरास नहीं किया क्योंकि उसने सब चढ़ाइयों में जय पाई थी परंतु इतिहासवेत्ता यह बात प्रसन्नता पूर्वक लिखते हैं कि उसने देवल देवी को पकड़ लिया जो रानी से उत्पन्न ऊई थी उन दिनों में जब कि वह हिंदू थी और पूर्व पति के निकट थी वह तरुण हो गई थी और सुंदरताई में ठीक अपनी मा के समान थी जब वह दिल्ली में आई बादशाह के पुत्रने उससे बिवाह किया देव गढ़ के राजा को काफूरने जीत लिया और वह बादशाह की सभा में आधीन बनकर आया और आगे को दृढ़ मिलाप रहने के कारण बादशाहने उसका राज्य उसे फिर दे दिया बारंगोल की चढ़ाई में जो कि तिलंगाने में है जय न ऊई इसलिये मलिक काफूर को सेना सहित उस नगर पर भेजा और उसने कई चढ़ाइयों के घेरने के पीछे उसको ले लिया वहां की उसके बऊत लूट हाथ लगी जिस को लेकर दिल्ली में चला आया दूसरे बरस वह फिर दक्षिण में मुसलमानों का राज्य फैलाने के लिये बादशाह के कहने से आया और अपने चलने से तीन महीने पीछे द्वार समुद्र में पऊंचा यह एक नगर है और इसके नाम से जान पड़ता है यह नगर समुद्र के तीर पर होगा॥ परंतु निश्चय करके वह थल में श्री रंग पत्तन से उत्तर को पचास कोस है करनाटक के राजा के देश का सत्यानास करके और मंदरों में से सोने की मूरतें लूट काफूर समुद्र के तीर पर भी गया॥ समुद्र के तीर पर उसने एक मसजिद

बनवाई और थोड़ेसे काल पीछे उसने पृथ्वी में से बड़ा भंडार पाया उसे यह अपने आधीन करके दिल्ली को चला और वहां आकर उसने नव्वे सहस्र मन सोने से घाट बादशाह को न दिया यद्यपि दक्षिण में चांदी को थोडा जानते थे और सोना बहुत था तो भी इतना सोना युद्ध में नही आता॥ बादशाहने उदारता पूर्वक यह द्रव्य सेनापतियों और पंडितों को दिया परंतु उसकी उदारता शीघ्र लोग भूल गये क्योंकि उसने पचास सहस्र से अधिक मुग़लों को जो मुसलमानी मत में आगये थे और जिन को कहते थे कि ये राज काज में हान करैंगे उनको मरवा डाला॥

यद्यपि उसके ऐसे अन्याय के कर्म थे तो भी कहते हैं कि देश उस बादशाह के समय में ऐसा बसता था कि ऐसा कभी किसी अगले बादशाह के समय में न बसा था और सब से दूर दूर के सूबों में न्याय और प्रबंध था और सब देश में और विशेष करके दिल्ली में बड़े बड़े स्थान मसजिद हम्माम ताल गढ़ और पाठशाला अच्छे प्रकार से बनते चले जाते थे जब अलाउद्दीन की अत्यंत प्रतिष्ठा हो गई तब आप आनंद में पड़ा और मलिक काफ़ूर नाम जन जो उसके सब लोगों में मुख्य था राज लेने की इच्छा करने लगा जब बादशाह सामर्थ हीन हुआ तब देश देश के लोग उस से फिरने लगे और उन झगड़ों के सोच में उसका रोग अधिक होता गया॥ वह ईस्वी १३१६ संवत् में बीस बरस राज्य करके मरगया॥ संदेह करते हैं उसको उसी दासने बिष दे दिया जिस को उसने ऐसी बड़ी पदवी दी थी धन और सामर्थ जो उसने प्राप्त की थी केवल महमूदग़ज़नवी को छोड कर और हिंदुस्थान के मुसलमान बादशाहों से अधिक था यह बादशाह उन हिंदुस्थानी बाद-

शाहों और शाहनशाहों की गिनती में था जो बड़े उद्योगी और पराक्रमी थे॥ उसने सिक्का जो चलाया था उस में अपना नाम दूसरा सिकंदर खुदवाया था और उसका यह नाम होना ठीक था हिंदुओं के राज्य जो पहले जय करनेवालों से बच रहे थे उनको उसने जीत लिया और बड़े नगर नरहवाला और प्राचीन धार और अवंती मंदोर और देव गढ़ और सोलंकियों और परमरा के कुलवालों और टैक और सब अग्नि कुलवालों की राजधानियों को नष्ट कर दिया॥

मलिक काफूरने अपने बादशाह और हितकारी के मरण काल पीछे उसके बड़े पुत्रों की आंखें निकलवा गेरीं और सब से छोटे पुत्र को जो कि अभी बालक था सिंहासन पर बैठाया इस आस से कि इसके नाम से मैं राज्य करूं परंतु पैंतीस दिन के भीतर राजा के प्रधान लोगोंने उसे मार डाला और मुबारक नाम खिलजी को बादशाह किया॥ इस बादशाहने उन लोगों के मरवाने का प्रारंभ किया जिन्होंने उसे सिंहासन पर बैठाया था और अत्यंत तुच्छ लोगों को बडी बड़ी पदवी देने लगा उसने निज पिता के कई कठिन कानून अच्छे भी दूर किये क्योंकि उसने कानूनो को बिना बिचारे दूर किया था॥ उसने गुजरात देश को अपने बस में किया जो बहुत काल से फिर रहा था और दक्षिण में चढ़ाई करके नये जय किये हुये देशों में अपना अधिकार स्थापन किया अपने दुर्भाग्य से उसने मिल कर खुसरो को अपना सभासद किया और उसने बादशाह होने की इच्छा की इसलिये मलिक खुसरोने बादशाह के तईं अनेक भांति के आनंद चैन में लगाया जो जो कुकर्म्म बादशाह से उसने करवाये उनका वर्णन नही हो सकता है जब बादशाह की अत्यंत निंदा

हो गई तब मलिकखुसरोने उसको मरवा डाला और इस भांति खिलजियों के कुल का अंत हुआ इस कुल में केवल चार बादशाह हुवे जिन्होंने दिल्ली के सिंहासन पर तैंतीस बरस राज्य किया उनके समय में दिल्ली के राज्य की सीमा इतनी बढ़ी थी जितनी मुग़लों के आने तक कभी नहीं फैली थी ॥ अमीर लोग नहीं चाहते थे कि इस रीत खुसरो बादशाह हो जाय और उसके अन्याय के कारण प्रजा उस से अप्रसन्न थी उसको बादशाह हुवे एक बरस दिन नहीं हुआ था कि मुलतान और देवलपुर का सूबेदार जिस का नाम ग़ाज़ीबेग तुग़लक था वह एक बडी सेना लेकर दिल्ली को चला और आते ही अन्याई को जय करके सब प्रधान लोगों की प्रसन्नता से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा ॥

॥ बारहवां अध्याय ॥

गियासुद्दीन—महमूद तुग़लक—उसका अत्यंत व्यय—दौलताबाद को अपनी राजधानी करने के लिये उद्योग—मेवाड़ की स्वाधीनता—दक्खन का फिर जाना—फ़ीरोज़ तुग़लक—उसकी सुचाल—उसकी वृद्धि—बंगाला फिर गया—उसके मरण काल पीछे दस बरस तक घबराहट—मालवा फिर गया—गुजरात फिर गई—खानदेश—जोनपुर—तैमूर—उसने दिल्ली को लिया—और उसे छोड़ दिया—खिज्रखांने सय्यदों के कुल को स्थापन किया ॥

तुग़लक जिसने राज्य पाते ही अपना नाम गियासुद्दीन रक्खा बस्तुता वह बुलबुन का दास था और दिन दिन बड़ा काम पाते पाते निदान वह मुलतान का सूबेदार नियत ऊआ था जिस सेवा से वह सिंहासनपर बैठा उसने राज सब अच्छी रीति से किया और ब्योपार की बऊत सहायता की और बिद्यावानो को अपने पास बुलाया, उसके बेटे अलफखां को युवराज पदवी मिली थी ॥ वह एक बड़ा कटक लेकर दक्खन के सूबे पर गया जो पूर्व राज्य के पूरे प्रबंध के कारण बिगड़ गया था ॥ उसने वारंगोल को घेरा जो तिलंगाने में है परंतु

उसके बड़े बड़े प्रधान लोगोंने उसकी संगत छोड़ दी फिरकर आया तो केवल तीन सहस्र सेना उसके साथ रहगई थी शीघ्र फिर सेना इकट्ठी की और अलफखां फिर दूसरी बेर दक्खन को गया और उसने वारंगोल को ले लिया और सहस्रों हिंदुओं की काटा की और राजा को उसके कुटंब सहित दिल्ली को भेज दिया॥ उस समय में बंगाले की ओर बहुत झगड़े की बातें आईं और गियासुद्दीन आप बंगाले को चला वहां के सूबेदारने उसकी आज्ञा मानी तब गियासुद्दीनने उसके राज का चिन्ह रखने के लिये उसे आज्ञा दी॥ जब वह दिल्ली को फिरा आता था तब अफगानपुर में अपने पुत्र अलफखां से मिला वहां उसके पुत्रने बाप से मिलने के हेतु तीन दिन में एक चोबी घर थोड़े दिन के लिये बनवाया था बाप बेटे दोनो उस स्थान में मिले और वहां भोजन किया परंतु बेटे के जाते ही घर गिर पड़ा और बाप और उसके संगी दब गये कहते हैं कि यह अलफखां का छल था, वह तीन दिन के भीतर ईसवी संबत् १३२५ में सिंहासन पर बैठा और अपना नाम महम्मद तुग़लक रक्खा॥

कहते हैं कि उस में अत्यंत उलटे गुण थे परंतु उस में बावलापन बहुत था और उसके समय में उसके राज्य पर उसकी अज्ञानता से ऐसी ऐसी आपत्ति आईं जो कभी किसी राज पर न आई थीं और उसकी प्रसंसा में लिखा है कि वह अपने समय में बड़ा कुशल बादशाह था प्रत्येक बिद्या में सावधान था यहां तक कि यूनानी बिद्या भी जानता था बिद्या की बढ़वार बहुत चाहता था और रणभूम में बड़ा योद्धा था तो भी वह अपने अगले बादशाहों में सब से अधिक चल चित्त अन्याई और निर्दई था, मनुष्य जात के मारडालने में

ऐसी थोड़ी ढील करता था कि जब पलटा लेता था तब जान पड़ता था कि मनुष्य कुल को नष्ट किया चाहता है कोई अठवाड़ा नही बीतता था कि जिस में एक दो अमीरों की कटा न हो ॥ उसके राज्य के प्रारंभ में मुगल फिर पश्चिम के देशों की ओर आये॥ और बादशाहने देखा कि मैं उनका साम्हना नही करसकता इसलिये उनको बज्जतसा द्रव्य देके उलटा फेर दिया॥ इस लज्जा को मिटाने के लिये उसने दक्षिण पर सेना भेजी और उन दूर के देशों में जिन में कि बादशाही राज्य केवल नाम मात्र था उनको ऐसा अपने आधीन किया कि वे दिल्ली के पास के देशों की भांति राज में मिल गये परंतु उसकी अत्यंत अज्ञानता से उसके मरने से पहले नर्बदा के दक्षिण के सब देश राज्य से जुदे होकर खाधीन हो गये थे॥ भारी कर जो वह प्रजा से लेने लगा इतना था कि देश उसका सहन न कर सका॥ जमीनदार और किसान जंगले में भाग गये धरती बिना बोई जोती पड़ी रही और अच्छे से अच्छे देश काल के मारे उजड़ गये ॥ बादशाहने अपनी आधीन प्रजा को बिगाड़ने के लिये एक तांबे का सिक्का बनाया और उसका मोल जो मनमाना ठहराया और प्रजा में चलाया जिस से राज्य भरका देन लेन बिगड़ गया परंतु जब इस उपाय से भी प्रजा का रुपया बादशाह के सिर से न उतरा तब उसने लेखनी से सब रुपये को काट दिया॥ उसने भंडार को रीता और प्रजा को अप्रसन्न देख इस बात का उपाय चीन पर चढ़ाई करने में बिचारा॥ उसने इस देश के द्रव्य की बड़ी प्रसंसा सुनी थी॥ यद्यपि उसके सभासदोंने उस चढाई का निषेध किया था तो भी उसने ऐक लाख सेना देकर अपने भतीजे को भेजा वह हिमालय पहाड़ो में होके चीन की सीमा पर पज्जंचा परंतु चीन वालों की बड़ी सेना

ने उसका साम्हना किया और उनको हटा दिया और फिरते समय उनको अत्यंत दुखी किया और उस दुख से थोड़ेसे मनुष्य बचे वे लोग जो दिल्ली में फिर कर आये उनको बादशाहने मरवाडाला॥ ईसवी संबत् १३३८ में बादशाह का भतीजा जिस का नाम खोराशिप था वह सागर का सूबेदार था राज्य लेने की इच्छा करने लगा और बादशाही सेनापतियों पर चढ़ाई करने लगा बादशाह आप रणभूमि में गया तब उसके भतीजे को पीछे हटना पड़ा और पहले भाग कर कंपला के हिंदू राजा के निकट और पीछे दक्षिण में द्वार समुद्र के राजा के निकट शरण लेने गया॥ उस राजाने उसके चचा को उसे सोंप दिया॥ तब बादशाहने उस जीते ऊवे की खाल उतारने की आज्ञा दी और दक्षिण की ओर चलते चलते महम्मद तुगलक देवगढ़ में पऊंचा और उस नगर का स्थान देख कर ऐसा मोहित ऊआ कि उसको अपनी राजधानी करना बिचारा और अपनी सदैव की अज्ञानता के अनुसार दिल्ली को रीती करदेने और पुरुष, स्त्री, लड़के और धन और चोपायों को वहां लेजाने की आज्ञा दी और छाया के लिये उसने आज्ञा की कि बड़े बड़े वृक्ष जड़ से उखाड़ करलगाये जावें॥ यद्यपि दिल्ली ऊजड़ होगई परंतु देवगढ़ जिस का नाम उसने दोलताबाद रक्खा वह भी अच्छी भांति न बसा क्योंकि एक दिन में राजधानी नहीं बन सकती है और इस रीत से बसाने में और बिगाड़ होता है॥ इस नवीन राजधानी के बसाने को उसने अपने सब छोटे वड़े सरदारों को अपना अपना कुटंब लाकर वहां बसाने के लिये आज्ञा दी इस कारण मलिक बहराम जो मुलतान का सूबेदार था फिर गया उसको दंड देने के लिये बादशाह आप चला और उसे जय करके दिल्ली

के मार्ग से वह फिर चला और जब अपने प्राचीन नगर के निकट गया तब बहुतेरे उसके सिपाही उस से अलग होने लगे और बादशाह इस बात के बुरे फलों को दूर करने के लिये दो बरस तक प्राचीन राजधानी में बसा किया॥ इस से लोगोंने जाना कि वह सदा वहीं रहेगा परंतु एक नवीन राजधानी के बनाने का बिचार उसके चित्त से फिर आया और उसने दूसरी बेर नगर को उजाड़ दिया और सब नगर निवासियों को लेकर फिर दौलताबाद को चला परंतु जब उसने अनेक कुलों को दीन कर दिया तब उसको इस बिचार का पूरा होना असंभव जान पड़ा और सामर्थ हीन दरिद्री नगर निवासियों को फिर दिल्ली जाने के लिये आज्ञा दी॥ परंतु फिरते समय बहुत लोग अकाल से मरगये उसका जंगलीपन और चंचल सुभाव कुछ कहने में नहीं आता॥ एक बेर उसने एका एकी कनोज पर चढ़ाई की और नगर के आस पास के लोगों की बिना अपराध कटा करवाई॥ एक समय चढ़ाई में उसके दांत दुखे और उसका एक दांत टूट गया तब उसने बादशाहों की सी धूम धाम के साथ बीर नगर में उसे गड़वाया और एक बहुत अच्छी कबर बनवाई जो चिर काल तक उसकी अज्ञानता को प्रगट करती रही॥ उसके अमित खरच के कारण सब देश बिगड़ गये॥ और उसे खेती कराने के लिये अपना भंडार खोलना पड़ा परंतु जमीनदारों ने जो रुपया बैल बीज मोल लेने के लिये पहले लिया था सो भोजन के मोल लेने में उठा दिया इसलिये धरती फिर बिन बोई पड़ी रही॥ आपत्ति उसके ऊपर इकट्ठी हुईं निदान उसने अपने तईं आप समझाया कि ये आपत्ति इस कारण से आई हैं कि वह खलीफ़ा की आज्ञा से सिंहासन पर नहीं बैठा

जो पैगंबर का प्रतिनिध है इसलिये उसने खलीफा की आज्ञा लेने के लिये अच्छी अच्छी वस्तु भेट रखने के हेतु देकर एक दूत को अरब में भेजने की इच्छा की जब उसको यह निश्चय ऊआ कि खलीफाने भी एक दूत भेजा है तब महम्मद तुगलक छह कोस तक उसको आगे लेने गया और खलीफा के पत्र को अपने सिर पर रख लिया फिर उसने आज्ञा दी कि खुतबे में से हरेक बादशाह का और अपने बाप का नाम निकाल डालो क्योंकि ये खलीफा की आज्ञा से बादशाह नही ऊवे थे और उसने खलीफा का नाम अपने कपड़ों और अन्य वस्तुओं पर खुदवाया॥

इस छोटीसी पुस्तक में उस बादशाह के संपूर्ण असंगत कामों का वर्णन करना असंभव है जो आधा बीर और आधा बावला था और वस्तुता संपूर्ण उसकी कहानी से कुछ फल भी नही दिखाई देता और उसके कामों का फल यह था कि उसकी प्रजा उस से अप्रसन्न ऊई और सूवे फिर गये उसही के राज्य में पहले पहल सूबेदार स्वाधीन हो गये और इसी भांति हिंदुस्थान में से मुसलमानी राज्य का योग बिगाड़ गेरा और उस से ढाई सौ बरस पीछे अकबर के समय तक फिर यह योग ऊआ उसके समय में फिरे ऊवे सूवों को जय किया॥ महम्मद अपने राज्य के अंत के बरस में सिंधु नदी के तीर पर ठट्टा के अधिपत को दंड करने के लिये चला जब वह नगर तीसेक कोस रहा था तब वह मोहर्रम करने के लिये दस दिन ठहरा और बऊत मच्छियां खाईं इस से उसे ज्वर ऊआ और उसके भारी उद्योगने उसे कुछ आनंद न लेने दिया जो आनंद उसके रोग के लिये आवश्यक था और वह एक छोटीसी नाव पर चढ़के वहां तक गया जहां से वह नगर १५ कोस रहा वहां

ईसवी संबत् १३५१ में कुत्सित प्रबंध और दरिद्रता सहित सत्ताईस बरस राज्य करके मरगया ॥

महम्मद तुग़लक के राज्य के अंत में हमीरने जो चीतोड़ के राजाओं की संतान था उस देश में आकर बादशाह के अधिकारी को हरा दिया और आप केवल उस देश का अधिपति ही नही हो गया बरन मेवाड़ की सीमा को बढ़ा करके अपने प्राचीन कुल को प्रसिद्ध किया उस समय में उसके भिन्न उत्तर हिंदुस्थान में कोई और राजा स्वाधीन न था संपूर्ण और राजकुल नष्ट होगये थे परंतु उदयपुर जिस को अलाउद्दीनने धूल में मिला दिया था फिर सामर्थ प्राप्त करके दोसौ बरसतक बर्द्धित होता रहा अंत में सुलतान बाबर के समय में मुसलमानो की चढ़ाइयां भईं ॥

महम्मद तुग़लक के राज्य के अंत में दक्खन देश भी पचास बरस तक दिल्ली के राज्य में मिला रहकर जुदा हो गया और वहां के सूबेदार स्वाधीन बादशाह हो गये दक्खन के मुसलमान बादशाह जो बड़े बली और प्रसिद्ध हुवे थे वे बहुधा बहमनी कुल के थे महम्मद तुग़लक के स्थानापन्नने जो किसी को दुख नही दिया चाहता था उन फिरेहुवे सूबों को जो नर्बदा के पार हैं फिर लेने की इच्छा न की इस कारण दिल्ली और दक्खन में दो सौ बरस से अधिक २ तक कुछ संबंध न रहा इस कारण हम दक्खन का वर्णन एक अलग अध्याय में लिखेंगे जिस्से मुसलमानों के राज्य का विषय लिखने में कुछ हान न होगी ॥

महम्मद तुग़लक की गद्दी पर उसका भतीजा फ़ीरोज़ तुग़लक बैठा ॥ इस बादशाह का सुभाव अपने चचा के सुभाव से बिपरीत था यह अपनी सुशीलता के कारण अति प्रसिद्ध था ॥

फीरोज़ अपने चचा के मरण समय सेना में था सेनापतियोंने मिल कर उसे बादशाह बनाया परंतु ख्वाजहजहां जो मृतक बादशाह का संबंधी और नव्वे बरस की अवस्था का उसने दिल्ली में आकर छह बरस के लड़के को सिंहासन पर बैठाया यह कह कर कि वह महम्मद तुग़लक का बेटा है कदाचित् यह बात संभव होय परंतु सेनापतियोंने राज के झगड़े दूर करने के लिये बड़ी बुद्धवानी से फीरोज़ तुग़लक का स्वत्वस्थापन किया और ख्वाजहजहां को आधीन होना पड़ा ईसवी संवत् १३५१ में फीरोज़ तुग़लक दिल्ली में आया और उस समय से लेकर अपनी वृद्ध अवस्था तक न्याय पूर्वक राज्य करता रहा यद्यपि उसको उन लड़ाइयों में जाना पड़ा जो उसके पूर्वजों के अपराध से हुई थीं परंतु वह संधि बहुत चाहता था और इसलिये वह अच्छे २ सूबों के अलग हो जाने से भी चुप चाप रहा वह देश का भला करने में बड़ा प्रसन्न होता था उसके ये काम हैं उसने पचास बंद बंधवाये जिन से सारी पृथ्वी में पानी सहज ही सींचा जाय, चालीस मस्जिद तीस पाठशाला, बीस राजमंदिर, सौ सराय, दोसौ नगर, तीस तड़ाग, सौ चिकित्सालय पांच मक़बरे सौ हम्माम, दस बड़े बड़े मीनार, दस बावड़ी, और डेढ़ सौ पुल बनवाये॥

हमने आगे वर्णन किया है कि मेवाड़ और दक्खन फीरोज़ तुग़लक के पूर्व पुरुष के समय में जुदे २ होगये थे और फीरोज़तुग़लक के समय में सिंधु और बंगाले के सूबों के फिर जाने से राज्य की सीमा और भी घट गई थी महम्मद तुग़लक के समय में जब वह बावलेपन से दिल्ली को उजाड़ कर दौलताबाद के बसाने में लगा हुआ था तब नसीरुद्दीनने बंगाले में स्वाधीन हो कर सिक्का और खुतबा अपने नाम का चलाया॥

इतिहासवेत्ता इस को बंगाले का पहला खाधीन बादशाह कहते हैं॥ परंतु दिल्ली की राजसभा उसको फिरा ऊआ जानती थी॥ ईसवी संबत् १३४० में उसने अपने तईं बादशाह कह लाया परंतु दो बरस पीछे अलीमुबारक्ने उसको मार डाला और उसके कोके हाजीइलियासने फिर अलीमुबारक् को मार डाला॥ और हाजी इलियास के समय में फ़ीरोज़तुग़लक बंगाले को जय करने के लिये फिर सेना इकट्ठी करके चला परंतु उसकी यह मनोकामना सुफल न भई॥

ईसवी संवत् १३५६ में उसने हाजी इलियास से बचन किया और उसका खाधीन होना अंगीकार करके उसके देश की सीमा स्थापन की इसलिये बंगाले के मुसलमान हाकिमों के खाधीन होने का सच्चा काल यह निश्चय हो सकता है वे पूर्बी कहलाते थे॥ हाजी इलियासने हाजीपुर बसाया जो अब बरसवें दिन के मेले और घुड़दोड़ के कारण प्रसिद्ध है और इस नगर के बसाने से बिचार में आता है कि उसके राज्य की सीमा बहार और गंदक था॥

चोंतीस बरस राज्य करके बादशाह फ़ीरोज़ तुग़लकने १३२७ संबत् ईसवी में अपने बेटे महम्मद को राज्य सोंपा जो बऊधा दूसरा तुग़लक कहलाता था यह तरुण बादशाह राज्य पाते ही सुख भोग में लगा और अपने पिता के बुद्धवान प्रधानों को अपनी सभा से निकाल दिया॥ कुलीनोंने बादशाह के संबंधियों से मिल कर एक लाख सेना इकट्ठी की और दिल्ली में तब बादशाह की ओरवालोंने उस कटक का साम्हना परिश्रम पूर्वक किया दो दिन तक बड़ी काटा रही और गली चोराहे मरे ऊवों से भर गये तीसरे दिन बड्ड बादशाह को लोगोंने लड़नेवालों के मध्य में ला रक्खा बड्ड

बादशाह को देख कर उसके बेटे के मिलापी उस से अलग हो कर बादशाह से आमिले और फीरोज़ तुग़लकने फिर राज्य लिया परंतु उसने देखा कि मैं राज काज नही कर सकता इसलिये उसने अपने ज्येष्ट पुत्र फतहखां के बेटे ग़िया-सुद्दीन को राज्य दिया और नव्वे बरस की वृद्धावस्था में ईसवी संवत् १३८८ के बीच मरगया॥ यह बादशाह बुद्धवान, उद्योगी, और मिलापी था और उसके समय में देश बसा और प्रसन्न रहा॥ पहले ही पहल उसीने अफग़ानो को हिंदु-स्थान में प्रतिष्टा दी उनको हिंदुस्थान में उस समय तक ऐसे तुच्छ समझते थे जैसे अब यूरप में यहूदियों को जान्ते हैं क्योंकि लोग कहते थे कि वे यहूदियों की सनतान हैं॥

फीरोज़ तुग़लक के मरण काल पीछे दस बरस के बीच दिल्ली के सिंहासन पर चार बादशाह बैठे सब देश में हुल्लड़ मच गया॥ सूबेदारोंने राज्य के निर्बल होने से अवसर देख कर आज्ञा माननी छोड़ दी और हिंदुस्थान में एक और अति भयंकर बादशाहने चढ़ाई की॥ फीरोज़ तुग़-लक का पोता ग़यासुद्दीन राज्य पाते ही सुख भोग में डूब गया और पांच महीने के भीतर मारा गया॥ उसका चचेरा भाई अबूबकर नाम बादशाह हुआ परंतु मुग़लोंने जो मुसलमानो के मत में आ गये थे दूसरे तुग़लक को जो फीरोज़ तुग़लक के समय में सिंहासन पर बैठा और फिर निकाला गया जिस का हम पहले वर्णन कर चुके हैं राज्य का झगड़ा करने के लिये बुलाया वह एक कटक इकट्ठा करके दिल्ली को चला परंतु हार गया॥ हिंदू और मुसलमान बड़े बड़े लोगोंने उसकी सहायता की और उसने फिर राज्य लेने के लिये उद्योग किया परंतु फिर हार गया उसने तीसरी

बेर सेना इकट्ठी की और छल से अबूबकर को एक नगर में जिसे जलेसर कहते हैं जो दिल्ली से बीस कोस है लाकर आप शीघ्र शीघ्र दिल्ली को चला और उस पर अपना अधिकार कर लिया अबूबकर उसके पीछे पीछे चला आया और तीसरी बेर राज्य प्राप्त किया॥ परंतु अबूबकर के सरदारोंने उसकी संगत छोड़ दी और उसे भागना पड़ा दिल्ली के द्वार उसके शत्रु के लिये खुल गये जो अब दूसरी बेर सिंहासन पर बैठा और छह सात बरस तक अप्रतिष्ठा पूर्वक राज्य किया तिस पीछे उसका बेटा हमायूं बादशाह हुआ परंतु वह थोड़े दिनो में मरगया और उसका भाई महम्मद तुग़लक तीसरा सिंहासन पर बैठा हिंदुस्थान के सब शाहनशाहों में यह बादशाह अधिक अभागा प्रसिद्ध था॥ उसके बालकपन के कारण राजसभा में बिरोध हो गया और सूबेदार फिर गये॥ जुदे जुदे धड़ों का वर्णन करना कुछ आवश्यक नहीं॥ दो बादशाह आपस में हथियार बांधकर लड़ने को उपस्थित हुवे दिल्ली में रहे तीन बरस तक बड़ी बड़ी लड़ाइयों का रुधिर बहता रहा निदान महम्मद इक़बालखां का सब अधिकार हो गया और महम्मद तुग़लक केवल नाम मात्र बादशाह रहा॥

इन झगड़ों के कारण से बादशाही सामर्थ और प्रतिष्ठा जाती रही और चारों सूबे मालवा, खान देश, गुजरात और जोनपुर स्वाधीन हो गये॥ फ़ीरोज़ तुग़लक के समय में दिलावरखां गोरी मालवे का सूबेदार नियत हुआ था और फ़ीरोज़ तुग़लक के मरने के कारण से जो हुल्लड़ मचा तब वह स्वाधीन हो गया और उसने प्रथम निज राजधानी धारा नगर की जो राजा भोज की राजधानी के कारण प्रसिद्ध है॥ निदान मंडो नाम के दृढ़ गढ़ में रहा॥ मालवे का बादशाही

कुल सुलतान कहलाता था ॥ गुजरात के अधिपति की कुचाल का समाचार दूसरे महम्मद तुग़लकने जाना जो हिंदू मुसल-मान हो गया था उसका नाम मुज़फ़्फ़रखां रक्खा और इसके भिन्न लाल और खेत डेरे भी उसे दिये जो बादशाही चिन्ह हैं॥ यह बात कुछ अचंभे की नही है कि जब मुज़फ़्फ़रखां वहां दृढ़ ज़ुआ और दिल्ली का राज्य निर्बल तब वह स्वाधीन हो गया फ़ीरोज़ तुग़लक के समय में मलिक राजा खान देश का अधिपति नियत ज़ुआ था यह देश दक्खन की सीमा पर है वह और सूबेदारों की भांति अवसर पा कर फ़ीरोज़ तुग़लक की आज्ञा में से निकल गया और उसने मालवे के अधिपति दिलावरखां से बड़ा मिलाप किया परंतु ऐसा जान पड़ता है कि वह गुजरात के बादशाह के आधीन अपने तईं जानता था ॥ निश्चय है कि इन तीनो राज्यों में से गुजरात चिरकाल तक स्वाधी रहा ॥ खानदेश के राजाओं का नाम फ़ारोख़ीशब्द अंत में होने से जाना जाता था॥ जोनपुर के राज्य का स्थापन करनेवाला ख़्वाजहजहां था जो महम्मद तुग़लक तीसरे का मंत्री था वह इस सूबे का अधिपति नियत ज़ुआ था उसने उस समय के झगड़े रल्ले सह कर अपने तईं बादशाह कहलाया और अपनी राजधानी जोनपुर नियत की और उसके बड़े बड़े खंडेरों से जाना जाता है कि वह स्वाधीन था सो अस्सी बरस तक रहा ॥ ख़्वाजहजहां ने गोरकपुर, बहराच, दुआब और बहार को अपने देश में मिला लिया और ऐसा पराक्रमी हो गया था कि बंगाले के बादशाहों से कर लेने लगा जोनपुर का कुल शरकी के नाम से प्रसिद्ध है और बज़धा बादशाह पूर्वी कहलाते हैं इस रीत से दिल्ली का राज्य ईसवी संवत् के चोदहवें शतक के अंत में

घटते घटते केवल राजधानी के निकट एक छोटासा सूबा रह गया अच्छे सूबे खाधीन अधिपतियों के हाथ में आगये और वे कर नहीं देते थे बरन उन्होंने अपने नाम का सिक्का और खुतवा चला दिया॥ तिमरलंग इस देश के समाचार सुन कर इस देश के और दुख बढ़ाने को अपनी निर्दई सेना लेकर हिंदुस्थान पर चला जिस कटकने हिंदुस्थान के पश्चिम के देशों का सत्यानाश कर दिया॥

तैमूर अत्यंत निर्दई और बड़ा बादशाह मुग़लों के कुलीन कुल में था उसके कुलने चिरकाल तक चंगेज़खां की संतान की सेवा की थी सत्ताईस बरस की अवस्था में वह अपने स्वामी की बजत सेवा में रहा था जो खुरासान और मावरुलनहर का बादशाह था इसलिये उसने अपनी बहन का बिवाह इस से कर दिया॥ चार ही बरस के मध्यय में उसने आज्ञा माननी छाड़ दी और अपने साले के मरने के पीछे राज्य का स्वामी हो गया और समर कंद में रहने लगा बह ऐसे समय में बादशाह ऊआ था जब आस पास के राजाओं के नष्ट होने से एक उद्योगी मनुष्य नवीन राज्य स्थापन और कर सकता था॥ तैमूर ऐसा महा उद्योगी पुरुष था कि उसने बड़ी बड़ी जय करने का बिचार किया और उनको प्राप्त किया इस से सब शत्रु उसके आधीन ऊवे और एशिया और यूरप उसके डर से थरराने लगे वह मनुष्य कटा करने में पशुओं की भांति प्रसन्न होता था और कभी कभी बड़ी कटा के पीछे आदमी के सिरों का एक ढेर बनाके पशुओं की भांति अपने चित्त को प्रसन्न करता था तीन बरस तक उसने ईरान देश की लूट की और बड़ी शीघ्रता पूर्वक बड़े तातार में होकर वाल्गा नदी पर पजंच कर यूरप में खल बली डाल दी और हिंदुस्थान में मुसलमानी

राज्य का बिगाड़ सुनके उससे कर लेने का बिचार किया जैसा कि उसने एशिया के पश्चिम के बक्कतसे देशों की दशा की थी इसलिये उसने अपने पोते पीर महम्मद को एक कटक देकर हिंदुस्थान पर चढ़ाई करने को भेजा परंतु मुलतान के सूबे में जिस को उसने लेलिया था उसकी बक्कत रोक टोक क्कई इसलिये उसने अपने दादा से सहायता मांगी॥ ईसवी संवत् १३९८ में सितंबर महीने की बारवीं को तैमूर बानवें हज़ार सवारों के लेकर सिंधु नदी के तीर पक्कंचा और पांव पांव उतर गया उस स्थान पर जहां कि सिकंदर सतरह सौ पचास बरस पहले उतर गया था अटक से दिल्ली को आते क्कवे तैमूर कुछेक दक्षिण की ओर गया इसलिये कि पीरमहम्मद की सेना उसे मिल जाय॥ जब दोनो कटक मिल गये तब भटनेर को गए जो मरुभूमि के सिरे पर है और उसको एक बड़े कटक से घेर लिया नगर और गढ़वाले प्रथम कुछेक आधीन क्कये परंतु तैमूरने आज्ञा दी कि जो जो लोग पीरमहम्मद का साम्हना करने में थे उनको काटा करो इस बात पर गढ़के लोगोंने फिर शस्त्र लिये और अपनी स्त्रियों और लड़कों को मारकर अपने जीव को बड़ी बीरता से खोना बिचारा उनमें से एक एक मनुष्य लड़कर मारा गया इस बात से तैमूर को क्रोध क्कआ उसनें नगर के प्रत्येक कुल को काटा को और नगर को राख करदिया फिर सरस्वती पर चढ़ाई की नगर जलवाया और नगर निवासियों को कटा करवाई निदान तैमूर जमना के तीर तक पक्कंचा और दुआब में आया और बादशाही सेना उसके पीछे क्कई उस कटक का सेनापति इकबालखां था जिस से कुछ न हो सका और वह फिर दिल्ली को गया कि मैं उस पर किस भांति चढ़ाई करूं॥ उस समय उसको

सेना में बंदुवे भरे पड़े थे उनको भोजन देना बड़ा कठिन पड़ता था ॥ मुसलमान इतिहासवेत्ता कहता है कि उसने निश्चय किया कि उन बंदुओं में बहुतसे नास्तिक हैं ॥ एक लाख मनुष्यों को मार डालने की आज्ञा दी और तैमूरने अपनी सेना सजाई और बादशाह भी कटक लेकर नगर से निकला और एक सौ बीस हाथी ज़िन के पाखर बंधी हुई थी अपने संग लाया पहली ही झपट में हाथीवानों को गिरा दिया तब हाथी निरंकुश होकर पीछे को हटे और बादशाही सेना में घबराहट डाल दिया ॥ तैमूर के सुशिक्षित कटकने इस घबराहट के अवसर को अच्छा जान बड़े पराक्रम पूर्वक चढ़ाई करके शत्रु को भंगा दिया और नगर के द्वार तक पीछा किया रात को बादशाह गुजरात की ओर भाग गया और उसके मंत्रीने बिरन नाम नगर में शरण ली और नगर के बड़े बड़े मनुष्योंने नगर तैमूर को सौंपना बिचारा उसने नगर की लूट और कटा के न करने में बहुतसा धन लिया और शुक्रवार के दिन तैमूरने अपने तईं हिंदुस्थान का राजाधिराज प्रसिद्ध किया और जय की प्रसन्नता अपनी सेना में की जिसने नगर में प्रवेश नहीं किया था ॥ उसी समय में नगर के बड़े बडे व्योपारियोंने अपने अपने बट का रुपया देने में निषेध किया और निज घरों में बैठ रहे इसलिये उन पर सेना भेजनी पड़ी जो मुगल कि जय के मारे प्रसन्न हो रहे थे और लूट की जिन्हें चाट थी अपने स्वाभाविक अन्याय करने लगे जब नगर निवासियोंने देखा कि हमारा धन लुटता है और स्त्री जनों की अप्रतिष्ठा होती है तब उन्होंने निज स्त्रियों और लड़कों को मार गेरा और घरों में आग लगा दी और सिपाहियों पर आटूटे आग लगी हुई के भभूके देखने से तैमूर को इस बखेड़े के समाचार जान पड़े तब

सब मुग़लों की सेना नगर पर टूटी और ऐसी एक आपत्ति मची जिस का कुछ वर्णन नहीं हो सकता है नगर निवासियोंने बड़ी बीरता दिखाई परंतु इतिहासवेत्ताओं के कहने के अनुसार उनकी अमित बीरता उन्हीं के मरने से मिटी ॥ सब उत्तर हिंदुस्थान की लूट जो दो सौ बरस से इस राजधानी नगर में इकट्ठी होती थी इस जयवंत के हाथ लगी परंतु उस लूट की संख्या जो लिखी हुई है ऐसी अधिक है कि मन में नहीं आ सकती ॥

सोलह दिन नगर में रहकर तैमूरने चलने का बिचार किया क्योंकि उसका आशय लूट और नाम प्राप्त करने का था न राज्य लेने का सो पूरा हुआ ॥ फिरते हुवे उसने मेरठ को लेलिया और लूटा और हिंदू देव पूजकों का गंगा नदी के निकास तक पीछा किया हिमालय पहाड़ के सिरे तक पहुंच के और मार्ग में प्रत्येक देश को बिगाड़ के निदान सिंधुनदी के तीर पर पहुंचा जहां उसने खिज़रखां को मुलतान और दिवालपुर का सूबेदार नियत किया और काबुल के मार्ग से समरकंन्द को फिरा और केवल शाहनशाह हिंदुस्थान के नाम पर संतोष करके देश को बिना प्रबंध किये छोड़ दिया जिस से दिन दिन आपत्ति बढ़ती रही ॥

तैमूर की चढ़ाई और फिरजाने के चोबीस बरस पीछे तक अर्थात् ईसवी संवत् १३९० से १४१४ के बीच में एक दो सूबे जो दिल्ली की आज्ञा को मानते थे उनमें भी आपस के झगड़ों के कारण बखेड़ा मच गया ॥ राज्य में कुछ योग और प्रबंध न रहा था ज़िलों के छोटे छोटे अधिपति अपने २ अधिकार में फिरगये और दिल्ली की आज्ञा माननी छोड़ दी इस बात को दिल्ली का अधिपति कुछ न रोक सका ॥

महमूद तुग़लक केवल नाम के लिये बादशाह था परंतु अपनी संपूर्ण आयु में कभी उसने संपूर्ण राज्य का भोग न किया॥ जब तैमूरने दिल्ली के बाहिर उसकी सेना को हरा दिया था उसी रात गुजरात को भाग गया था परंतु वहां के बादशाहने उसकी कुछ शिष्टाचारी न की इसलिये वह शीघ्र मालवे के अधिपति दिलावरजंग के पास शरण लेने गया फिर वह दिल्ली को फिरा॥ यहां बखेड़े के मिटतेही इकबालखांने आनकर बादशाह का मंत्री होने के कारण सब राज्य लेलिया था निदान महमूद तुग़लक को केवल कनोज की प्राप्त पै संतोष करना पड़ा और उसका मंत्री राज्य का अधिपति बन के उन सरदारों के आधीन करने में लगा जो लोग फिरे ऊवे थे॥ कितनो को उसने आधीन कर लिया परंतु खिज़रखां के साथ लड़ाई करने में हार गया जिस को तैमूरने मुलतान और दिबालपुर का अधिपति नियत किया था इक़बालखां ईसवी संबत् १४०५ में मारा गया॥

महमूद तुग़लक जो दुर्भाग्य से अबस हो गया था दिल्ली में आकर अपनी सामर्थ के अनुसार बादशाह ऊआ परंतु खिज़र-खां राजसिंहासन को अपना ही जानता था इस बल हीन बादशाह को उसकी राजधानी में खिज़रखांने दो बेर घेरा पर दोनो बेर जय न पाई और निरास होके चला गया उसके चलेजाने के पीछे महमूद तुग़लक अहेर को गया और वहां उसे तप चढ़ी जिसके कारण वह बीस बरस अप्रतिष्ठा पूर्वक राज्य करके मरगया इस बीस बरस के काल में उसने कभी राज्य नहीं किया यद्यपि कभी कभी वह सिंहासन पर बैठा उसी के साथ तुग़लकों का कुल गया उसके मरने के पीछे दो बरस के बीच में खिज़रखांने तीसरी बेर साठ सहस्र घोड़े

लेकर दिल्ली पर चढ़ाई की और उसको अपने आधीन करके ईसवी संवत् १४१४ में सिंहासन पर बैठा और मुसलमानो का पांचवां बादशाही कुल स्थापन किया जिस को सइयदें का कुल कहते हैं॥

जो सूबे दिल्ली के निर्बल होने के कारण से स्वाधीन हो गये थे उन में जोनपुर बड़े बखेड़े का कारण था जो उन सूबें के पास था जहां अवतक बादशाही आज्ञा मानी जाती थी और उसके फिर जाने के दिन से दिल्ली के प्रत्येक बादशाह को उसका आधीन करना आवश्यक था॥ इस समय में जो सइयदें का कुल स्थापन होने से पहले सब देश में हलचल फैल गया था और उसी समय जोनपुर पर तीन बेर चढ़ाई ऊई परंतु देनो ओर के कटक गंगाजी के देनो तीर पर आमना साम्हना करके बिना लड़े थक गये॥ इबराहीम शाह अपने बाप के मरने के पीछे जोनपुर के सिंहासन पर बैठा उसका बाप इस राज्य का स्थापक था॥ और यह इबराहीम शाह ऐसा प्रसिद्ध ऊआ कि सब हिंदुस्थान उसके होने से अपने को धन्य मानने लगा यद्यपि वह कई लड़ाइयें में लगा रहा परंतु प्रजा का सुख और विद्या की वृद्धि बऊत चाहता रहा॥ उसके समय में यह राज्य अत्यंत प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित रहा और उसके अगाड़ी दिल्ली के राज्य की कुछ भी चमत्कारी न रही इबराहीमने चमत्कार सहित चालीस बरस राज्य किया॥

॥ १३ अध्याय ॥

सइयद कुल—बिलोली लोधी का बड़ा अधिकार—उसने अलाउद्दीन सइयद को निकाला—और दिल्ली के सिंहासन पर बैठा—सुलतान ऊशंग मालवे का बादशाह—चितोड़—महमूदखां खिलजी-मालवे के सिंहासन पर बैठा—उसके गुण और उसकी चढ़ाई—वह गुजरात में गया ॥

सइयदों का कुल केवल ३६ बरस अर्थात् ईसवी संवत् १४-४१ से १४५० तक दिल्ली के सिंहासन पर बैठा ॥ महम्मद के कुल में होने के कारण उनको सइयद का नाम मिला था इस कुल के पहले बादशाह खिज़रखांने सात बरस से अधिक राज्य किया परंतु किसी के मन में न आवै कि एक आधीन मनुष्य सिंहासन पर बैठा इस बात को रोकने के लिये खिज़रखांने कभी अपने तईं बादशाह न कहाया और सदा तैमूर का अधिकारी कहलाने पर संतोष किया और उसी के नाम का सिक्का और खुतबा रक्खा और जब तक उसने राज्य किया उस सब काल में वह उन आस पास के छोटे छोटे सरदारों के आधीन करने में लगा रहा जो फिरे ऊवे थे ॥ कितनों को उसने आधीन करलिया परंतु बड़े बड़े लोग फिरे ही रहे ॥

उसके पीछे ईसवी संवत् १४२१ में उसका मुबारिक नाम बेटा सिंहासन पर बैठा उसने १३ बरस राज्य किया उस

काल में वह अपने पिता की भांति लड़ाइयों में लगा रहा॥ जसरतखां पंजाब का लुटेरा था उसके पास निज देशवालों की बड़ी सेना थी वह मुबारिक का बड़ा शत्रु था॥ उसके बध करने के लिये लगातार कई बेर सेना भेजी परंतु जय न पाई॥ जब बादशाही कटक उसे जा दबाता था तब पहाड़ों में जा छिपता था और सेना के उलटे फिरजाने पर वह वहां से निकलकर अच्छी से अच्छी बस्तु लूट लेजाता था वह ऐसा निडर होगया था कि निकट के राजाओं से बचन करके मिलाप कर लिया था इस कारण बादशाह को बहुत चिंता हुई॥ मुबारिक बड़ा सुशील और अक्रोधी था परंतु वह ऐसा दृढ़ चित्त न था जैसा उस समय में होना चाहिये था दिल्ली के सिंहासन पर बैठते समय जैसा छोटा सा राज्य उसने पाया था वैसा ही थोड़ासा छोड़ा उसको १४३५ संबत् ईसवी में कई हिंदुओंने मस्जिद में मार डाला जिन को उसने कभी कुछ दुख नहीं दिया था॥

सरवरुल मुल्कने जो मुबारिक की कटा करने का कारण था कटा किये हुवे बादशाह के पुत्र महम्मद को सिंहासन पर बैठाया उसने सरवरुल मुल्क को अपना बड़ा प्रधान नियत किया॥ उसने अपने हिंदू मित्रों को बड़े बड़े काम सोंपे और कुलीखां को अपना नायब नियत किया कई कुलीनों को जिन्होंने पहले बादशाह के समय में बड़ेबड़े अधिकार मिले थे निश्चय हुआ कि सर्ब सामर्थवान् प्रधान हमारी जागीरें लिया चाहता है इसलिये वे बादशाह से फिर गये॥ उनको आधीन करने के लिये कालेखां को भेजा॥ परंतु यह आप अपना प्रताप बढ़ाया चाहता था इसलिये यह उन से मिल-गया और दोनो ओर की सेना इकट्ठी होकर दिल्ली पर

चली॥ प्रधान की ओर वाले नित नित सामर्थ हीन होने लगे बादशाहने इन फिरे हुवें से मेल करना चाहा और निदान उनके कहने से अपने प्रधान को मरवा डाला॥ फिरेहुवे अधिपतियोंने बड़े बड़े काम आपस में और अपने मित्रों में बांट लिये और कालेखां को प्रधान का काम दिया इसी काल में बादशाह को अपने पिता के प्राचीन और उद्योगी बैरी जसरतखां पर चढ़ाई करनी पड़ी और उसके देश को लुटवाया महम्मद फिर दिल्ली आकर सुख भोग में लगा इसलिये राज्य निर्बल पड़गया॥ एक उद्योगी बिलोली लोधी नाम अफग़ान मुलतान का अधिपति बन बैठा परंतु बादशाही सेनाने जाकर उसको हरा दिया उसने फिर कटक इकट्ठा किया तब बादशाही सेना को हरा दिया और दिल्ली पर आने की धमकी दी परंतु उसने पहले बादशाह को कहला भेजा कि जो वह अपने बड़े मंत्री को मरवाडाले तो हम उसके आधीन हो जांय॥ बादशाहने निर्बलता के कारण यह बात अंगीकार की यह निर्बलता का चिन्ह और सबों के भी फिरजाने का कारण हुआ॥ उस समय में मालवे का बादशाह सेना लेकर दिल्ली से एक कोस पर आपड़ा तब बादशाहने बिलोली लोधी से सहायता मांगी इसलिये वह हिलते हुवे राज्य को बचाने के अर्थ शीघ्र आया और मालवे के कटक के साम्हने हुआ परंतु कुछ फल न निकला॥ मालवे के बादशाहने लड़ाई की रात को एक कुस्वप्न देखा इसलिये उसने डरकर मिलाप करने के हेतु प्रार्थना की और दिल्ली का बादशाह ऐसा सोचग्रस्त था कि जो जो मालवे का बादशाह उस से कहता वह सब अंगीकार करता तो मालवे की सेना से बचता परंतु वह बिलोली लोधी जो पहले की अपेक्षा अब अपने स्वामी को

तुच्छ जानता था वह बादशाह के बचनो को उल्लंघन करके मालवे की सेना पर चढ़गया चैार उनको सब रीत से हरा दिया बादशाहने इस सेनापति का नये नये अधिकार दिये चैार मुलतान का अधिपति नियत किया उसे चाहिये था कि जुसरतखां को आधीन करता परंतु उसने सेना इकट्ठी करके दिल्ली पर चढ़ाई की चैार उसे चार महीने तक घेरे रहा पर उसे न ले सका सइयद महम्मद दस बरस तक अप्रतिष्टा पूर्वक राज्य करके ईसवी संवत् १४४५ में मरगया चैार उसके पीछे उसका बेटा अलाउद्दीन बादशाह हुआ॥

अलाउद्दीन सइयद निज पिता से भी पराक्रम हीन था चैार प्रत्येक बात से जान पड़ा कि इस कुल में से शीघ्र राज्य नष्ट हो जायगा॥ इस पराक्रम हीन राज्य की आज्ञा केवल दिल्ली के आस पास थोड़े से कोस तक रह गई थी॥ चैार देश २ में स्वाधीन मुसलमान बादशाह तेरहसे न्यून राज्य न करते थे चैार राज्य बहुत डिग मिगा रहा था चैार अज्ञान बादशाह बदाऊं में अपने बाग़ के सुधारने में लगा हुआ था॥ बहलोली लोधी अबतक उसी राजधानी के लेने की इच्छा करता था॥ चैार बादशाहने राज्य के काम बिगड़े हुवे देख-कर उनका बिचार करने के लिये अपने मंत्रियों को इकट्ठा किया उन्होंने छल से मुख्य मंत्री हमीद को दूर करने का बिचार बताया चैार कहा कि सब उपद्रवों का मल यही है बादशाहने उनकी बात मानकर उसको बंद में डाल दिया इस आस पर कि उसे शीघ्र मरवा डालें परंतु उसने बदाऊं से भागकर दिल्ली में आ अपने स्वामी की संपत्ति को अपने हाथ में कर लिया चैार उसके सब स्त्री जनों को उसके पास भेज दिया चैार बहलोली लोधी को सिंहासन पर बैठने के लिये

बुलाया वह महाशय अब दिल्ली को चला और राज्य का प्रभू होकर सइयदों के कुल को नष्ट किया॥ इस बादशाहने बहलोली लोधी के लिये सिंहासन छोड़ दिया और प्रसन्नता से कुछ मासिक पर संतोष करके अपने आनंद के स्थान बदाऊं को चला गया वहां उसने अट्ठाईस बरस गांव में काटे सइयदों का कुल ईसवी संवत् १४५० में पूरा पड़ा॥

अब हम उन बातों का संक्षेप रूप से वर्णन करते हैं जो इस छत्तीस बरस के काल में गुजरात मालवे और खान देश के विषय में हैं॥ दिलावर सुलतान जो स्वाधीन और मालवे के राज्य का स्थापन करनेवाला था १४०५ ईसवी में मरगया और अपने बेटे सुलतान होशंग को राज्य देगया यह बादशाह बखेड़िया और चंचल था उसने अपने सत्ताईस बरस के राज्य में यद्यपि नित्य लड़ाई करता रहा पर एक बेर भी जय न पाई॥ संदेह है कि उसने अपने पिता को मरवा डाला हो और मुज़फ्फर शाह बादशाह गुजरात के ने जो दिलावर सुलतान का परम मित्र था इस पितृघातक पर चढ़ाई की और उसको कैद करके मालवे का अधिकार अपने एक सरदार को सोंपा॥ सुलतान होशंग कैद में अहमद के आधीन था जो गुजरात के बादशाह का पोता था परंतु मालवे में बखेड़े होने लगें और अहमदने अपने दादा को समझा कर होशंग को छुड़वा दिया उसने पीछे इस हापा के अपनी हान का बिचार किया होशंगने अपने बड़ों के देश का फिर अधिकार पाकर अपने आस पास वालों से बैर किया और बिशेष करके उसका ध्यान गुजरात की ओर लगा हुआ था वह उस समय अहमद शाह के अधिकार में था॥ हम उन युद्धों का वर्णन नहीं करा चाहते हैं जिन में पास पास के बादशाह लगे हुवे थे इन युद्धों से केवल

प्रजा का सुख जाता रहा और राज्यों की कुछ सामर्थ न बढ़ी परंतु यह वर्णन के योग्य है कि अहमदने एक समय मांडू को घेरा था जो मालवे में बड़ा दृढ़ गढ़ विंध्याचल पर है जिस के नीचे नर्बदा बहती है और होशंगने बिचारा कि यह गढ़ छह महीने के घेरने से न्यून में न टूटे गा इसलिये आप घोड़ों के व्योपारियों का भेष करके उड़ीसे तक लूटता हुआ गया और वहां के बादशाह के अच्छे अच्छे हाथी लूट लाया और मांडू में आकर देखा तो अहमद शाह उसे घेरे ही हुवे पड़ा था॥

हमने पिछले अध्याय में लिखा है कि ईसवी संवत् के चोदहवें शतक में जब चारोंओर लड़ाई झगड़े हो रहे थे तब एक हिंदू राज्य अर्थात् चीतोड़ का राज्य या मेवाड़ फिर स्वाधीन हो गया और दोसौ बरस स्वाधीन रहा होशंग के समय में वहां के सिंहासन पर कंबोह राज्य करता था जो अपने कुल में अत्यंत नामी था और कमल नीर का स्थापक॥ उसने पचास बरस से अधिक राज्य किया और अपने राज्य में अच्छे अच्छे गढ़ मंदिर और बिजय सूचक लाठें बनवाईं॥

सुलतान होशंगने अपने अंत का समय आता हुआ जान ईसवी सबत् १४३२ में अपने बड़े बेटे गज़नीखां को सिंहासन सोंपने की इच्छा की॥ उसको संदेह हुआ कि मेरा बड़ा प्रधान महमूदखां जो राज्य करने के अत्यंत योग्य है कोई दिन मेरे कुल को दूर करके आप बादशाह बन जाय इसलिये उसने महमूदखां से अपने कुल के सत्व बचाने के लिये सोगंध ली॥ होशंग मरगया और गज़नीखां बादशाह हुआ यद्यपि बड़े २ लोगोंने उसके बादशाह होने में बड़ी रोक टोक की परंतु उसको प्रधानने सिंहासन पर बैठाया पर बादशाह के चित्त में महमूदखां की ओर से संदेह हुआ और महमूद-

खांने बिचारा कि जब खामी को जिस की ओर का संदेह हो तो उसका बचना कठिन है क्योंकि संदेह होना मरने का चिन्ह है इसलिये उसने बादशाह को बिष दिलवाया और आप सिंहासन पर बैठकर ईसवी संबत् १४३५ में मालवे के बीच खिलजिओं का नवीन कुल स्थापन किया॥

गुजरात के मुसलमानी राज्य का स्थापन करनेवाला मुज़फ़्फ़रखां था जिस का हम पहले वर्णन कर चुके हैं उसने ईसवी संबत् १४११ में अपने पोते अहमदशाह को राज्य दे दिया जो अत्यंत योग्य महा उद्योगी बादशाह था उसके इक्कीस बरस आस पास के मुसलमान बादशाहों से या गुजरात के हिंदू राजाओं से जो अब तक आधीन नहीं ऊवे थे लड़ने में लगे॥ अपने राज्य के प्रारंभ में उसने एक नवीन राजधानी नगर साबरमती के तीर बसाया॥ जो अब उसके नाम के अनुसार अहमदाबाद कहलाता है॥

मुसलमान इतिहासवेत्ताने इस नगर की अत्यंत प्रशंसा की है और कहा है कि वह हिंदुस्थान में अत्यंत सुंदर नगर है॥ कदाचित् वह सब पृथ्वी में हो अहमदने दक्खन ओर जीतते जीतते महीम नाम उप द्वीप को जिसे अब बंबई कहते हैं जीत लिया और समुद्र के तीर पर देश लेते लेते दक्खनी राजा बहमनीवालों की सेना से साम्हना किया जो समुद्र तट पर उत्तर की ओर देश जीते आते थे और इस कारण से दोनो बादशाहों में लड़ाई ठहरी॥ अहमद शाहने सुना कि मालवे के राज्य को अन्याय करके महमूद खिलजीने लेलिया है इसलिये उस पर चढ़ाई की परंतु महमूद खिलजी की अत्यंत सावधानी के कारण यह चढ़ाई सुफल न भई और वह निडर होकर राज्य का खामी बना रहा॥ अहमद शाह ईसवी संबत् १४४३

में मरगया और उसका बेटा महम्मद शाह बादशाह हुआ उस-की प्रजा उसको कृपालु कहती थी परंतु वह इस अधिकार के अत्यंत अयोग्य था ॥ महमूद खिलजी मालवेवालेने उस बादशाह की निर्बलता के कारण अवसर पाकर गुजरात से उस दुख का पलटा लेने की इच्छा की जो उसने अहमद शाह से पाया था और एक लाख सेना लेकर गुजरात को चला॥ डरपोकना बादशाह भाग गया और अपने संपूरण थल के राज्य को छोड़-कर देव नाम उपद्वीप में शरण ली जहां कि उसके सरदारोंने उसकी स्त्री से उसको बिष संबत् १४५१ ईसवी में दिलवा दिया॥ गुजरात अब महमूद के हाथ लगा और जान पड़ा कि उसकी स्वाधीनता जाती रहैगी परंतु उसके वैसेही रहने का वर्णन आगे लिखें गे॥ अब हम दिल्ली के उन वृत्तांतों का वर्णन करें गे जो लोधी नाम जाति के अफगानो के समय में हुवे थे॥

॥ १४ अध्याय ॥

बहलोली लोधी—जोनपुर दिल्ली के राज्य में मिल गया—सिकंदर लोधी—इबराहीम लोधी—सुलतान बाबर—मुग़लों के कुल का स्थापन —मालवे का महमूद शाह गुजरात से निकाला गया —कंबाह मेवाड़ का राना—मालवे में आलमीगयासउद्दीन का राज्य—गुजरात के महमूद शाह की चढ़ाईयां—जहाजों पर पोर्तुगीज़ और गुजरातवालों की लड़ाई—मालवे का महमूद नाम पिछला बादशाह हार गया और उस राज्य की स्वाधीनता जाती रही ॥

ईसवी संबत् १४५० में बहलोली लोधी ने दिल्ली के राज्य को दबा लिया और अपने स्वामी अर्थात् बादशाह का कुछ मासिक करदिया जिस से वह बदाऊं में जाकर अपने बाग़ को सुधारा करै और अफगानों के कुल को स्थापन किया ॥ ये लोग सिंधु नदी के पश्चिम तट पर बसते थे और बहुधा हिंदुस्थान और पारस में व्योपार किया करते थे वे फीरोज़ के समय तक अत्यंत नीच गिने जाते थे उसने पहले ही पहल उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाई इस कुल में तीन बादशाह हुवे उन्होंने ७६ बरस

राज्य किया॥ बहलोल का इबराहीम नाम दादा फीरोज की सभा में गया था और वहां उसने अपना इतना बिस्वास बढ़ाया कि वह मुलतान का अधिपति गया या निदान वह राज्य बहलोली के हाथ लगा यद्यपि बहलोली के संबंधियोंने बहुत रोक टोक की॥ इस काम में उन्होंने दिल्ली के बादशाह के पास पुकार की और उसने बहलोली पर सेना भेजी परंतु उसके आधीन करने में जो जो उपाय हुवे वे सब उसकी बुद्धवानी से व्यर्थ हो गये बहबलोली की सामर्थ नित नित बढ़ती थी और दिल्ली की घटती जाती थी॥ हम उस रीत को लिख चुके हैं जैसे उसने दिल्ली का राज्य लिया इसलिये अब फिर उसका लिखना कुछ आवश्यक नहीं॥ उसके बादशाह होने में हमीद-खां कारण था इसलिये बहलोलीने उसे अपना प्रधान नियत किया परंतु उसकी सामर्थ को अधिक देखकर उसने गद्दी पर दृढ़ होते ही उस प्रधान को दूर किया॥ बहलोली सरीखा उद्योगी मनुष्य कभी नहीं ऐसे छोटे राज्य पर संतोष कर सक-ता है जैसा अब दिल्ली का रह गया था॥ उसने झट उन सूबों को आधीन करना बिचारा जो पहले बादशाहों के समय में फिर गये थे॥ कई छोटे छोटे सरदारों को उसने आधीन कर लिया परंतु जोनपुर के राज्य लेने में उसका बड़ा मन लगा हुआ था॥ हम आगे कह आये हैं कि इस सूबेने आज्ञा मान-नी छोड़ दी थी और अपने द्रव्य और चमत्कारी के अगाड़ी दिल्ली के राज्य को तुच्छ कर डाला था इसलिये दिल्ली के बादशाह की आंखों में जोनपुर खटकता था इस कारण बह-लोल के बादशाह होने के पीछे दो बरस के बीच इस में और जोनपुर के बादशाह में दो बेर लड़ाई हुई परंतु दोनों से कुछ निमटेरा न भया॥ थोड़े दिनो के पीछे महमूद शाह जोनपुर का

बदशाह मरगया तब और बादशाह होने के कारण झगड़ा उठा और बहलोली लोधीने फिर चढ़ाई की और हुसेनखां जो अब राज्य को दबा बैठा था चार बरस के लिये संधि करली॥ बहलोली पंजाब में लोगोंने सिर उठा रक्खा था उसका निमटेड़ा करने के लिये बहलोली वहां गया था तब हुसेनखांने सेना लेकर झटपट दिल्ली पर चढ़ाई की इस-लिये बहलोल को शीघ्र फिरना पड़ा कई युद्ध हुवे परंतु कुछ निमटेड़ा न भया॥ फिर कुछ काल के लिये संधि होगई पर वह भी थोड़े ही काल पहले की भांति रही॥ बहलोली के राज्य के अट्ठाईसवें बरस तक जोनपुर की सामर्थ दृढ़ रही यहां तक कि कुछ भी उस में अंतर न पड़ा परंतु अब उसके बिगाड़ का समय आगया था॥

सइयद अलाउद्दीन दिल्ली का बादशाह जिसे बहलोलीने सिंहासन से उतार दिया था बदाऊं में जाकर अपनी जागीर पर संतोष करके बैठा था वहां वह राज्य छोड़ने से अट्ठाईस बरस पीछे तक अर्थात् ईसवी संवत् १४७८ तक अपने चित्त की प्रसन्नता के कामों में लगा रहा॥ उसके मरने के पीछे हुसेन शाह जोनपुरवालेने उसकी जागीर लेली और देखा कि बहलोली अपनी राजधानी में नहीं है इसलिये दिल्ली के द्वार तक लूट करता हुआ चला गया॥ बहलोली शीघ्र फिरा और हुसेन शाह से कई लड़ाई लड़ा जिन में हुसेन शाह की बहुधा जय हुई फिर बचन होगये और गंगाजी दोनो राज्यों की सीमा ठहरी गंगाजी के पूर्व ओर के देश जोनपुर के हुवे और पश्चिम के दिल्ली के ठहरे॥ इस बचन पर हुसेन शाह अपने राज्य में निडर चला जाता था कि बहलोलीने एका एकी उस पर चढ़ाई की और उसे हरा दिया॥ दूसरी बेर

चढ़ाई ऊई जिस में दोनो ओारवालोंने कहा कि हमारी जय ऊई ॥ तिस पीछे फिर झूटी संधि ऊई ओार नवीन सीमा ठहरी परंतु बहलोली के छल का कांटा ऊसेन के मन में खटकता था उसने फिर सेना इकट्ठी करके युद्ध का प्रारंभ किया परंतु फरिश्तह नाम इतिहास में लिखा है कि अब ईश्वर की इच्छा थी कि जोनपुर का बिनाश होय ॥ एक बरस के बीच चार बेर युद्ध ऊआ ओार चारों बेर ऊसेन शाह की ही हार ऊई बहलोली अपनी जय के बढ़ाने में बऊत लगा रहा ॥ ऊसेन शाह इधर उधर भागता फिरा निदान अपने राज्य से निकाला गया ओार पराये देश में उसे शरण लेनी पड़ी ॥ बहलोली अपनी राजधानी में आया ओार जोनपुर के राज्य का सत्यानाश किया ओार उसके सूबों को फिर ८० बरस पीछे दिल्ली में मिलाया ओार यह देश बारबक नाम बादशाह के बेटे को दिया ॥

बहलोली अब बऊत हृद्ध होगया था इस कारण अपने राज्य का बिभाग अपने बेटों में करने का बिचार किया यह बात ऐसी थी कि जानो वह आगे को झगड़े की नीम रखना चाहता था ॥ उसका बड़ा बेटा उसके पीछे सिकंदर लोदी नाम दिल्ली के सिंहासन का अधिकारी ऊआ उसके छोटे बेटों को बरन उसके भतीजे को भी एक एक सूबह बिभाग में आगया ओार बहलोली ईसवी संबत् १४८८ में अड़तीस बरस राज्य करके मरगया ॥ वह बऊत सावधान ओार यशवान् ओार धर्मशील था ओार देश के प्रबंध में अति निपुण ओार बिद्यावानो को बऊत चाहता था ॥

सिंहासन के रीते होते ही बड़े २ मनुष्योंने मिलकर उपद्रव करना ठहराया ओार उनकी इच्छा यह थी कि सिकंदर लोदी की मा सुनार की लड़की थी इस मिस से उसे सिंहासन

पर न बैठनेदे परंतु उसने उनके विचार को तोड़कर सिंहासन पर बैठ २८ बरस राज्य किया उसने पहले अपने भाइयों को उन सूबों से निकालना विचारा जिन सूबों को फिर उसने बादशाही राज्य में मिला लिया यह काम उसने बिना परिश्रम करलिया॥ परंतु अपने भाई बारबक का जय करना सहज न था उसको जौनपुर का सूबह मिला था और उसने तरवार की सहायता से अपने राज्य को बना रखना बिचारा परंतु बादशाहने उसको हरादिया और बादशाहने उस समय की रीत के बिपरीत केवल उसका अपराध ही क्षमा नहीं किया बरन उसका राज्य उसे देदिया इस बचन पर कि आगे को वह आधीन बना रहै॥ उसने यह काम इसलिये किया कि जौनपुर का बादशाह हुसेन शाह जो राज्य से निकाला गया था उसकी मनो कामना पूरी न हो उस बादशाहने बिहार के सूबे को फेर लेलिया था और अपने बड़ों के शेष राज्य के लेने में परिश्रम करता था॥ परंतु सिकंदर लोदी के राज्य के छटे बरस में वह पिछली बेर हारा और एक लाख बादशाही सेना-ने बंगाले की सीमा तक उसका पीछा किया उस देश में मंद भागी बादशाहने शरण ली और अयशपूर्बक वहां ही मरा॥

सिकंदर लोदी वर्द्धमान चिरकाल के राज्य भर में अपनी सेना को सुधारता रहा परंतु बहुत दिन के फिरे हुवे सूबों के लेलेने के विचार में उसने केवल चंदेरी को जय किया उसकी लड़ाइयों और घेरों का वर्णन कुछ मनोहर नहीं दिखाई देता उन में देश उजड़ होगया और राज्य की कुछ भी सीमा न बढ़ी इसलिये बहुतेरी चढ़ाईयों का वर्णन छोड़े देते हैं॥ यद्यपि सिकंदर बुद्धिवान् और बीर बादशाह था परंतु हिंदुओं की देव पूजा का बड़ा शत्रु था और देवमंदरों को ढवा कर

उनके मसाले से मसजितें बनाईं मथुरा तीर्थ में जमना की सीढ़ियों के साम्हने मसजित् बनवाई और बाजार बसाये निदान जमनाजी के न्हाने से लोगों को बंध किया और याचिकों के भद्र करनेवाले नाईयों को दंड दिया उसने अपनी हिंदू प्रजा के संग वैसी ही रीत रक्खी जैसी और मुसलमान हिंदुस्थान के जय करनेवाले रखते थे॥

सिकंदर लोदी के मरे पर ईसवी संवत् १५१७ में उसका पुत्र इबराहीम लोदी बादशाह हुआ उसके अभिमान से बडे २ मनुष्योंने उसका साथ छोड़ दिया और उसके कुल का नाश करने के लिये उपाय किया उन्होंने उसके भाई जलालखां को जोनपुर का राज्य लेने को बहकाया यद्यपि उसने उस राज्य का अधिकार पाया परंतु उसके मित्रोंने उसका साथ छोड़ दिया इसलिये उसे गुवालेर में शरण लेनी पड़ी यह छोटासा राज्य दिल्ली के निकट था जो सो एक बरस से पहले दिल्ली से अलग होगया था बादशाहने चढ़ाई करके उसे जीत लिया जलालखां भागकर प्रथम मालवे के बादशाह के पास सरण लेने को गया फिर दक्षण की ओर भागा परंतु गंधवाने से भागते हुवे उसे पहाड़ियोंने पकड़ के उसके भाई को सौंप दिया जिस ने उसे हांसी में बंध रखने की आज्ञा दी परंतु उसके रखवालों को मार्ग में उसको मारने के लिये जता दिया॥ मुसलमान इतिहासवेत्ता कहता है कि राज्य में क्या क्या भलाई हैं कि जिन के लिये मनुष्य अपने भाई के मारने को उपस्थित होता है फिर बादशाह अपने सूबेदारों पर ऐसा संदेह और अन्याय करने लगा कि उन में से कोई फिर गये॥ इसलामखां करा नाम सूबे के अधिपतिने अपने बाप और भाई पर अन्याय होता हुआ देख बादशाह के कहने को उलंघन किया औरों को

अपने साथ मिलाकर चालीस सहस्र सवार इकट्ठे किये इन फिरे ऊवेंाने इसलामखां के बाप के छोड़ देने के बचन पर शस्त्रों के रखदेना अंगीकार किया परंतु बादशाहने इस बात का अभिमान पूर्वक निषेध किया॥ एक युद्ध ऊआ जिस में इसलामखां मारागया और उसकी सेना हार गई तिस पीछे बादशाह राजसभा के लोगों पर अत्यंत क्रोध करने लगा और बहादुरखां बिहार के सूबे के अधिपतिने अपने ताईं बादशाह कहवाया और एक लाख सेना इकट्ठी करके कई बेर बादशाही कटक के हरा दिया उसी काल में दौलत-खां मुलतान के लिये इबराहीम लोदी के संग में सुख और बचने की आस न देख बाबर के जो मुग़लों का बादशाह काबुल में था हिंदुस्थान की जय करने के लिये बुलाया॥ परंतु उसकी चढ़ाई से पहले इबराहीम के भाई अलाउद्दीनने जो भाई के पास से भागकर काबुल के चला गया था एक कटक लेकर दिल्ली पर चढ़ाई की और बादशाही सेना के संपूर्ण रीत से हरा दिया परंतु मंद भाग से अपने कटक के लूट के लिये जुदे जुदे होकर जाने की आज्ञा दी और इबराहीमने अपनी शेष सेना इकट्ठी करके संपूर्ण जय प्राप्त की॥ दूसरे बरस में सुलतान बाबर सेना लेकर इबराहीम पर चला पानी-पत में एक लड़ाई ऊई जिस में इबराहीम मारा गया और उसकी सेना हार गई और ईसवी संवत् १५२६ में हिंदुस्थान का राज्य मुग़लों के कुल में आया॥

जब अफ़ग़ानो का कुल दिल्ली में राज्य करता था उस समय के मालवा गुजरात मेवाड़ का वर्णन करते हैं ये देश उस समय में पचासेक बर्ष से अधिक अधिक स्वाधीन रहे थे॥ जान पड़ता है कि खानदेश का राज्य बारी बारी से दोनो पराक्रमी

आस पास के राज्य मालवे और गुजरात के आधीन सदैव रहथा था जिस समय बहलोली लोदी ईसवी संबत् १४५० में दिल्ली के सिंहासन पर बैठा था तब अहमद शाह गुजरात-वाले के स्थानापन्न निर्बल महम्मद शाह के महमूद मालवेवालेने उसकी अत्यंत दूर सीमा तक भगा दिया था और मेवाड़ के सिंहासन पर उस समय नामी कंबोह राज्य करता था ॥

गुजरात के सरदारों के उन देश में उस शत्रु के चले आने से अत्यंत लज्जा ऊई और उन्होंने अपने बादशाह की बेगम के जिस का कि हम वर्णन करचुके हैं बादशाह के विष देने का बिचार बताया उसके बेटे कुतबशाह के सिंहासन पर बैठाकर अपने स्वाधीन होने के लिये बड़ा उद्योग किया महमूद मालवे-वाला गुजरात के लूटता लूटता उसकी राजधानी अहमदाबाद तक पऊंचा उससे डेढ़ कोस पर लड़ाई ऊई मालवे की सेना संपूर्ण रूप से हार गई और देश खाली करदेना पड़ा॥ कहते हैं कि महमूद मालवेवाले की केवल यही हार ऊई थी जो हिंदुस्थान के मुसलमान बादशाहों में बड़ा बीर था जब उसने देखा कि हम हार गये तब तेरह सवार लेकर और मार्ग से हरएक रोक टोक के मिटाता ऊवा गुजरात के बादशाह के तंबू की ओर चला और बादशाही साहित्य के लेलिया यह लड़ाई ईसवी संबत् १४५२ में ऊई थी यह जान पड़ता है कि महमूद उस समय में उत्तर हिंदुस्थान में विना रोक टोक फिरता था क्योंकि वह दूसरे बरस उत्तर की ओर बयाने तक गया और अपने बेटे के अजमेर का अधिपति किया फिरते समय पहले दक्षण के बहमनी कुल के बादशाह पर चढ़ चला और फरि खान देश पर अंत में चितोड़ के राना पर उसने चढ़ाई की॥

ईसवी संवत् १४५६ में महमूदने कुतब शाह गुजरातवाले से बिचार किया कि हम आपस में मिलकर मेवाड़ पर चढ़ाई करें और बचन ठहरा जय के पीछे वहां के सूबे समान बांट लें इसीलिये उसी बरस चंपानीर में बचनपत्र लिखा गया और दूसरे बरस दोनो कटक एक २ ओर से मेवाड़ पर चले कहते हैं कि कंबोह गुजरात की सेना से हार गया और चौदह मन सोना देकर मिलाप कर लिया॥ अब मालवे का कटक मेवाड़ में गया और मुसलमान इतिहासवेत्ता कहता है कि राणाने महमूद के आधीन होना अंगीकार किया परंतु तिस पीछे एक युद्ध ऊआ उस में दोनो ओरवालों में से एकने भी जय प्राप्त न की और दोनो को भागना पड़ा परंतु इस वृत्तांत के होने का दिन कोई ईतिहासवेत्ता कुछ लिखता है कोई कुछ और इस संदेह का दूर करना अति कठिन है अबुलफज्ल और राजपूत इतिहासवेत्ता मालवे और गुजरात के बादशाहों के बचनपत्र को कहते हैं कि ईसवी संवत् १४४० में ऊआ था जो मेवाड़ के जय करने और बांटने के बिषय में था और कहते हैं कि हिंदू बीरने इस मिले ऊवे कटक का सामना एक लाख सेना पैदलों को लेकर मालवे के मंडल में किया और उनको संपूर्ण रूप से हराकर महमूद को पकड़कर चीतोड़ में लेआया और उदारता पूर्वक बिना कुछ द्रव्य लिये केवल उसे छोड़ ही नही दिया बरन उसे बऊत द्रव्य और साहित्य भी दिया॥ परंतु फरिश्ता जो उन युद्धों का वर्णन अच्छी भांति लिखता है वह कहता है कि ईसवी संवत् १४५६ के पहले कोई दंगा बखेड़ा नही ऊआ और महमूद की हार की कुछ बात नही लिखता है और उसके लिखने से जाना जाता है कि जिस लड़ाई का वह वर्णन करता है और जो कि महमूद

और कंबोह में ऊई थी उसे कुछ हार जीत की निश्चय न ऊई॥ अलीमहम्मदखां भी अपने गुजरात के इतिहास में दोनो मुसलमान बादशाहों के मिलाप होने का वृत्तांत ईसवी संबत् १४५६ में लिखता है इसलिये लड़ाई का दिन ठीक निश्चे नही हो सकता है परंतु जो अबुलफज़ल और राजपूत इतिहासवेत्ता के लिखे को मानें तो पूरी जय ऊई थी वह पहली जय थी जो हिंदुओंने कई सौ बरस पीछे मुसमानों से पाई थी और मेवाड़ के राणाने उस जय को स्मरण रखने के लिये चितोड़ में बड़े ऊंचे स्थान पर जयस्तंभ बनवाया॥ जो नगर के बीच में अति सुंदर स्थान था और इस स्तंभ के बनवाने में दस बरस लगे थे॥

जाना जाता है कि महमूद तिस पीछे मेवाड़ पर लगातार चढ़ाई करता रहा एक बेर उसने मेवाड़ पर उत्तर की ओर से चढ़ाई की और फिर वह मंडल गढ़ की ओर गया जो चितोड़ से पंद्रह कोस है और थोड़े ही काल पीछे वह उस दृढ़ गढ़ पर सेना लेकर चढ़ा तिस को कंबोहने बनाया था और वह कमल नीर कहाता था वह बड़ा उद्योगी था इसलिये सदां रणभूमि में रहता था॥ ईसवी संबत् १४६१ में यह समाचार सुने कि दक्षण के सिंहासन पर एक लड़का बैठा था और देश में कई धड़े हो गये थे उसने उस देश को जय करने का बिचार किया और राजधानी बीडर नगर की ओर चला उस नगर के निकट एक युद्ध ऊआ दिन के अंत में महमूद की जय ऊई परंतु ऋतु के कारण हटना पड़ा दूसरे बरस फिर दक्खन पर चढ़ाई की॥ बीडर के प्रधानोंने अपने लड़ने की सामर्थ न देख गुजरात के बादशाह से सहाय के लिये प्रार्थना की और वह बादशाह अपना कटक ले मालवे की ओर आया और

दक्खनवालों की सहायता करने लगा महमूद दौलताबाद के देश को लूटकर आप अपने देश के बचाव के लिये वहां से चला गया और यह लड़ाई ईसवी संवत् १४६७ में समाप्त भई॥ और दक्खन के बादशाहने महमूद से यह बचन ठहराया कि आगे चढ़ाई न करो तो हम करोला अथवा ईलचीपुर तुम्हें दे दें इन बचणों की लिखा पढ़ी के दो बरस के भीतर महमूद अड़सठ बरस की अवस्था में और चोंतीस बरस राज करने वाला मरगया मालवे के बादशाहों में वह सब से अधिक सामर्थ और बलवान् था और राज्य को उसने अधिक सोभा दी यद्यपि उसने बहुतसे मंदर ढबाकर मसजितें बनवाईं थीं तथापि वह अपनी हिंदू और मुसलमान प्रजा में मिला चाहता था कोई ऐसा बरस नहीं बीता था कि वह रणभूम को न जाता था और तंबू उसका घर और रणभूमि उसका सुखदाई स्थान होगया था॥

अगले वर्ष में अर्थात् इसवी संवत् १४६८ में महमूद का परम मित्र राना कंबोह चितोड़वाला भी मरगया उसने अपनी बीरता और बुद्धवानी से उस देश की ऐसी शोभा की थी कि वैसी कभी नहीं हुई थी और वह पचास बरस के राज्य में अपने बेटे के हाथ से मारा गया यद्यपि बाप की निर्बलता के कारण उसके हाथ राज्य शीघ्र ही लगता परंतु राज्य के लोभ से उसने सदैव को यह कलंक का टीका लिया इस अधर्म के छुपाने के लिये इतिहासवेत्ताने उसका नाम राज्यकुल की बंशावली में नहीं लिखा परंतु उस पितृघातक का अधर्म छुपाने से और भी प्रघट हुवा॥

सूरबीर महमूद के मरने के पीछे चंचल सुभाव बादशाह अर्थात् उसका बेटा गयासुद्दीन मालवे के सिंहासन पर बैठा

उसने बादशाह होते ही अपने बड़े मनुष्यों की बड़ी जोनार की और उन्हें यह बात समझाई कि मैं चोंतीस बरस से अपने प्रसिद्ध पिता के साथ सदैव युद्धों में रहा हूं अब मैं यह चाहता हूं कि पिछली अवस्था सुख में काटूं और राज्य का अधिकार और प्रतिष्टा अपने लिये रक्खूं॥ और अपने पुत्र अबदुलकादिर को सब देश का प्रबंध सोंपूं इसी कारण उसका पुत्र मुख्य मंत्री प्रसिद्ध हुआ और बादशाहने जो पंद्रह सहस्र स्त्री इकट्ठी की थीं उनके साथ केलि करने के लिये अंतःपुर में गया॥ इस स्त्री सभा में बादशाह की प्रतिष्ठा का बड़ा बिचार था बादशाह के पास तुरक जाति की ५०० स्त्रियां धनुष बान लिये पुरुष बेष किये निज चोकी में रहती थीं और ५०० हफ्शने बंदूक बांधे चोकी में रहती थीं हिंदुस्थान के मुसलमानी इतिहास में यह बात बड़ी अचरज की है कि तेतीस बरस तक इस बादशाहने अंतःपुर में केलि की और उस समय में कोई उपद्रव न उठा उसके राज्य भर में कोई बात लिखने के योग्य नहीं है केवल इतना ही कहना बहुत है कि जब उस बादशाह के अंत समय के दिन निकट आते जान पड़े तब उसके बेटेने जिसने इतने दिन राज्य का प्रबंध चलाया उसने भाई के बादशाह होने के भय से उस पर शस्त्र उठाया और राजमंदर तक उसका पीछा करके उसे मारडाला और थोड़े दिनो पीछे वृद्ध बादशाह भी राजमंदर में मरा पाया और उसके बेटे अबदुलकादिर पर जो बहुधा नाजिरुद्दीन कहाता था बादशाह के मारने का संदेह हुआ और आप सिंहासन पर बैठा और उसने १२ बरस तक राज्य किया॥ और उसका नाम बिषयी अर्धमियों में प्रसिद्ध हुआ और ईसवी संबत् १५१२ में ज्वर से मरगया और अपने तीसरे बेटे महमूद नाम दूसरे को मालवे

का बादशाह किया और यह वहां का सबसे पिछला बादशाह था॥

आलसी गयासुद्दीन के राज्य में और उसके मालवे के अधिपति अधर्मी बेटे के समय में उनका प्रतिपच्छी गुजरात का राज्य पहले महमूद शाहके अधिकार में था गुजरात देश में पहला महमूद राज्य करता था जिसने ईसवी संबत् १४५९ में सिंहासन पर बैठ कर ईसवी संबत् १५११ तक अर्थात् चिरकाल ५२ बरस तक राज्य किया॥ और जैसा उस समय में इसका राज्य चमत्कार से प्रसिद्ध था वैसा ही आलस्य में मालवे का॥ परंतु उसकी लड़ाइयों का वर्णन संक्षेप से लिख सकते हैं॥ वह ईसवी संबत् १४६९ में उस गिरनार अर्थात् गिरपुर को गया जो गुजरात का दक्खन भाग सूरत में था और यह हिंदुस्थान के सब गढ़ों में दृढ़ गढ़ अनुमान किया जाता था और इसके जय करने की दिल्ली के बादशाहों को बड़ी अभिलाषा थी और जो परंपरा की बातमाने तो प्राचीन हिंदुओंने भी उसपर बहुत सी चढ़ाइयां की थीं परंतु उसे कोई जय न कर सका अब उसका जय होना गुजरात के बादशाह के लिये रहा था॥ कहते हैं कि उन्नीस सौ बरस तक उस में हिंदू राजाओं के कुल का अधिकार रहा महमूद शाहने इस देश पर तीन बेर चढ़ाई की परंतु पहली दो चढ़ाइयों में कहते हैं कि उस राजाने आधीनता की और भेंट दे अपने बैरी को बिदा किया परंतु महमूद को गढ़ और देश की जय करने के भिन्न और किसी बात से संतोष न हुआ और थोड़े ही काल में तीसरी चढ़ाई करने का मिस मिल गया और निदान गिरनार उसके हाथ आ गया और राजा बहुत बिवाद के पीछे मुसलमानी मत में आ गया और गुज-

रात के बादशाहने उस सब देश को अपने मत में लाने के लिये एक नगर बसाया और उसका नाम मुस्तफाबाद रक्खा और मुसलमानी मत की प्रवृत्ति के लिये अपने मत के बड़े बड़े मनुष्य बसाके॥

ईसवी संवत् १४७२ में गुजरात का बादशाह कच्छ देश को चला और उसे जय करलिया और वहां से आगे बढ़ के सिंधु के देश को संपूर्ण रीत से आधीन कर लिया और सिंधु नदी तक अपने राज्य की सीमा बढ़ाई॥ थोड़े काल पीछे एक बुद्धवान मुसलमानने जिसने कि दक्खन के बादशाहों की सेवा में बज्जत धन इकट्ठा किया था बादशाह से पुकार की कि ऊरमज जो फारस में है उसकी ओर फिरती बेर जगत नगर निवासियोंने मुझे लूट लिया यह स्थान हिंदुस्थान की परम सीमा पै है और द्वारका के समीप है और समुद्र के मार्ग से लूट लेने के लिये अच्छा स्थान है॥ इस बुद्धवान मनुष्य की हान होने से बादशाह ने अपनी सेना को चमकाया यद्यपि वह तीन बरस से लड़ते लड़ते थक गई थी परंतु फरिश्ता लिखता है कि जिन अधम ब्राह्मणोंने बुद्धवान मुसलमान को सताया था उनके ऊपर सेना चढ़ाई करने को भेजी और जगत नगर आधीन ऊआ और वहां के रहनेवाले बैटे नाम स्थान को भाग गये यह कैंबे के मुहाने का टापू है और समुद्र के ठगों को जितनी दृढ़ता चाहिये उतनी सब इस टापू के रहनेवालों में थी यद्यपि वह टापू तीन कोस के फेर में भी न था परंतु जब बादशाह बेड़े के बनाने में लग रहा था तब उस टापू के रहनेवालोंने बाईस बेर से न्यून चढ़ाई न की थी निदान वह टापू जय करलिया॥

ईसवी संवत् १४८२ में महमूद एक बड़ा कटक लेके चंपानीर को आधीन करने के बिचार से चला यह नगर हिंदुओं

का एक छोटा सा स्वाधीन राज्य था और उसकी राजधानी एक ऊंचे पहाड़ पै थी और उसका सब ओर कोट बंधा हुआ था और वहां का अधिपति बैनीराय रजपूत था और यह ऐसे पुराने कुल में से था जो इस की उत्पत्ति इतिहास और लोगों के कहने से नहीं जानी जाती है॥ गुजरात के बादशाहने उसे सब ओर से घेर लिया बाहर भीतर उसकी रक्षा के लिये सात सहस्र रजपूत थे परंतु गुजरात के कटक की स्वरता से निदान यह दब गया बादशाह की बीरता और दृढ़ता से वह कटक भी बीर और दृढ़ होगया था बहुतसे राजपूत मारे गये और निदान बैनी राय पकड़ा गया उसको और उसके मंत्री को मुसलमान करने के लिये बहुत उद्योग किया परंतु बादशाह की युक्तैं अकारथ गईं निदान बादशाहने उन दोनो को मरवा डाला यह बात बड़ी अचंभे की है कि यद्यपि चंपानीर गुजरात के बीचों बीच है और उसकी राजधानी गुजरात की राजधानी से दक्खन की ओर पैंतीस कोस से न्यून है परंतु गुजरात के राज की स्थिति होने से चंपानीर सा गढ़ अस्सो बरस तक स्वाधीन रहा इसी से जान पड़ता है कि मुसलमानों का दबाव हिंदुस्थान पर थोड़ा था बादशाहने उसी के पास एक नया नगर बसाया इस कारण कि हिंदू उसे फिर न दबालें और उसका नाम महमूदाबाद चंपानीर रक्खा॥ और जान पड़ता है कि फिर बादशाह अपनी प्राचीन राजधानी और इस नगर में बारी बारी से रहने लगा॥

इस बादशाह के समय में पुरतगेजोंने ईसवी संबत् १४९८ में पहले ही पहल हिंदुस्थान में स्थान लिया सो हम इस बात का वर्णन आगे बिशद करके कहैं गे और यहां केवल फरिश्ते के अनुसार ही कहना बहुत है कि यूरप के म्लेच्छोंने जो

कई बरस तक समुद्र के अधिपति रहे थे मालवे के निकट नदी के तीर पै पक्षंचने से दस बरस पीछे गुजरात के किसी बंदर में बसना चाहा॥ मिसर देश के ममलूक नाम बादशाहने हिंदुस्थान में उनके आने से डाह खाकर उनका सामना करने को जहाजों का एक बेड़ा भेजा और वह गुजरात के उस कटक से मिला जिस का अधिपति मलिक अयाज़ था वे दोनो कटक मिलकर माहिम से जिसे पीछे बंबई कहने लगे वहां से चल के पुरतकियों के जहाजों से लड़े॥ मुसलमान इतिहासवेत्ता कहता है कि शत्रुओं का जहाज डूबा उस में कोट रुपये से न्यून द्रव्य न होगा चार सौ तुरक और तीन चार सहस्र पुरतकेज मारे गये परंतु पुरतकेजों का इतिहासवेत्ता कहता है कि इस लड़ाई में हमारे देसवालों के इक्यासी मनुष्य मरे और हमारे शत्रुओं के छह सौ॥ ईसवी संबत् १५११ में महम्मद शाह मर गया कि जिस को आयु भर में अनेक उपद्रव होते रहे और सब बादशाहों के नाम से इसके नाम को बगर्रा की पदवी विशेष थी और वह जैसा गाय के सींग मुड़े हों हैं इस भांति अपनी मूछों को मुड़वाया करै था गुजरात की बोली में बगर्रा गाय को कहते हैं इसीलिये उसे बगर्रा पदवी दी थी उसके पीछे उसका बेटा मुजफ्फरखां बादशाह हुआ॥

ईसवी संबत् १५१२ में मालवे के सिंहासन पर दूसरा महमूद बैठा था परंतु उसके बादशाह होते ही बड़े मनुष्योंने उस-राज्य में बिघ्न डाल दिया और उसका साथ छोड़ शाहाबखां को सिंहासन पर बैठाया इस आपत्य के समय में केवल एक सरदारने उसकी सहायता की और यह सरदार मेदनीराय हिंदू था और उसने बादशाह की सहायता के लिये अपना कटक

इकट्ठा कर बादशाह को शत्रुओं से जीतने के योग्य किया इस कारण वह बादशाह को बहुत प्रिय होगया और मुख्य मंत्री ठहरा जिस कारण उसको बहुत अधिकार प्राप्त हुआ था और उसने सब कामों पै अपने धर्म वालों को अधिकारी किया और मुसलमान सरदार इन अधिकारों में अपना स्वत्व समझे थे उन्होंने इस प्रबंध से बड़ा बुरा माना परंतु यह उनकी उद्दतता का फल था और इसी कारण मुसलमान इतिहासवेत्ताने मेदनीराय की बहुत बुराइयां लिखी हैं परंतु जान पड़ता है कि वह बहुत अच्छा प्रबंध करनेवाला था पर उसमें केवल हिंदू होने का दोष था ॥ मुसलमान उसकी निंदा किया करैं थे निदान इस कारण बादशाह का मन उससे फिर गया और बादशाहने उसके कटक के चालीस सहस्र रजपूत छुड़ा दिये बरन अपने प्रधान के मारने के लिये एक बधिक को आज्ञा दी और वह अपने प्रारब्ध से दो तीन घाव खाके भाग गया ॥ कटकने बादशाह का यह आचरण देख अपने देशवाले अधिपति को बादशाह करने का बिचार किया परंतु मंत्रीने उन्हें संभावित उत्तर दिया यद्यपि बादशाहने हमारे प्राण लेने का उद्योग किया था परंतु हम को उसके ऊपर शस्त्र उठाना उचित नहीं अपने बचने के लिये अनेक उपाय करैं परंतु अपने स्वामी पर चढ़ाई करना योग्य नहीं इसी कारण उसने अपने कटक को अपने अपने घर जाने की आज्ञा दी यह बात सुनके उसके स्वामी धर्म का निश्चय हुवा और उसे फिर कर अपना अधिकारी किया परंतु मंत्री अपने जी की रक्षा करना उचित जान कभी बादशाह के साम्हने अकेला न गया इस बात से फिर बादशाह का मन खट्टा हुवा और एक रात अपने स्थान माडू से थोड़ेसे सवार और कुछ साथी लेकर

अकस्मात चल दिया और जब तक गुजरात की सीमा पर न पहुंचा तब तक कहीं न ठहरा॥

यह बात ईसवी संवत् १५१७ में हुई॥ मुजफ्फर शाहने महमूद शाहको अपने देश में भाग आने का कारण सुनके अच्छी भांति से उसकी सहायता करनी बिचारी परंतु हिंदुओं की बीरता और बल से उसके मन में भय था॥ मेवाड़ गुजरात और मालवे की उत्तर सीमा पर है उस समय वहां का राज्य सिंगा राना करता था और उसके समय में देश बहुत सुखी था अस्सी सहस्र सवार और सात बड़े प्रतापी राजा एक सौ तेरह छोटे सरदार और पांच सौ लड़ाई के हाथी उसके साथ युद्ध को जाया करते थे और उसके देश के इतिहासवेत्ता कहते हैं कि मालवे और दिल्ली के कटक को अठारह बेर हराया उत्तर की ओर पीली नदी जो बयाने के निकट है पूरब की ओर सिंध नदी दक्खन की ओर मालवा उसके राज्य की सीमा थी पश्चिम की ओर पहाड़ों की रोक से चढाई न हो सकती थी इसी भांति संपूर्ण राजपूताने पं राज्य करता था और उसके पास के मुसलमान बादशाह उसका बहुत भय करते थे और वे इस बात से डरते थे कि मेदनीराय उसका एक देशी कहीं मालवे पर अधिकार न पाजाय और रजपूत इकट्ठे होकर पहले गुजरात का सिंहासन लें पीछे हिंदुस्थान के बीच का राज्य स्थापन न करैं॥ इस कारण मुजफ्फरखांने एक बड़ी सेना इकट्ठी की और महमूद को साथ ले मांडू को चला जो मालवे की राजधानी और भीम राय मेदनी राय के बेटे के पास था और यह ठहराया कि जब तक राणा सिंगा सहायता न करने पावै तब तक उसे जीत लूं॥ मेदनी राय को अपने बचाव के लिये अपने स्वामी के साम्हने रणभूमि में आना

पड़ा और चीतोड़ के राणा से मिलना पड़ा परंतु मांडू को मेवाड़ की सेना के आने से पहले जीत लिया था और उन्नीस सहस्र रजपूत मारे गये थे ॥ सुलतान महमूदने निज राज प्राप्त करके अपने छुड़ानेवाले को सिष्टाचार पूर्वक भोजन करवाया बरन उसकी टहल में रहा मुजफ्फरखां उसकी सहायता के लिये बहुतसी सेना छोड़ अपने देश को चला गया परंतु महमूद के भाग में सुख नहीं था ईसवी संवत् १५१९ में वह अपनी सेना और गुजरात के कटक को लेके राना सिंगा पर चढ़ा यद्यपि उसकी सेना याचा करते २ थक गई थी और शत्रु की सेना परिश्रांत थी परंतु महमूदने लडने के लिये हट किया और संपूर्ण रूप से हारा और यह अपने शरीर से जैसा बीर था बैसा ही मूढ़ था जब उसे हार होती जान पड़ी तब दस सवार लेकर जो उसके साथ रहगये थे शत्रु से लडने को चला और घायल हो उसके हाथ लगा और यशस्वी सिंगा आप उसके घाव देखने को गया और जब उसके घाव अच्छे होगये तब बिना कुछ लिये उसकी राजधानी को भेज दिया परंतु उसके अप्रबंध के कारण सूबेदार स्वाधीन होगये थे और जब फिर कर आया तो उसने देखा कि मेरा अधिकार तुच्छ हो गया ॥

मुजफ्फर शाह मांडू से गुजरात को फिर आया और मेवाड़ के राजपूतों से पहले की भांति बैर रखता रहा तीनेक बरस तक युद्ध रहा और इस काल में दोनो देशों के खेत बारी बारी से ऊजड होते गये और केवल प्रजा के खेद के भिन्न और कुछ फल न निकला जान पडता है कि राना संगा की जय हुई उसने एक बेर अहमदाबाद तक आकर शत्रु को कोट के भीतर हरा दिया ॥ निदान दोनो बादशाहों में मिलाप

होगया गुजरात का बादशाह इस मिलाप से पांच बरस पीछे ईसवी संबत् १५२६ में मरगया और उसके पीछे प्रथम उसका जेष्ट पुत्र सिंहासन पर बैठा और चार ही महीने के बीच मारा गया तिस पीछे उसका लघु पुत्र बादशाह ऊआ और कई महीने पीछे उसका भाई बहादुरशाह उसे निकाल आप बादशाह हो गया ॥ यह बादशाह पहले निज पिता की अप्रसन्नता के कारण हिंदुस्थान के देशें में भ्रमता फिरा सो अब प्रजा और प्रधान लोगें की सहायता से सिंहासन पर बैठा ॥

अब मालवे के स्वाधीन राज्य का वर्णन पूरा ऊआ और बहादुर शाह गुजरातवाले का भाई मालवे में भाग गया और उसके ऊपर अज्ञान महमूदने बऊत छपा की और उसको राज्य लेने के लिये उपाय करने की आज्ञा दी ॥ बहादुर शाह जानता था कि महमूद पर हमारे कुल के लोगेंाने बऊत छपा की थी इसलिये वह उसके छतघ्नीपने पर क्रोध करके पलटा लेने के लिये उपस्थित ऊआ पश्चिम की ओर यह बखेड़ा मच ही रहा था और उसी काल में प्रारब्धहीन महमूदने अज्ञानता से मेवाड़ के राना से बैरभाव किया और वह शीघ्र गुजरात के बादशाह से मिल गया महमूदने अपने सेनापतियों को इकट्ठा किया और उन्हों को बड़ी बड़ी पदवी दी परंतु उस कठिन काल में उसकी इस बड़ी उदारता करने से अधिक अविश्वास उपजा और वे भी उसके शत्रु होगये ईसवी संबत् १५२६ में गुजरात के कटकने मांडू पर चढ़ाई की और वहां पऊंचते पऊंचते सब ओर से बादशाह का संग छोड़ बहादुर शाह में जा मिले सब लोगेंा का मन महमूद की ओर से फिरा ऊवा था इसलिये उसे अपनी राजधानी में छुप रहना पड़ा ॥ केवल तीन सहस्र मनुष्य उसके साथ रह गये थे

और उनसे ही उसने राज्य बचाने के लिये बहुत साम्हना किया परंतु गढ़ के लोग नित नित की चढ़ाई के कारण व्याकुल होगये और परिणाम वे आधीन हुवे और मई महीने की बीसवीं को ईसवी संवत् १५२६ में गुजरात के झंडे मांडू के बड़े कोट पर फहराये बहादुर शाह इस आधीन बादशाह पर अच्छी भांति अनुग्रह किया चाहता था बरन वह उसका देश फिर उसी को फेर देना चाहता था परंतु अभिमान से उसने बादशाह को मोंह के ऊपर ही बुरा कहा इसलिये वह और उसके सातों बेटे कैद हुवे और चंपानीर को भेजे गये मार्ग में थोड़ेसे भीलोंने दोहद नाम स्थान पर महमूद के लेजानेवालों पर चढ़ाई की और गुजरातियोंने इस डर से कि बंदुवे भाग न जावें उसको और उसके सब बेटों को मार डाला॥ महमूद खिलजी मालवेवाले के कुल में केवल एक बेटा बचा और यह देश सौ बर्ष से अधिक स्वाधीन रहकर उसी बर्ष से गुजरात के राज्य में मिल गया जिस बर्ष में मुगल का कुल दिल्ली के सिंहासन पर बैठा॥

॥ १५ अध्याय ॥

दक्खन की जय,—विजयनगर की वृद्धि—
दक्खन का फिरना—बहमनी कुल—अला-
उद्दीन—महम्मद— मुजाहिद—फीरोज़—
अहमद शाह वली—दूसरा अलाउद्दीन—
हुमायूं—निज़ाम शाह—महमूद शाह—
उसके राज्य की अत्यंत सामर्थ—महमूद
गांवां की कटा—उसका राज्य बिगड़ गया
और उस से पांच नवीन राज्य बन गये ॥

नर्मदा के दक्खन के सूबों को दक्खन कहते हैं मुसलमानोंने अलाउद्दीन के समय में जैसा कि पीछे वर्णन हो चुका है उन्हें जय करलिया था अलाउद्दीन ईसवी संवत् १२९४ में जब तक वह अपने बाप अर्थात् बादशाह की ओर से केवल कराका अधिपति नियत हुआ था प्रथम ही प्रथम उस देश पर चढ़ाई की थोड़े ही काल में दिल्ली के सिंहासन पर बैठकर उसने दक्खन को संपूर्ण रीत से अपने आधीन करने का विचार किया और उसके सूबों को अपने राज्य में मिलाना चाहा उसके समय में बहुतेरी चढ़ाइयां हुईं और उसके सेनापति मलिक काफूर को बहुधा उन चढ़ाइयों के करने का अधिकार मिला था और हिंदू राज्य देवगढ़ और तिलंगाने और मैसोर का सब भांति से डिग मिगाया ॥ उन राज्यों के बिगड़ने से विजैनगर के राज्य की सामर्थ और अधिकार बढ़ गये यद्यपि उसके प्रकृति वर्णन भांति भांति के हैं और एक एक

से मिलता नही परंतु उस राज्य के स्थापक बक्का और हरी हर दो सरदार थे और वारंगोल से उस समय में भाग गये थे जब तिलंगाने की राजधानी अलाउद्दीन के हाथ लगीथी॥ उस देश की कहानियों में इस भांति प्रसिद्ध है कि ये दोनो सरदार बन में भागते समैं विद्यारण्य स्वामी से मिले उसने उन्हें उस नगर का राज्य दिया जो तुंगभद्रा के तीर पर उसने बसाया था प्रथम वह नगर उस के नाम से विद्यानगर कहाता था परंतु तिस पीछे उसका नाम विजय नगर ठहराया गया॥ इस नई राजधानी को कोई कोई लोग कहते हैं कि यह सुग्रीव और हनूमान की प्राचीन राजधानी है उन्होंने राम को दक्खन की चढ़ाई में बहुत सहायता दी थी कवि बाल्मीक उनको बंदर लिखते हैं और हिंदू उनको भ्रम से देवता मान्ते हैं परंतु इतिहासवेत्ताओं का यह बिचार है कि वे दोनो राजा थे और दक्खन में उन लोगों पर राज्य करते थे जो बुद्ध में पशुओं की अपेक्षा कुछेक अच्छे थे भांति भांति के संपूर्ण वर्णन जो विजयनगर के स्थापन होने के विषय में हैं उनसे उसके बसने का दिन ईसवी संवत् १३३६ में जाना जाता है उसका राज्य शीघ्र फैल गया और उसकी सामर्थ बहुत बढ़ गई॥ तिलंगाने का राज्य बिगड़ने के पीछे और मैसोर के राज्य को बड़ा धक्का लगने से निश्चै करके दक्खन में कोई ऐसा राजा न रहा जो मुसलमानो का साम्हना कर सकै और जो उस समय में विजैनगर का राज्य सामर्थवान न होता तो प्रत्यक्ष में कोई ऐसा कारण न था मुसलमानों के बढ़ते हुवे राज्य को कुमार का अंतरीप तक रोकता॥

हिंदुस्थान में मुसलमानोने जो राज्य स्थापन किया था वह पहले महम्मद तुगलक बादशाह के समय में जुदा होने लगा और

दक्खन की ओर पहले ही पहल दंगा बखेड़ा उठने लगा इस्से ५३ बरस पहले अलाउद्दीनने दक्खन में मुसलमानी झंडा खड़ा किया था महम्मद तुगलकने एक सेना साथ लेकर गुजरात के फिरेऊवे सरदारों को हरा दिया उन में से बहुतेरोंने दक्खन में जाकर शरण लो और इस कारण से बादशाह ऐसा क्रोधित हुवा कि उसने उन सब भागे हुवे लोगों को दंड पाने के लिये भेज दो ऐसा लिखा और सूबेदारने उन्हें बादशाही दूत को सोंप दिया परंतु उन्हों को बादशाह की निर्दयता निश्चित थी इसलिये वे मार्ग में से बादशाही आज्ञा भंग करके फिर वहां गये जहां और लोग बादशाह के अन्याय के कारण फिरने को उपस्थित थे और कुछ हिंदू सरदार भी उन से शीघ्र मिल गये उन्होंने दोलताबाद को अपने अधिकार में कर लिया और एक बड़ा कटक इकट्ठा करके बादशाही सेना का साम्हना करने को उपस्थित हुवे और इसमाईल अफगान को शाह दक्खन की पदवी दी और हसन जो पूर्व काल में गंगू नाम ज्योतषी का भृत्य था और अपनी बुद्धवानी के कारण से सहज २ बादशाह के यहां उसने बड़ी प्रतिष्ठा पाई अब वह फिरेहुवों का संगी हो गया और इसमाईलने उसको सेना में बड़ा अधिकार दिया॥

महम्मद तुगलकने इन फिरेहुवों के समाचार सुनके शीघ्र चढ़ाई की और उन फिरेहुओं के पास जाकर उसने उस स्थान पर युद्ध किया जहां दक्खन के हिंदुओं से पहली बेर अलाउद्दीनने साम्हना किया था निदान उसकी संपूर्ण रूप से जय हुई और दोलताबाद को घेर लिया परंतु दिल्ली में बखेड़े होने का समाचर सुनके वह सेना छोड़ के उसे अपनी राजधानी को फिरना पड़ा जिन सरदारों को वह छोड़ आया था उन पर फिरेहुवोंने शीघ्र चढ़ाई कर उन्हें हरा दिया और

नर्मदा के तीर तक पीछा किया इस चढ़ाई में वीर हसनने बड़ा नाम प्राप्त किया और बादशाही सेनापतियों को बीडर नाम स्थान पर बहुत हराकर दोलताबाद को चला आया॥ नये बादशाह इसमाईल को शीघ्र जानापड़ा कि प्रजा, मेरी अपेक्षा हसन को बहुत चाहती है उसने बुद्धवानी से हसन को राज्य दे दिया इसीलिये हसन ईसवी संबत् १३४७ में दक्खन का बादशाह हुआ और उसने अपना नाम अलाउद्दीन रक्खा उसने अपने नाम पर बहमनी वा बाहमनी यह शब्द बढ़ा दिया इसके बादशाह होने का वृत्तांत इस के पूर्व स्वामी एक ब्राह्मण ज्योतिषीने अनुग्रह करके बता दिया था यह कुल उस पदवी से इतिहासों में प्रसिद्ध है उसने अपनी राजधानी कुलबर्ग स्थापन किया और उस राज्य का प्रबंध बड़ी बुद्धवानी से किया और दक्खन संपूर्ण के वे सूबे जो मुसलमानोने किसी समय में जय कर लिये थे और तिलंगाने के राजा से भी जो सूबे लिये गये थे उन सब को अपने राज्य में मिला लिया और गंगू ब्राह्मण को भंडार का अधिकार देकर प्रसन्न करदिया अलाउद्दीन के समय में कुलबर्ग के राज्य की ये सीमा थीं उसके राज्य की उत्तर सीमा मालवा जो दिल्ली के राज्य में लगता था और उसके उत्तर और पूर्व के बीच में हिंदू राज्य करोला का था और पश्चिम को समुद्र का तीर और चोल का बंदर था और दक्खन में बिजैनगर का देश था और अग्नि कोण में तिलंगाने का हिंदू राज्य था हसन अच्छी भांति ग्यारह बरस राज्य करके ईसवी संबत् १३५८ में सड़सठ बरस का होकर तप से मर गया जो अहेर में अति परिश्रम करने के कारण आई थी॥

तिस पीछे उसका पुत्र महम्मद बादशाह हुआ उसने अपनी राजसभा की नाम्ना बढ़ाने में अति परिश्रम किया और दक्खन

में पहले ही पहल मुसलमानें का सिक्का फैलाया इस में एक ओर महम्मद का कलमा और चारों खलीफों का नाम लिखा हुआ था दूसरी ओर अपना नाम और संवत् लिखा हुआ था बिजैनगर और तिलंगाने के बादशाहोंने इस नवीन बादशाह के सिंहासन पर बैठने से अवसर पाकर वे सूबे फिर मांगे जो पहले बादशाहने उन से छीन लिये थे महम्मदने तिलंगाने के राज्य पर दो बेर चढ़ाई की और उसके बेटे को पकड़ के उसकी जीभ काट डाली और लकड़ियां जलाकर उसे आग में डाल दिया इस बात से आस पास के सूबों के रहनेवाले ऐसे क्रोधित हुवे कि उन्होंने महमूद की अप्रतिष्ठा करके देश में से निकाल दिया परंतु वह एक भारी कटक लेकर फिर आया और तिलंगाने के राजा को ऐसा दबाया कि वह बहुतसे अच्छे २ पदार्थ और पहाड़ी गोलकंडा और उसके आस पास के देश देकर आधीन हुआ परंतु शीघ्र उन में बचन हो गया और तिलंगाना के राजाने इस बचन पर कि महमूद दोनों राज्यों की सीमा नियत कर दे और आगे को बचन न तोड़े एक सिंहासन जो उसने बहुत अच्छा बनाया था वह बादशाह को भेट में दिया उस सिंहासन को तख़्त फ़ीरोज़ कहते थे और बाहमनी बादशाह उस समय से बहुधा सभा के समय उसी पर बैठते थे और लगातार उसी कुल के कई बादशाहोंने इतने रत्न जड़वाये कि पीछे उन्हें जब कुछ काम पड़ा उसको तुड़वाया तो उसका मोल चार करोड़ से न्यून न हुआ॥

अब तक सेनाने तिलंगाने पर लगातार दो बरस तक चढ़ाई करके सांस भी न लिया था कि उनको बिजैनगर के बादशाह पर चढ़ाई करने की आज्ञा हुई॥ महम्मदने मदोन्मत्त हो कर

उस राजा का भंडार लेलेने के कारण उसकी अप्रतिष्ठा की थी इस हिंदू राजाने उस अप्रतिष्ठा के पलटे के अपराध में कटा करनी ठहराई यद्यपि बर्षा के कारण कृष्णा नदी चढ़ी ऊई थी तो भी वह कटक लेकर उसके पार हो गया और मुद्गल को लेकर वहां के प्रत्येक मनुष्य की कटा की महम्मदने इस कटा के समाचार सुन कर शपथ खाई कि जब तक मैं एक लक्ष हिंदुओं की कटा न करूंगा और मुद्गल में कटा ऊवे लोगों की आत्मा संतुष्ट न करूंगा तब तक भोजन और निद्रा न लूंगा इस लड़ाई का प्रारंभ ईसवी संवत् १३६८ में ऊआ महम्मदने अपने बेटे को युवराज प्रसिद्ध करके उसको फिर कुलबर्ग नगर में भेज दिया और इस रीत का प्रबंध किया कि जानो मरने को चला था तब वह तुंगभद्रा के पार ऊआ इस नदी के पार जब तक दक्खन के मुसलमान बादशाह कभी नहीं ऊवे थे हिंदुओं के कटक को हरा दिया और प्रत्येक मनुष्य उसके हाथ लगा उसकी कटा की और कृष्णाराव बिजयनगर के राजा का तीन महीने तक पीछा करता रहा निदान उसे अपनी राजधानी में शरण लेनी पड़ी महम्मदने उसको घेरा परंतु एक महीने के पीछे जान लिया कि उसे कुछ कष्ट नहीं ऊआ और अपने दृढ़ गढ़ से बाहर नहीं निकल सकता और निरुपाय हो कर फिरने की इच्छा की हिंदुओंने बिचारा कि वह हमारे साम्हने से भागा जाता है उसका पीछा किया और बादशाह न कहीं ठहरा और न पीछा फिरके देखा जब तक कि वह उस स्थान पर पऊंचा जिस को शत्रुओं से लड़ने के लिये बऊत अच्छा बिचार रक्खा था॥ वह सोने के लिये संध्या ही समैं चला गया परंतु उसने एकाएकी अपनी सेना को उसी रात शत्रु पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी हिंदुओंने रात आनंद में

बिताई और उस समय तक आनंद ही में थे कि मुसलमानो को अपने तंबू के पास देखकर वे घबराये राजा अपनी राजधानी को भाग गया दस सहस्र हिंदू लड़ाई में मारे गये तिस पीछे और बहुत कटा हुई क्यौंकि बादशाहने सब हिंदुओं की कटा करने की आज्ञा दी थी निदान विजयनगर के राजा को मिलाप करना पड़ा और महम्मदने केवल उसकी मनबानछित बात ही अंगीकार न की बरन उसने कटा की थी इसका भी बहुत पश्चात्ताप किया और प्रतिज्ञा की कि लड़ाई के पीछे किसी मनुष्य को और शस्त्र रहित शत्रु को आगे से कटा न करूंगा महम्मद इस प्रकार अपने शत्रुओं को आधीन और पांच लाख हिंदुओं की कटा करके अपने राज्य के सुधारने में लगा और १७ बरस राज्य करके ईसवी संबत् १३७५ में मरगया॥

उसके पीछे उसका बेटा मुजाहिद शाह उन्नीस बरस की अवस्था में सिंहासन पर बैठा वह अपने कुल के सब बादशाहों में अत्यंत सुरूपवान् था बीरता और दृढ़ता में कोई उस से बिशेष न था और उसने राज्य केवल चार बरस तक किया उसने बैठते ही बिजैनगर के राजा से चोख और मुदगल और शेष देश मांगे जो कृष्णा और तुंगभद्रा के बीच में हैं और जिन के पीछे हिंदू और मुसलमान बादशाह सदैव झगड़ते रहते थे यह बात अंगीकार न की गई और उसका फल लड़ाई हुई मुजाहिद शाह बिजैनगर पर चढ़ गया और राजा तुरंत भाग गया और मुजाहिद शाह छह महीने तक कर्णाटक के सब देश भर में उसका पीछा करता रहा निदान वह अपनी राजधानी में आया और मुसलमानोने उसको घेर लिया यद्यपि उन्होंने नगर के निकट वर्ती स्थानों को अपने बस कर लिया

परंतु दुर्ग के लेने में उनका कुछ पराक्रम न चला निदान १३६४ निकले और दोनों ओरवालों में धुंवाधार लड़ाई हुई जिस में मुजाहिद शाह की जीत हुई बिजैनगर के राजा को आधीन करके वह अपने घर को चला परंतु फिरते समैं उसको उसके चचाने मार डाला इस बात पर कि मुजाहिद शाहने उस्से लड़ाई में एक बुरी बात कही थी जब वह लड़ाई मे एक अच्छे स्थान से हट गया था इस चढ़ाई में तरुण बादशाह की बुद्ध इस कारण से और भी प्रसिद्ध हुई कि उसके शत्रु के राज्य की अपेक्षा उसका राज्य बहुत छोटा था क्योंकि उस समय में बि-जय नगर के राज्य की सीमा समुद्र के पूरब पश्चिम तक थी और मालाबार और सिंगल द्वीप के राजा उसको नालबंदी देते थे ॥

दाऊदखां कटा करनेवाला सिंहासन पर बैठा परंतु उसको चालीस दिन के भीतर ही मुजाहिद शाह की बहनने मार डाला उसने महमूद को सिंहासन पर बैठाना चाहा उस कुल स्थापन करनेवाले का यह एक ही पुत्र उस समय तक जीता था उसकी इच्छा के अनुसार वह ईसवी संबत् १३७८ में सिंहा-सन पर बैठा उसने सब देश का सुख ऐसा चाहा जैसा उसके पूर्वजोंने युद्ध चाहा था उसके राज्य में केवल एक बेर झगड़ा हुआ उसने बिद्या और गुण की बहुत प्रतिष्टा बढ़ाई और उसकी प्रजा उसको दूसरा अस्तू जानती थी और उसके राज्य की बड़ी बात प्रसिद्ध यह है कि उसने फारस से हाफ़िज़ नाम कवीश्वर को अपनी राजसभा में रखने को बुलाया था कि वह उसके पास आने के लिये निश्चै करके नौका पर चढ़ा था कि इतने में आंधी आई उसे नाव के डूबने का भय हुआ और हाफ़िज़ने कहा कि अब मैं नाव पै कभी नही चढूंगा उसने

बादशाह के पास न आने की विनती में कुछेक कविता लिख भेजी इस बात पर एक सहस्र मोहर का द्रव्य उसकी प्रसन्नता के लिये भेजा॥ यह बादशाह उन्नीस बरस राज्य करके पीछे ईसवी संवत् १३९७ में मर गया और उसके पीछे उसके दो बेटे लगातार बादशाह हुवे जिनका राज्य ६ महीने से अधिक न रहा॥ फीरोज शाह जो कटा करनेवाले दाऊद का बेटा था सिंहासन पर बैठा उसके और उसके भाइयों का राज्य मिलकर पैंतीस बरस तक रहा इतिहासवेत्ता कहते हैं कि वह बहमनी कुल का समय सब से अच्छा था॥ फीरोज शाहने २४ चढ़ाइयां कीं और अपने राज्य को बहुत बढ़ा दिया उसका ध्यान उसके पूर्वजों की अपेक्षा बिजैनगर के राजा पर अधिक रहा उस पर कई बेर चढ़ाई कर जय पाई और करणाटक के सब देश को तरवार और आग से उजड़ कर दिया उसने उस राजा की सामर्थ ऐसी घटा दी कि उसे फीरोज शाह को विवाह में अपनी बेटी देनी पड़ी और करोड़ेक रुपया भी कर का दिया परंतु बिजैनगर और गढ़ उससे कभी जय न हुआ फीरोज शाह के समय में तैमूरने हिंदुस्थान पर चढ़ाई करके दिल्ली को लेलिया फीरोज शाहने एक दूत अच्छी अच्छी भेट देकर भेजा कि मैं भी उसके आज्ञाकारियों की गिनती में हूं तैमूरने उसको गुजरात और मालवे का राज्य दे दिया परंतु इतिहासवेत्ता नहीं लिखते हैं कि तैमूरने अपने मन से यह कृपा उसके ऊपर की थी वा फीरोज शाह के कहने से॥ उन दोनो सूबों के सूबेदारों को जो स्वाधीन हो गये थे फीरोज शाह की उच्च दृष्ट जो तैमूर की उदारता से प्रगट हुई थी उस करके भय हुआ और उन्होंने फीरोज शाह के आशय को सिद्ध न होने के कारण से उसके उत्तर और दक्खन के

पड़ोसियों से अर्थात् करोला और बिजैनगर के राजाओं से मिलाप किया दोनो मुसलमान बादशाहोंने बुद्धवानी से आप फीरोज शाह पर चढाई न की परंतु बिजैनगर के राजाने फिर लड़ाई का प्रारंभ किया और हारा और बक़्त सा द्रव्य देकर संधि की ॥

फीरोज शाह बड़ा गुणग्राहक था और उसने एक यंत्रालय बनाया और प्रति वर्ष नावें गोआ और चोल के बंदर से सब देशों की नामी और अद्भुत वस्तु और विद्यावान् लोगों के लाने के लिये भेजा करता था और उसने इतनी स्त्रियां रक्खीं जितनी उसके मत में अधिक से अधिक कही थीं उसके रणवास में १३ देश की १२ स्त्रियां अति सुंदर थीं कहते हैं कि वह प्रत्येक स्त्री से उसके देश की भाषा में बातें करता था उसने चौथे दिन कुरान के आठ पन्ने लिखने का प्रबंध रक्खा था अपने राज्य के अंत में जब वह बिजैनगर के राजा से अन्याय पूर्वक लड़ाई करने में लगा था तब हिंदुओंने उसकी सेना को हरा दिया और बक़्तसे मनुष्यों को कटा करके उनके सिरों का रणभूमि में एक चोंतरा बांधा उन्होंने बक़्तसे नगर जय किये मस्जितों को ढादिया और अपने शत्रुओं से अगला पिछला पलटा एक ही बेर लेना ठहराया ऐसी ऐसी आपत्तों से दुःख फीरोज शाह को अत्यंत शोक ऊआ उसने अपने बेटे हसन को अपने जीते ही सिंहासन पर बैठाना चाहा बरन अपने भाई से भी एक लड़ाई लड़ा जिसने इस बात में रोक टोक की थी परंतु सब अपने सरदारों को अपने भाई की ओर जान कर राज्य उसी को दे दिया और दस दिन के बीच में मरगया अहमद शाहवली अपने भाई फीरोज शाह के सिंहासन पर बैठा इसको वली की पदवी इसलिये मिली थी कि उसने ईश्वर की प्रार्थना

करके अकाल में मेह बरसाया था॥ और बिचार किया कि बाहमनी कुल की सेना की जो पिछले बादशाह के समय में अप्रतिष्ठा ऊई थी उसका पलटा लूं उसने बड़ी सेना लेकर बिजैनगर के राजा देवराय के देश पर चढ़ाई की उसने तिलंगाने के बादशाह से उस हिंदुओं के शत्रु से लड़ने के लिये सहायता चाही यह बात उसने अंगीकार की परंतु जिस समै उसे सहायता आवश्यक थी तब उसने उसका साथ छोड़ दिया हिंदू और मुसलमानो की सेना चालीस दिन तक तुंगभद्रा के दोनों तीर पर आमनै सामनै रहीं निदान अहमद शाहने पराक्रम से पार होकर देवराय की सेना पर चढ़ाई की और उसको संपूर्ण रूप से हरा दिया और अहमद शाहने उसका पीछा किया और देश को भली भांति से लूटा और पहले जो बचन बंधुवों के बिषय में ऊवे थे उनपर कुछ बिचार न करके उसने पशुता से पुरष स्त्री और लड़कों की काटा करवाई जब बीस सहस्र मनुष्यों की काटा हो चुकती थी तब वह तीन दिन तक ठहर जाता था और बड़ी २ जोनारें करता था सब देश को उजड़ करके उसने राजधानी को घेरा और राजा को निदान संधि करने के लिये कहना पड़ा जो केवल इस बचन पर अंगीकार ऊई कि जो शेष रुपया रहा है वह दे देय अहमद शाहने फिर तिलंगाने के राजा पर सेना भेजी उस अपराध का दंड देने के लिये कि वह बिजैनगर की सेना का संगी ऊआ था तिलंगाने की राजधानी वारंगोल को जीत लिया और संपूर्ण भंडार जो वहां इकट्ठा ऊआ था अहमद शाह के हाथ लगा उसने फिर उत्तर की ओर चढ़ाई की वहां उसे एक सोने की खान मिली उसने बऊतेरे हिंदुओं के मंदरों को जड़ से उखड़वाडाला और उनके स्थानो में मस्जितें बनवाईं इस चढ़ाई में

उसने गायल के गढ़ को बनवाया वा सुधरवाया जो तिस पीछे बरार की राजधानी ऊआ ॥

इस चढ़ाई से फिरते ऊवे समय वह दैव गति से बीडर में ही फिर गया वहां के स्थान से ऐसा प्रसन्न ऊआ कि उसने इस प्राचीन हिंदू नगर के स्थान पर अहमदाबाद बसाया वह दक्खन भर के स्थानो में अच्छा गिना जाता था ईसवी संबत् १४३२ में यह नया नगर बन चुका और बीडर की राजधानी कुलबर्ग जजड़ ऊआ और उसका नाम मिट गया अहमद शाहने मालवे के बादशाह से दो लड़ाई लड़ीं और दोनो में जयवंत ऊआ तीसरी लड़ाई मालवे से होने को थी कि खान देश के बादशाहने बीच बिचाव कर दिया और दोनों बादशाहों में बचन होगये करोला से अहमद शाह और बरार से मालवे-वाला निरास ऊआ ॥ अहमद शाहने कोकन को जय करने के लिये अपने सेनापति भेजे यह स्थान हिंदुस्थान के पश्चिम के समुद्र के तीर और बंबई और गोवा के पहाड़ों के बीच में है उसके सेनापति पहली बेर तो जयवंत ऊवे परंतु जय की प्रसन्नता में उन्होंने बाहम नाम स्थान को जो गुजरात के अधिकार में था लेलिया और बादशाह से बैर किया इसलिये सब चढ़ाई निरर्थक हो गई अहमदशाह ईसवी संबत् १४३५ में बारह बरस राज्य करके मरगया ॥

अलाउद्दीन अपने बाप अहमद शाह के पीछे सिंहासन पर बैठा और पूर्वजों के अनुसार उसने प्रथम ही प्रथम बिजय-नगर के राजा से बैर किया कहते थे कि उसने पांच बरस से कर देना छोड़ दिया था इस चढ़ाई में उसने जय प्राप्त की उसके बादशाह होने के दो बरस पीछे खान देश के बादशाहने इस छल से कि अलाउद्दीनने मेरी बेटी से बुरा बरताव किया जो

बेटी ब्याही गई थी इसलिये उससे संबंध फेर लिया और गुजरात के बादशाह को समझा कर इस चढ़ाई में अपना संगी करलिया और बाहमनी बादशाहने इस समें सेना का अधिकार मलिकुत्तुज्जार एक मुग़ल को दिया जिसने दक्खनी और हब्शियों की सेना में से किसी को संग न लिया और कहा कि कोकन की लड़ाई की हार उन्ही की कुचाल से हुई थी॥ अपने देशवालों के थोड़ेसे समूह से वह शत्रु पर चढ़ चला और उनको अपनी बीरता और सावधानी के कारण से हरा दिया और बादशाही नगर बुढ़ानपुर को जीत लिया और वहां उसने बादशाही स्थानो को जलादिया और उनकी नीम तक उखेड़ गेरी और जब वह फिरके आया तब बादशाह मलिकुत्तुज्जार को लेने गया और केवल उसको बड़ी पदवी ही न दी बरन आज्ञा की कि आगे को मुगल दक्खनियों से प्रतिष्ठा में अधिक गिने जाया करैं गे और इस बात से चिरकाल तक दोनों सेनाओं में लड़ाई झगड़ा चलागया॥

इसी बीच देवराय बिजैनगर के राजाने अपने यहां के बड़े लोगों को इकट्ठा करके पूछा कि यद्यपि हमारा देश विस्तार और द्रव्य और जनता में बाहमनी कुल के राज्य से अधिक है परंतु हमारे बड़े सदैव से उन्हें कर देते आये हैं इसका क्या कारण है किसीने तो कहा कि देवताओं की यह इच्छा है और शास्त्र में लिखा है औरोंने कहा कि मुसलमांनो के पराक्रमी घोड़ों की सेना और अच्छे धनुर्धर हैं इस बात के सुन्ते ही देवरायने तुरंत ही मुसलमान धनुर्धरों की भरती करने की आज्ञा दी और उनके लिये एक मस्जित अपने राजधानी नगर में बनवा दी और वे जब उसके सनमुख आते थे तब उनकी प्रसन्नता के लिये वह अपने साम्हने एक कुरान की

पुस्तक रखवा लेता था कि वे अपने जाने तो उस पुस्तक की प्रतिष्ठा करें परंतु वह निज मन में अपनी प्रतिष्ठा जानता था॥ उसने शीघ्र दो सहस्र मुसलमान और साठ सहस्र हिंदू धनुर्धर इकट्ठे कर लिये और अलाउद्दीन का पराक्रम देखना चाहा दो महीने के बीच दोनों में तीन युद्ध हुवे और दोनों समान समान रहे परंतु दो मुसलमान सरदारों को हिंदुओंने पकड़ लिया और अलाउद्दीनने सोगंद खाई जो वे दोनों सरदार मारेगये तो उन एक एक के पलटे में एक एक लाख हिंदुओं को काटा करूंगा इस धमकी से हिंदू राजाने संपूर्ण शेष कर देकर संध करली॥

अलाउद्दीन बादशाह जो इस जय के पूर्व हिंदुस्थान के बादशाहों में सब से बड़ा बुद्धवान् और धर्मात्मा समझा जाता था क्रीड़ा में लग गया और बर्ष भर में केवल एक वा दो बेर बाहर निकलता था और सदैव अपने रणवास में पड़ा रहता था इसी काल में उसने मलिकुत्तुज्जार को कोकन पर भेजा जिसने पहले बुढ़ानपुर को जय करलिया था परंतु लोगोंने घात लगा कर उसको और उसकी बहुतसी सेना को मार डाला और जो कुछ भागकर आये उन में से थोड़े लोगों को छोड़कर सब को बादशाही सेनाने मार डाला क्योंकि बादशाही कटक में दक्खनी थे और मुगलों पर बहुत जलते थे थोड़े लोगोंने उस कठिनता से भागकर बादशाह के पास आ समाचार कहे कि जिनके छल से उनके संगी मारे गये थे बादशाहने आज्ञा दी कि जो जो मनुष्य इस बुरे काम में मिला हुआ था उस २ को काटा करो॥ कुछ इस बात के जानने से और कुछेक अपने वृद्ध गुरू के लिखने से उसने फिर असावधानी को छोड़ दिया और कुछेक राज काज में मन लगाने लगा

ईसवी संवत् १४५४ में उसके पाय में फोड़ा ऊआ इसलिये वह राजमंदर से बाहर न निकल सका ओर उसके मरने के समाचार प्रसिद्ध हो गये ओर मालवे का बादशाह ओर अलाउद्दीन के निज संबंधी लड़ने को उपस्थित ऊवे परंतु उसके शत्रुओं का बिचार सुफल न ऊआ बादशाह ईसवी संबत् १४५७ में २३ बरस राज्य करके फोड़े के सड़ जाने के कारण मरगया॥

उसके मर जाने के पीछे उसका हमायूं नाम बेटा जो अन्याई था सिंहासन पर बैठा जिसने केवल साढ़े ३ बरस राज्य किया ओर उस काल में केवल अधर्म ही के कर्मों करके प्रसिद्ध रहा था तब उसीके भृत्योंने उसे मदोन्मत्तावस्था में मार डाला॥ तिस पीछे उसका बालक बेटा निज़ामशाह ईसवी संबत् १४६१ में सिंहासन पर बैठा उसकी मा ओर उसके दो प्रधान राज्य का प्रबंध करते थे जिन्हों में महमूद गावां बड़ा प्रसिद्ध था उनके परिश्रम से पिछले राज्य के सब बखेड़े ठीक ठाक हो गये परंतु आस पास के राजाओंने छोटे से लड़के को सिंहासन पर बैठा जान लड़ाई करने का अवसर जाना ओर उड़ीसे के राजा शीघ्र ही वहां तक पऊंच गये जहां से राजधानी केवल पांच कोस रह गई थी परंतु शत्रुओंने उन्हें हटा दिया महमूद मालवेवाला भी रणभूमि में आया तिलंगाने ओर उड़ीसे की सेना उसकी संगी हो गई॥ ओर इधर की सेनाने निज़ाम शाह बालक को बीचाबीच में रक्खा ओर बड़ी भारी लड़ाई ऊई बाहमनी कुल के बाईं ओर दाहनी ओर के कटकने शत्रु को हटा दिया परंतु जय होने के समय में सिकंदरखां जो बादशाह का भाई था ओर बीचाबीच की सेना का अधिपति था जो जय प्राप्त करनेवालों से जलकर एका एकी बादशाह को ओर बादशाही झंडे को रणभूमि से लेकर चल दिया इस

कारण से हार हो गई महमूद की जय हुई और उसने अह-मदाबाद बीडर के नगर को लेलिया और बादशाह अपने सरदारों समेत फीरोज़ाबाद को चला गया आस पास के देशों से भी कर ठहरा लिया और बाहमनी कुल के अंत होने का संदेह हुआ इस कठिन काल में गुजरात के बादशाहने इस कुल का पक्ष किया और मालवे पर चढ़ाई की इस कारण से महमूद अपना देश बचाने के लिये चला गया परंतु निज़ाम शाह इस छुटकारे के पीछे केवल थोड़े से काल तक जीता रहा सिंहासन पर बैठने से दो बरस पीछे मरगया॥

ईसवी संवत् १४६३ में उसका भाई महम्मद शाह नो बरस की अवस्था में सिंहासन पर बैठा और राज काज उसकी मा और प्रधान वैसे ही करते रहे जैसे पहले राजा के आगे करते थे खाजेजहां प्रधानने उसके पढ़ाने लिखाने में इतना परिश्रम किया कि फीरोज़ शाह के पीछे अपने कुल में यह बादशाह बड़ा विद्यावान् गिना जाता था॥ फिर भी जब यह जाना गया कि इस प्रधान का राज्य में बहुत अधिकार होगया है तब बालक बादशाहने जो अभी तक बारह बरस का नहीं हुआ था अपनी माता के कहने से उसको अपने आगे मरवा डालने की आज्ञा दी ऐसी छोटी अवस्था में स्वाधीन बादशाह ऐसा अन्याय किया करैं थे इस राज्य में से पहली चढ़ाई करोला पै हुई जो उत्तर की ओर है और मालवे के अधिकार में था उसको जीत लिया परंतु यह अचंभा है मालवे के बादशाह के कहने पर वह गढ़ शीघ्र फिर उसे देदिया॥ थोड़े ही काल पीछे महमूद गावां नाम प्रधान को कोकन पर भेजा जो समुद्र के तीर पर है वहां दो बेर हार हुई थी इस देश के बड़े बड़े लोग और विशेष करके खलना का अधिपति जहाजों की सेना

बज्जत रखता था ग्रैार उन्होंने मुसलमानो के ब्योपार में भंग डाल दिया॥ महमूद गावांने केवल समुद्र के तीर के देशों ही को नही जय कर लिया बरन पहाड़ी देशों को भी आधीन कर लिया फिर गोवा के द्वीप पर जल ग्रैार थल के मार्ग से चढ़ाई की यद्यपि यह द्वीप बिजयनगर के राजा के अधिकार में था तीन बरस पीछे जय प्राप्त करके फिर आया तब बादशाहने उसकी अत्यंत प्रतिष्टा ग्रैार सत्कार किया ग्रैार एक अठवाड़े तक बादशाह उसके घर रहा॥

ईसवी संबत् १४७१ में उड़ीसे के राय के कहने से हसनबहरी को वहां के लिये एक कटक मिला उसने अंबर राय को उसका देश दिलवा दिया फिर कंडापली ग्रैार राजमंदरी को अपने स्वामी के नाम से जय किया मुख्य प्रधान के कहने से हसनबहरी उस सेवा के करने से तिलंगाने का अधिपति नियत ज्ञआ ग्रैार इसी रीत से बरार का अधिकार अमादुलमुल्क को मिला ग्रैार यूसफ आदिलखां महमूदगावां के लेपालक पुत्र को दौलताबाद का अधिकार मिला जो राज्य भर में अत्यंत अच्छा था उस काम को यूसफखांने ऐसी बुद्धवानी ग्रैार उत्साह से किया कि उसके बादशाहने उसे बज्जत प्रतिष्टत किया ग्रैार सदैव उसको ग्रैार उसके सहायक प्रधान मंत्री को अपने बिचार में रक्खा दखनी सरदारों को इन अधिकारियों से बज्जत जलन ज्जई ग्रैार उन्होंने उनके मारने के लिये उपाय किया॥

उस समय उस देश में बड़ा अकाल पड़ा ग्रैार दो बरस तक खेत न बोये गये कंडालपी के गढ़वालोंने अवसर पाके वहां के अधिपति को मार डाला ग्रैार गढ़ भीमराय को दिया उसने उड़ीसे के राजा को लिख भेजा कि अब तिलंगाना मुसलमानों

के हाथ से छीन लेने का अवसर है क्योंकि दक्खन अकाल के कारण उजड़ हो गया है इस बात से उडीसे के रायने बहुत बड़ा कटक इकट्ठा किया और हसनबहरी तिलंगाने के अधिपति को उसके साम्हने से हट जाना पड़ा महमूद्गावाँ के कहने से बादशाह आप रणभूमि में आया और उड़ीसे के राजाने अत्यंत भय खाकर बड़ी बिनती से संधि करने की प्रार्थना की बहुतसा कुछ देने से वह बात अंगीकार की इस में पचीस हाथी देने पड़े जिन्हें वह राजा अपने जी की समान जानता था बादशाहने आप कंडापली को घेर लिया और छह महीने के पीछे फिर उसे लेलिया और आप तीन बरस तक आगे के लिये वहां का प्रबंध बांधता रहा और तिलंगाने का प्रबंध बांध के उसने नरसिंहराय पर चढ़ाई की इस का राज्य समुद्र के तीर दक्षिण की ओर मछलीपुटाम तक था॥ इस सरदारने बिजयनगर के सूबे जय कर लिये थे और बाहमनी कुल के राज्य की सीमा पर कई चढ़ाइयां की थीं इस चढ़ाई में प्राचीन और बड़े कांजीवराम के मंदिर का वर्णन सुना जो मंदराज के पास था उसकी भींत और छतों पर सोने के पत्र लगे हुवे बताते थे वह अपने सवारों में से छह सहस्र सवार छांट कर उस पर चला ऐसा शीघ्र चलता था कि वहां तक केवल चालीस सवार उसके साथ रह गये थे उसने उन्ही के साथ चढ़ाई की और शीघ्र ही शेष सवार उस से आ मिले उसने मंदर को अपने आधीन कर लिया और संपूर्ण उसका चांदी सोना लूट लिया॥

इस चढ़ाई के पीछे बाहमनी कुलवालों का ऐश्वर्य जाता रहा इस राज्य की सीमा बहुत दूर तक फैल गई थी बिस्तार में पश्चिम के समुद्र से ले पूर्व के समुद्र तक और कोकन से मछलीपुटाम तक थी प्रत्यक्ष है कि राज्य की जो बड़ी प्रतिष्ठा हुई

थी उसके बढ़ाने में इतनी बादशाह की बुद्विमानी न थी जितनी उसके मंत्री महमूद गावां की थी यह मंत्री अपने समय के बरन और समय के मनुष्यों से भी बहुत बुद्विमान था उसने बिचारा कि अपने स्वामी के विस्तृत राज्य का नवीन प्रबंध करना आ-वश्यक है पूर्व काल में इसराज्य के चार सूबे थे प्रत्येक सूबा एक एक सरदार के अधिकार में था उसने अब उस राज्य के आठ प्रधान भाग किये और इस रीत से सूबेदारों की सामर्थ घटा दी और इसलिये उनके फिर जाने का भय न्यून हो गया और पहले यह भी रीत थी कि प्रत्येक सूबे के संपूर्ण गढ़ सूबेदार के आधीन रहते थे और उसको उन में अधिपति नियत करने का अधिकार रहता था परंतु मंत्री ने बुद्विमानी से यह आज्ञा दी कि प्रत्येक सूबेदार के अधिकार में केवल वही एक गढ़ है जिस में वह आप रहता हो और शेष गढ़ों के अधिपति बाद शाह की ओर से नियत हुआ करैं उसने इस रीत से सरदारों और कटक का मासिक भी बढ़ा दिया परंतु आज्ञा दी कि जो किसी सेनापति के पास सिपाहियों की नियत संख्या में से एक भी न्यून जाना गया तो उसको उसके मासिक का रुपया फिर भंडार में भर देना पड़ेगा यह प्रबंध ऐसा स्वाधीनता से हुआ था कि राज दृढ़ हो जाय और देश की सामर्थ और अधिकार बढ़ै सूबेदारों को यह प्रबंध अत्यंतदु:सह लगा इसीलिये उन्होंने मंत्री के मारने का उद्योग किया परंतु उनको निश्चय हो गया कि जब तक यूसुफ आदिलखां उस से मिला रहेगा तब तक हमारा बिचार उन दोनों में से किसी के मारने के लिये सफल न होगा॥ उस समय में यूसुफ आदिलखां नरसिंहराव से लड़ने को भेजा गया था तब सूबेदारोंने महमूद गावां को दूर कर देने का समय अच्छा जाना॥

बखेड़ियों में से दो मनुष्योंने एक हफ्शी से मित्रता की जिस के हाथ मंत्री की मोहर रहती थी एक दिन उसको बक्लत सी मदिरा पिला कर उस्से एक कोरे पत्र पर मंत्री की मोहर करवा ली और कहा कि यह पत्र हमारे मित्र का है और काज गामियों की मोहरें और चिन्ह हो गये थे फिर उस पत्र पर उन्होंने महमूद गावां की ओर से उड़ीसे के राय को शीघ यह आशय लिखा कि तुम बादशाह से फिरजाओ और हम तुम से मिले ज्ञवे हैं वह पत्र ऐसे छल से बादशाह के सन्मुख पज्ञंचाया कि बादशाह को निश्चय ज्ञआ कि यह पत्र दैव गति से पकड़ पाया है॥ हसनबहरीने भी जो अपने हितकारी महमूद गावां का शत्रु था बादशाह के यहां जा कर उसके मन में जो क्रोध उपजा था उसे अधिक भड़का दिया बादशाहने अत्यंत क्रोध में आकर मंत्री को बुलाया इस पत्र का समाचार और बादशाह के क्रोध का हत्तांत प्रसिद्ध हो गया था मंत्री के मित्रों ने उसे बादशाह के पास जाने के लिये निषेध किया और सब भांति से उसकी सहायता करने का बिचार किया परंतु महमूद गावां अपने निरपराधी होने के कारण अकेला राजसभा को चला गया॥ बादशाहने अत्यंत क्रोध कर के पूछा कि जो कोई मनुष्य कृतघ्नी निश्चै होय तो उसको क्या दंड देना चाहिये मंत्रीने निडर होकर उत्तर दिया कि उसपर किसी भांति दया न करनी चाहिये॥ बादशाहने पत्र उसके हाथ में दिया उसको देख कर महमूदने कहा निश्चै यह बड़ा भारी छल है निस्संदेह मोहर तो मेरी ही दिखाई देती है परंतु लिखा ज्ञआ मेरा नही है और उस बिषय की मैं कुछ बात भी नही जानता बादशाह मदिरा पिये ज्ञवे था उसे क्रोध और भी अधिक ज्ञआ उसने एक हप्शी को मंत्री के मार डालने

की आज्ञा दी मंत्रीने बड़ी दृढ़ता से कहा कि मुझ दृद्ध का मार डालना बड़ी बात नही है परंतु इस से बादशाह का अपयश होगा और राज्य नष्ट हो जायगा बादशाहने उसकी इस बात पर कुछ ध्यान न दिया और एकाएकी अपने रणवास को चला गया और वह दास मंत्री के पास आया उस काल में मंत्री की अवस्था ७८ बरस की थी मंत्रीने काबे की ओर मुख करके सिर झुका दिया तब बधिकने उसका सिर काट डाला सिर कटने से थोड़े दिन पहले मंत्रीने अपने बादशाह की प्रशंसा में कविता की थी ॥

बादशाह के चित्त में यह बात थी कि हमारे मंत्रीने बऊतसा रुपया इकट्ठा किया है और उसके भंडार में बऊतसा रुपया होगा परंतु बही खाते से केवल इतना जान पड़ा कि मंत्री कैसा धर्मात्मा था उसके भंडार में दस सहस्र रुपये से अधिक न निकला उसके भंडारीने थोड़े रुपये होने का यह कारण बताया कि मंत्री की जागीर में से जितना रुपया आता था वह सब राज्य के भृत्यों के मासिक में दिया जाता था और २ जो कुछ शेष रह जाता था बादशाह के नाम दीन और दुखी लोगों को दिया जाता था और मंत्री जितना रुपया हिंदुस्थान में से लाया था उस में से वह बोपार किया करता था और उसकी दृद्धि से दो एक रुपये उसके भोजन खरच में नित उठते थे और शेष को अपने नाम से पुण्य किया करता था वह सदैव चटाई पर सोया करै था और मट्टी के पाच में भोजन किया करता था बादशाह को यह बात ठीक निश्चय हो गई कि मैंने अपने राज्य भर के अत्यंत बुद्धवान और बड़े सावधान और धरमात्मा को जो पांच बादशाहों के आगे से लगातार मंत्री रहता आया था निरर्थक और लोगों के कहने से मरवा डाला इस से

बादशाह को बड़ी ग्लानि और लज्जा हुई ॥ मंत्री के मारने का फल तुरंत जान पड़ा क्योंकि जब बादशाहने राजधानी में जाने की आज्ञा दी तब उसके कई बड़े २ सेनापति उसके साथ चले तो भी अपनी अपनी सेना बादशाही सेना से अलग अलग कर ली और कहा प्रधान मंत्री के मारने के पीछे छोटे २ सरदारों के बचने की क्या आस है राज्य में सब को निश्चय हो गया था कि इस कुल का अंत निकट आ चुका और प्रत्येक सूबेदार स्वाधीन होने को उपस्थित हुवे मंत्री के मारे जाने से एक ही बरस के भीतर मिरगी की पीड़ा से वह मरा और उसी पीड़ा की दशा में चिल्लाता था कि महमूद गावां मेरे टुकड़े टुकड़े करता है यह बादशाह ईसवी संवत् १४८२ के प्रारंभ ही में मरगया ॥

बाहमनी कुल का और विशेष लिखना कुछ आवश्यक नहीं और महमूद गावां के भिन्न किसी मरनेवाले की बात ऐसी सच्ची नहीं निकली थी जब फरसा उसके साम्हने चमका तब उसने कहा कि मेरा सिर काटना राज्य का ध्वंस करनेवाला होगा निश्चय इस निपुण प्रधान के मारे जाने से दक्षिण का राज्य नष्ट हो गया ॥ तिसपीछे इस बादशाह का बेटा सिंहासन पर बैठा और सैंतीस बरस राज्य किया परंतु राज्याधिकार उसके कुल से जाता रहा उसने हसन बहरी को मुख्य निज मंत्री नियत किया जो पहले मंत्री के मरवाडालने में बड़ा कारण था ॥ थोड़े ही काल पीछे उसके मारने की आज्ञा दी और कासम बरीद इस पदवी पर नियत हुआ उसने और उसके बेटे अमीर बरीदने सब राज्य का प्रबंध अपने अधिकार में कर लिया और अपने स्वामी को केवल नाम मात्र बादशाह रक्खा ॥ सूबेदार फिरने लगे उन्होंने अपने अपने नाम का सिक्का और

खुतबा चलाया ॥ अहमदनगर बीदर का राज्य पांच स्वाधीन बादशाहों में बिभाग हुआ और उस समय उन्होंने अपने अपने बिभाग को अच्छी भांति अपने अधिकार में कर लिया उस काल बाबर नाम मुगलने दिल्ली का राज्य लेने के लिये उद्योग किया ॥

१ महमूदगावां के लेपालक प्रिय पुत्र यूसुफ आदिल शाहने दक्षिण और पश्चिम के बीच में एक राज्य स्थापन किया और बीजापुर को अपनी राजधानी बनाया जिस के खंडैर अब तक बड़े मनोहर हैं ॥ इस कुल के बादशाहों की पदवी आदिल शाही प्रसिद्ध रही ॥

२ अहमद निज़ाम जिस का बाप हसनबहरी महमूद गावां की कटा करवाने के पीछे महमूद शाह की आज्ञा से मारा गया अपने बाप की कटा का समाचार सुनके निज राजधानी अहमदनगर को चला गया जो उत्तर और पश्चिम में है और फिर गया और नबीन राज्य स्थापन किया वह अहमदनगर का राज्य कहाने लगा और उस कुल की पदवी निज़ाम शाही प्रसिद्ध हुई ॥

३ अमादुल सुल्कने जो बाहमनी कुल के प्राचीन मंत्रियों म से एक था राज्यों के जुदे जुदे होने की व्यवस्था देखकर उत्तर में बरार का देश जो उसके पास था उसको अधिकार में कर लिया और स्वाधीन हो गया उसके कुल की पदवी अमाद शाही थी और बरार की राजधानी गावलगढ़ निश्चित हुआ ॥

४ कुली कुतुबने दक्खन और पूर्व के बीच में जो गोलकंडे का सूबेदार था अपने कुल के लिये एक अलग राज्य स्थापन करने का अवसर पाया और उसका कुल कुतुब शाही कहाने लगा ॥

५ अहमदबरीद था जिसने अपने बाप के स्थान में बीडर के बादशाह का मंत्री होकर संपूर्ण अधिकार अपने हाथ रक्खा और क्रम क्रम से इस सूबे का राज्य अपने कुल के लोगों को सोंप दिया॥ इस भांति बिभाग होने के पीछे बाहमनी कुल के प्राचीन सूबों में यह सूबा शेष रहा था निदान अहमद बरीद अहमदाबाद-बीडर का बादशाह नियत हुआ और उसका कुल बरीद शाही पदवी करके प्रसिद्ध रहा॥

॥ १६ अध्याय ॥

पुरतगीजें का आगमन—यूरप में समुद्र के मार्ग से आने जाने की हद्धि—डैसने दूसरी बेर उत्तमाशा अंतरीप के देखा—आमेरिका पाई—वासको डिगामा हिंदुस्थान में आया; और कालीकट की पृथ्वी पर और मालाबार के तट पर—केब्रल् आल्मीड़ा और आल्बूकर्क का आगमन —आल्बूकर्कने पुरतगीजें के पूरब के राज्य के स्थापन किया—इसके स्थान में एक और मनुष्य नियत हुआ और आल्बूकर्क गोआ में मरगया ॥

जब दक्खन के पहले मुसलमानें के राज्य इस भांत अलग अलग हो गये उसी काल नवीन शत्रुओंने समुद्र के मार्ग से हिंदुस्थान के दक्षिण समुद्र के तीर पर आकर वास किया और देशें के प्रबंध और वोपार और ही रीत से करदिये ये शत्रु पुरतगीज़ थे जो महम्मद शाह बाहमनी के समय में जब सिकंदर लोदी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा राज्य करता था तद वे आये पुरतगीजें के साथ हिंदुस्थान पर ईसाइयें की भी चढ़ाई का प्रारंभ हुआ उन्हेंाने दोसै से अधिक २ बर्षों में हिंदुस्थान का राज्य मुसलमानें से लेलिया जैसे उन्हेंाने हिंदुओं से लेलिया था ॥

इस दृत्तांत से कुछेक काल पहले यूरप के लोगों को जो अब सब बस्तुओं में और बिशेष करके जहाज खेवने की बिद्या में निपुण हैं समुद्र द्वारा हिंदुस्थान का मार्ग ढूंढने के लिये बहुत लालसा हुई ॥ बेनिसवाले जो उस समय में यूरप के सब पूरब में ब्योपार करनेवालों से धन में अधिक थे और ब्योपार से बहुत धन संचय किया था और पुरतगीज़ उस समय में समुद्र के मार्ग से बहुत आवा जाई किया करते थे उन्होंने समुद्र द्वारा आफ़िरका के तीर ही तीर बहुत दूर तक यात्रा की थी और नाना बस्तुओं के ढूंढने की बड़ी इच्छा थी ॥ ईसवी संबत् १४८६ में पुरतगीज़ के जान नाम बादशाहने बिचार किया कि जो बनसके तो आफ़िरका की सब पृथ्वी के चारों ओर समुद्र के मार्ग से फिर आवें बरथालेमिउ डैस बड़ा बीर और सावधान जहाज चलाने में था एक समूह जहाजों का देकर इस इच्छा को पूरण करने के लिये भेजा वह समुद्र के तीर ही तीर गिनी देश के पास तक पहुंचा जहां एक आंधी आई जो तेरह दिन तक रही और उसको अन जाने स्थान पै बहा लेगई तीर पर पहुंचने के लिये यूरप की ओर चला और कई दिन के पीछे फिर भी पानी के भिन्न और कुछ न देखा निश्चय है कि वह बिना जाने उत्तमाशा अंतरीप के आस पास फिरता रहा और पूरब की ओर की पृथ्वी देखने की आस न रही और वह उत्तर की ओर को चला और निदान उस तीर के निकट पहुंचा जो इस अंतरीप के पूरब में है तहां पृथ्वी को देखकर उसको पूरब की ओर अधिक ढूंढढांड करने का उद्योग हुआ परंतु उसके डरपोकने संगियोंने बखेड़ा किया उसके मिटाने के लिये उसे अपने देश की ओर फिरना पड़ा पश्चिम को चलते चलते वह इस अंत-

रीप के साम्हने आया जिसका होना अगले मनुष्य अनुमान से जानते थे परंतु यूरपवालोंने अपनी आखों से पहले ही पहल अबकी बेर देखा था डैसने तो वहां आंधी के कारण बहुतसा दुख सहा था इसलिये उसका नाम केप आव् ष्टार्म अर्थात् आंधी का अंतरीप रक्खा ॥ पोर्त्तगाल में जब वह पहुंचा तो बादशाह इस यात्रा के सुफल होने से ऐसा प्रसन्न हुआ कि उसने इस नाम को पलट करके इसका नाम केप् आव् गुडहोप अर्थात् उत्तमाशा अंतरीप रक्खा जिस नाम से वह अब तक प्रसिद्ध है ॥

इस यात्रा से जो कि इस अंतरीप के चारों ओर हुई थी उससे थोड़े काल पीछे क्रिस्टोफर्कलंबस् जनवानगर निवासीने समुद्र के पश्चिम की ओर से हिंदुस्थान में जाने के लिये बीरता पूर्वक समुद्र में नाव डाली और थल को अपनी दृष्टि से छोड़कर आमेरिका की धरती को जाकर देखा जो अब नया महा द्वीप कहाता है इस अनुपम समुद्र की यात्रा के समय से सब यूरप् को आश्चर्य हो गया और पुरतगीज़ का बादशाह अति दुखी हुआ उसने इस बड़े नाविक की बात को न माना था इसलिये नये देशों को अपने राज्य में न मिला सका ॥ परंतु इस निरासता से उसको कुछ डर न हुआ पुरतगीज़ के बादशाहने इस हान के पलटे का उपाय किया और डैसने जो जो कुछ बातें ढूढी थीं उनके अधिक खोज में लगा रहा और उस अंतरीप के चारों ओर फिरके और पूरब की ओर चलके हिंदुस्थान में पहुंचने का उद्योग किया ॥ निश्चय करके उस काल में हिंदुस्थान को समुद्र के मार्ग से जाने के लिये बड़े २ उद्योग हुआ करते थे और हिंदुस्थान के ढूढने में यूरप के लोगों को आमेरिका मिलगई और जब ये उपाय हो रहे थे

उसी काल पुरतगीजों का जान नाम बादशाह मरगया और उसके चचा के बेटे भाई अमैन्यूअलने जो उसके पीछे बादशाह ऊआ ऐसी वीरता से इस याचा को पूरी करने की इच्छा से और हिंदुस्थान में जाने को मार्ग निकालने के लिये बऊत सामग्री इकट्ठी की॥ डैस के प्रबंध में जहाज बन गये यद्यपि जहाजों को अधिकार उसको न मिला और यह अधिकार वैस को डिगामाने पाया जो जहाजों के बनाने की विद्या में बऊत प्रसिद्ध था जब जहाज चलने को प्रस्थित ऊवे थे तब सब लिसबननगर निवासी उनका चलना देखने के लिये आये सिपाही और मल्लाहोंने बऊतसी अपने २ धर्म की रीतें कीं इस बिचार से कि हम फिर जीते ऊवे उलटे नही फिरेंगे॥

ईसवी संबत् १४९७ में जोलाई महीने की आठवीं को लिसबन के बंदर स्थान से तीन जहाज लेके चला चार महीने से अधिक २ में वह इस अंतरीप तक पऊंचा और जब बायु समान चल रही थी और आंधी जिस का बड़ा भय था नाम को भी न थी वह इस अंतरीप के चारों ओर फिरा और थोड़े काल पीछे उसने मलिंदा के बंदर स्थान में लंगर डाला यह स्थान आफिरका में समुद्र के तीर पर है वहां के लोगोंने मित्रों का सा आचरण किया और एक अगवा हिंदुस्थान में पऊंचा देने के लिये साथ दिया ईसवी संबत् १४९८ के मई महीने की बाईसवीं को अर्थात् लिसबननगर से चलने के दस महीने चौदह दिन के पीछे वह मालावार के तीर पर पऊंचा जो कालीकटनगर के साम्हने समुद्र के तीर पर है और वहां बड़ा मैदान न था और उसकी सीमा पर ऊंचे पहाड़ हैं उस समय में कालीकट के बीच व्योपार बऊत होता था उस में एक स्वाधीन हिंदू का राज्य था और मुसलमानों के जय किये

ऊये देशों की सीमा के दक्षिण को था वहां के अधिपति को जैमोरिन कहते थे और यह नाम कुछ समुद्र के साथ संबंध रखता था और ऐसा बिना बिचारे यह नाम नही हो सकता जैमोरिन्ने उन मनुष्यों को देखने से जिन के शस्त्र और डील डोल और आचरण उन मनुष्यों से भिन्न थे जो पहले उस बंदर में आया करते थे और उनके आने का मार्ग नहीं जाना गया था॥ अचंभे में आकर बटोही की बड़ी शिष्टाचारी की और उनकी इच्छा पूरी करने के लिये सब भांति की कृपा की इसी तौर पर समुद्र द्वारा व्योपार उस समय में मिसर और अरब के मुसलमानों की भांति होता था जो हिंदुस्थान के पूरब ओर के सब बंदर स्थानों में सामर्थ रखते थे उन्होंने इन लोगों पर जो बिघ्न करता था बऊत डाह की और सब भांति से उनकी इस याचा के बिगाड़ने में परिश्रम किया उन्होंने आपस में बऊतसा रुपया इकट्ठा करके बादशाह के मंची को अपनी ओर करने के लिये घूंस दी कि वह अपने स्वामी को समझावै कि ये लोग पांथ नही हैं जो अपने तांई कहते हैं वरन ये समुद्र के लुटेरे हैं और अपने देश से भाग के और आफिरका के तीर को लूटकर आये हैं और अब हिंदुस्थान पर भी इनकी बुरी दृष्ट है इस रीत से बादशाह का मन पुरतगीजों से अप्रसन्न ऊआ और नवीन व्योपारियों को धमकाने के लिये आज्ञा दी परंतु बादशाह के बिना जताये उनके ऊपर बड़े २ अन्याय ऊए और जब गावां चीज वस्तु के लादने में लग रहा था उसी काल में उसके संग के दो सरदार जो तीर पर थे पकड़े गये उनके पलटे में वहां के ६ लोगों को जो दैवयोग से उसके जहाज पर आ गये थे पकड़ लिया और अपने सरदारों के छूटने बिना उनको छोड़ने का निषेध किया इस बात

के जानने से बादशाह को बिचार ऊआ गावां बंदर से वहां के निवासियों के समेत चला तुरंत कई नावें तीर की ओर से आती देखीं उन में एक पर दोनों पुरतगीज़ सरदार थे जहाजों के निकट जाने से कई वहां के लोगों को फेर दिया और कई को लिसबननगर लेजाने के लिये रखलिया इसलिये कि जब कालीकूटनगर निवासी फिरके आवें तो लिसबन के चमत्कार का वर्णन करें॥ यह बिचार अच्छा नहीं था क्योंकि उनके लुटेरे होने का संदेह इस बात से बादशाह के चित में बऊत दृढ़ होगया॥ गावां सब बड़े मोल की बस्तु लाद कर घर को चला और ईसवी संबत् १४९९ के अगस्त महीने की उनतीसवीं को अर्थात् दो बरस दो महीने की यात्रा करके टेगस नदी में पऊंचा जो लिसबननगर के नीचे बहती है छोटे और बड़े सब लोग आगे बढ़ के उसको लेने को आये और उसने राजाओं की सी धूमधाम सहित नगर में प्रवेश किया बादशाहने इस यात्रा के सुफल होने के कारण कई दिन तक बड़ी प्रसन्नता मनाई और उसको बऊतसा द्रव्य और प्रतिष्ठा दी इस यात्रा का स्मरण रखने के लिये जो ईसाइयोंने पहले ही पहल समुद्र के मार्ग से हिंदुस्थान की ओर की थी एक बड़ा भारी गिरजा बनाया॥

पुरतगीज़ के बादशाहने वैसको डीगामा की यात्रा का पीछा न छोड़ा और दूसरी यात्रा के लिये बड़ी सामग्री इकट्ठी की और तेरह जहाज जिन में बारह सौ मनुष्य थे चलाने को उपस्थित ऊवे और उनका अधिकार काब्रहल नाम मनुष्य को मिला॥ हिंदुस्थान में ईसाई मत के फैलने के लिये आठ पादरी उसके संग चले और आज्ञा मिली कि जिस देश के लोग उनकी शिक्षा न सुने तो उस देश को काफ़्रस् आग और तरवार से

नष्ट करै॥ ईसवी संवत् १५०० में काबलने हिंदुस्थान में आते हुए ब्रेजल देश की सीमा देखी जो दक्षिण आमेरिका में है उसने उसको तुरंत पोरतगीज के बादशाह के नाम से अधिकार में फिर लिया और इस काल से थोड़े काल पहले तक पुरतगीजों के आधीन रहा काब्रलने उत्तमाशा अंतरीप के चारों ओर फिरने में अत्यंत भयानक आंधियों का दुख सहा और उसके चार जहाज डूबगये जिन में एक नामी डैस था जो इस समुद्र में सब यूरपवालों से पहले आया था कालीकट में पहुंच कर काब्रलने पहले उन लोगों को छोड़ दिया जिन्हों को पोर्त्तगीज में बलात्कार से पकड़ लेगये थे और जिन पर बहुत कृपा की थी पोर्तगीजवालों का काम पहलेही पहल अच्छा जम गया जहाजों का अधिपति तीर पर उतरा और जमोरिन् से मित्र भाव से मिलाप किया और अच्छे २ बड़े मोल के बहुत पदार्थ उसकी भेट किये परंतु मिसर और अरब के मुसलमान इन लोगों के फिरआने का सहन न करसके जिन लोगों को अपने जाने सदा के लिये भगा दिया था और पोर्त्तगीजों के निकाल देने के लिये सब प्रकार के उपाय करने लगे निदान कुछ पदार्थ उनके हाथ न आने दिये काब्रलने बादशाह से प्रार्थना की और उसकी ओर से अपने जाने मुसलमानो के जहाजों में जो पदार्थ उस समय में कालीकट के बंदर स्थान में थे लेलैने की आज्ञाप्राप्त की॥ इतिहासवेत्ता अनुमान करता है कि यात्रियों के फसाने के लिये यह केवल एक छल बनाया था क्योंकि मुसलमानों का एक जहाज जिस में बड़े बड़े मोल के पदार्थ भरे थे उनके साम्हने किया गया जिन को उन्होंने पकड़के सब पदार्थ अपने जहाजों में भर लिये मुसलमान शीघ्र बादशाह के पास भागे गये और कहा कि इन

परदेशिओं का आचरण आपने देखा और इनके प्रख्यात दुरा-चरण में कुछ संदेह न रहा यह सुनके बादशहने उनके नि-काल देने की आज्ञा दे दी तुरंत उन्होंने पुर्तगीजों की कोठी पै चढ़ाई की जिस को उनने बनाली थी और उस में के प्रत्येक मनुष्य को मारडाला काबलने इस अप्रतिष्टा के पलटे में उस से भी अधिक हानि की ॥ उसने मुसलमान के दस जहाज पकड़ लिये और उनका सब पदार्थ अपने जहाजों में भरलिया और उन में आग लगा दी और फिर तीर के निकट जाकर अपनी तोपों से नगर को जला दिया और कोचीन को चला गया जहां का अधिपति कालीकट के बादशाह को बलात्कार से कर दिया करता था इस अधिपति से इसने बचन करलिया और बक्रतसे पदार्थ वहां से लेकर लिसबननगर को चला जहां वह ईसवी संवत् १५०१ के जोलाई महीने के बीचोंबीच पक्रंचा ॥

यद्यपि इस वृत्तांत के समाचार इच्छा पूर्वक न थे फिर भी उन से पुर्तगीज के बादशाह के चित्त में पूरब की ओर एक रा-ज्य स्थापन करने का उत्साह क्रआ उसने आप अपने ताईं हबश अरब फारस और हिंदुस्थान में जहाज चलाने जय करने और व्योपार का अधिपति कहाया और पहली दोनों बेर की अपेक्षा अब एक बक्रत बड़ा बेड़ा जहाजों का उपस्थित किया उसका अधिपति वैस को डिगामा को किया जो हिंदुस्थान में दूसरी बेर निर्भय पक्रंचा और कालीकट के साम्हने लंगर डाला और काबलने जो अपनी अप्रतिष्टा का पलटा लिया था उसकी अपराध क्षमा करवाई परंतु यह बात न मानी गई तब उसीने शीघ्र पंचास वहां के निवासियों को जो उसके जहाज पर आये थे कटा करवाया तुरंत कालीकट नगर को तोप से बक्रत

सताया चैार लंगर उठाकर कोचीन के बंदर स्थान को चला जहां के अधिपति से मित्रता हो गई थी चैार वहां बहुधा पुर्तगीज जाते थे चैार वहां से जहाज भरके यूरप को चलता हुआ तिस पीछे तीन बेर उनके जहाज हिंदुस्थान को आये परंतु उनका समाचार कोई लिखने योग्य नही है जहाजों में कुछ सामग्री अलटा पलटा करके चैार कुछ बस्तु धर्म्मी से लेकर फिर लिसबननगर को चले आये ॥ बड़ी अज्ञानता से पाशीको वहां छोड़ गये थे जो पोर्तगीजों की कोठी की रक्षा के लिये कोचीन में रहा करता था चैार केवल थोड़े हीसे सिपाही उसके पास छोड़ आये थे यद्यपि उस समय बहुधा संपूर्ण देश उन से फिरा हुआ था ॥ कालीकट का अधिपति जमोरिन् कोचीन के फिरे हुवे सरदार को असहायक जानकर सब सेना लेके उस पर चढ़गया ॥ बड़ा बीर पाशीको यद्यपि जानता था कि इस कठिन काल में यूरपीय सिपाही के भिन्न चैार किसी का बिश्वास नही तो भी शत्रु की धूमधाम को निडर होकर देखता रहा कालीकट की सेना इसके कटक से पंचास गुनी थी परंतु उसने अपनी सावधानी चैार सेना की बीरता से शत्रु के प्रत्येक धावे को हटा दिया जो उसके ऊपर समुद्र द्वारा चैार स्थल द्वरा हुए थे चैार इसी बात से पहले यूरप की सेना की प्रतिष्ठा हिंदुस्थानी सेना की प्रतिष्ठा से अधिक हुई इस बात का प्रमाण तीन सैा बरस के बीच में भली भांति प्रगट हुआ ॥

ईसवी संवत् १५०५ में पोर्तगीज के बादशाहने फरासीस आलमीडा को हिंदुस्थान का अधिपति नियत करके भेजा यद्यपि उस समय में पोर्तगीजवालों का अधिकार हिंदुस्थान में एक बिलेभर पृथ्वी पर न था आलमीडा अपने पहले आनेवालों में बुद्धवानी में किसी से न्यून था चैार निश्चय है कि पोर्तगीज

के जय होने का बड़ा कारण यह होसकता है कि उन्होंने बड़े बुद्धवान सरदारों को छांटके हिंदुस्थान में भेजा कहते हैं कि आलमीड़ा के पहुंचते ही विजयनगर के राजाने ऐसे उत्तम पदार्थ देकर दूत को उसके पास भेजा कि उनके समान उत्तम वस्तु पोर्तगीजोंने अब तक उस से पहले हिंदुस्थान में न देखी थी बरन यह भी कहा है कि यद्यपि वह पक्का हिंदू था तो भी उसने पोर्तकेज के बादशाह के बेटे से अपनी बेटी का व्याह करना चाहा इस रीत से उन से संबंध करने का बिचर चाहा इस समाचार से आलमेडा का चित्त प्रसन्न हुआ परंतु शीघ्र एक बिनचाहाडर आने से बहुत घबराहट हुआ हमने वर्णन किया था कि अंतरीप की ओर से हिंदुस्थान का मार्ग ढूंडने से पहले वेनिसवालोंने पूर्व द्रव्य और सामग्री का व्योपार अपने आधीन करलिया था और कई ओर से पदार्थ लाकर यूरप के देशों में फैला देते थे और इसी रीत से इतना द्रव्य इकट्ठा किया था कि वेनिसनगर से और विद्यावान् देश जलने लगे उनके बंदरस्थान में कदाचित् मिसर बहुत बड़ा था इस कारण पोर्तगीजों का व्योपार उनके व्योपार को बहुत हानि कारक था वेनिसवालों को बहुत भय उत्पन्न हुआ और उन्होंने मिसर के सुलतान को जिसका देश तुरकोंने उस समय तक जय नहीं किया था रैडसी अर्थात् रक्त समुद्र में जहाजों का बेड़ा बनाने के लिये कहा कि वह हिंदुनस्थ के समुद्रों में उन हानिकारक लोगों का चिन्ह न रहे॥ उन्होंने डलमेशिया के जंगलों में से लकड़ी काटकर लादीनी और उस लकड़ी के सिकंदरिया में जहाज बने और कुछ थल के मार्ग से और कुछ जल के पथ से सुएज़ नाम डमरू मध्य में लेगये॥ इस मिसरवालों के जहाज के बेड़े का अधिपति मीरहुक्म होकर हिंदुस्थान को

चला और गुजरात के बादशाहने मलिक अयाज़ नाम जहाजों के प्रसिद्ध सेनापति को उनकी सहायता करने के लिये आज्ञा दी पोर्तगीजों के जहाज आलमेड़ा के पुत्र लारिंजो के अधिकार में थे वे उत्तर की ओर शत्रु के ढूंढने में फिरते रहते थे और चोल के बंदरस्थान में लंगर डाला था जब शत्रुओं के जहाजों के बेड़े उनको दिखाई दिये पोर्तगीज दो दिन तक बड़ी बीरता सहित लड़े परंतु उनके जहाज बक्षत टूट गये और बक्षतेरे सेनापति लारिंजो सहित घायल क्षवे और शत्रु से जय पाने की आस न रही इसलिये पोर्तगीजोंने पीछे को हटने का बिचार किया परंतु लारिंजो का जहाज मच्छी पकड़ने के स्थान में अटक गया और उस पर शत्रु के जहाजों से गोले बरसते रहे जो उसके चारों ओर घिरे क्षए थे ऐसी बीरता दिखाने से उसके शत्रुओं को बड़ा बड़ा अचंभा क्षआ और निदान वह घायल होकर मरगया॥ आलमेडाने यह समाचार दृढ़ता से सुने बरन उसने बड़ी कठोरता से पलटा लेने का विचार किया॥

उसने सुना कि दावल जो समुद्र के तीर पर बड़ा बसता क्षआ नगर था मिसरवालों की ओर होगया उसने बड़े पराक्रम सहित चढ़ाई की और उसे संपूर्ण भांति से लूटकर और आग से जलाकर राख किया इन मनुष्यों की कटा और अयश के पीछे वह उस बेड़े को ढूंडने चला जिसने उसके पुत्र को हराया था इस बेड़े को उसने देव के बंदरस्थान में पाया उसके अधिपति मीरक्षक्म और मलिक अयाज़ थे बड़ी बेर तक लड़ाई रही परंतु अंत में सब बड़ी बड़ी नावें मुसलमानो की जलाईं या लूटी गईं और छोटी २ नावें नदी में भागीं इस-शत्रु के हाथ न लगने सकीं निदान आपस में मिलाप होगया और अयाज़ने सब यूरप के बंदवे सोंप दिये आलमेड़ा अपने

बेटे के मारे जाने का पलटा अबतक लिया चाहता था और उसने सब बंदुवें को जो उसके साथ गये थे कोचीन जाने के समय मरवा डाला ॥

आलमेडा को कोचीन में आकर पोर्तगीजी सेना का अधिकार छोड़देना पड़ा और अलबूकर्क को इस कटक का अधिकार मिला जो थोड़े ही काल पहले यूरप से आया था ॥ वह सब उन पोर्तगीजी अधिपतियों में अत्यंत बड़ा योग्य था जो हिंदुस्थान में आये थे अलबूकर्क का यह बिचार था कि अपने देशवालों का एक बड़ा राज्य पूरब में प्राप्त करूं और उसकी यह यांचा सब भांति सुफल भई वह ईसवी संवत् १५०६ में आया और डाकूपने के कामों पर संतोष न करके एक स्थान ढूंढा और वहां एक दुर्ग बनाना बिचारा और अपने जहाजों के बेड़े का लंगर स्थान करना ठहराया इसलिये कि हमारे जय करने के उपाय सुफल होंय और वहां उसने नई बस्तियां बसाईं इन कामों के योग्य गोवा नाम द्वीप को जाना जो मालाबार के तीर पर २३ मील के घेर में है उस द्वीप को उसने लेलिया तिस पीछे वहां के पहले अधिपति ने उसे निकाल दिया परंतु उसने फिर जाकर उसे लेलिया और ऐसा दृढ कोट बनवाया कि आगे को वहां के रहनेवालों की चढ़ाई उसके लेने में कुछ सुफल न होसके उस समें गोवा पोर्तगीजों के राज्य की राजधानी हुआ और अलबूकर्क ऐसी धूमधाम से अपने राजदूत भेजने लगा कि हिंदुस्थान के किसी राजा की सभा इस दूत से अधिक चमत्कार न रखती थी और इसी रीत से उसके पास भी राजदूत आने लगे इस नये स्थान का प्रबंध अत्यंत बुद्धिमानी से किया पोर्तगीजी बयोपार को बढ़ाया दृढ़ और सुचित किया उसने और दूर दूर के देशों पर चढ़ाई करने का

उद्योग किया बहुधा पूरब की ओर चला और मलाबार को अपने बस में करलिया इस रीत से पोर्तगीजों के व्योपार के लिये सब पूर्वी द्वीपों में एक नवीन प्रबंध कर दिया ॥

तिस पीछे इसने ऊरमज पर ध्यान किया जो फारस के खाल में है और उसे लेलिया इस रीत से पोर्तगीजों के लिये फारस और अरब के आखात के व्योपार का अधिकार प्राप्त किया ॥ निस्संदेह अलबूकर्क पोर्तगीजों के लिये पूरब में राज्य स्थापन करनेवाला ठहर सकता है ॥ उसके अधिकार के अंत में पोर्तगीजों का राज्य समुद्र के तीर बारह सहस्र मील अर्थात् छह सहस्र कोस तक व्याप्त था उस में ३० कोठी थीं ॥

पोर्तगीजवालों का हिंदुस्थान में गोवा द्वीप को छोड़ कर और कोई सूबा न था परंतु सौ बरस से अधिक २ हिंदुस्थान में व्योपार करते रहे और पूरब के समुद्रों के अधिपति रहे उस काल में उनका कोई प्रतिपच्ची न था ॥

अलबूकर्कने हिंदुस्थान में पोर्तगीजों का राज्य दृढ़ और स्थिर किया तिस पीछे उसका अधिकार अन्याय पूरवक छिन गया और उसके स्थान में नया अधिपति आया यहां तक कि उसके छुड़ाने के बिषय में उसके पास कोई आज्ञा पत्र भी न आया यह अगुणग्राहकता उसके मन में बैठ गई और वह शोक में ईसवी संबत् १५१५ के दिसंबर की १६ को जब वह जहाज पर चढ़ा हुआ था गोआद्वीप में पहुंचने से पहले मरगया तब बड़ी धूमधाम से तीर पर लेगये पोर्तगीज और वहां के निवासी जो उसकी सुशीलता के कारण अत्यंत प्यार करते थे शोकाकुल होकर ऐसे रोए कि उनके आंसू से उसकी समाधि भीग गई ॥

इति

अशुद्ध पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
सनझी	समझी	४	१७
बर्षा	बर्षां	६	२०
लेगे	लगे	८	२०
जय किय	जय किया	१०	१५
ह	है	११	२
संस्कत	संस्कृत	१२	१५
द्वार में	द्वार पै	१४	१९
जाता	जातों	१४	२३
महा बली	महाबली	२३	६
जाचां	जांचा	२४	२५
कुंनती	कुंती	२७	१३
नकल	नकुल	२७	१७
धतराष्ट	धृतराष्ट्र	२८	२
धुतराष्ट	धृतराष्ट्र	२८	२
और भीम	भीम	२९	९
बात	बात	३४	१२
निश्चय	निश्चय है	३४	१९
फारसी	फारस	३७	१८
अयोध्या का	अयोध्या	४०	११
बन्नोज	कन्नोज	४०	२३
बाद्ध	बौद्ध	४२	१
प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	४३	२६
मार धाड़	मार धाड़ कर	४८	२

उसकी	उसके	४९	११
लोट जाने से	लैाट जाने से	५०	१
चढ़ाई करै	चढ़ाई करूं	५०	५
देशम	देश में	५०	१०
होथी	होती	५१	८
देशों का	देशों के	५१	२३
लिख	लिखे	५५	५
सिंधु नदी की	सिंधु नदी के	५५	२५
कर लिये	कर लिया	५६	२०
बढ़बाढ़	बढवार	६२	८
अंध	अंध्र	६९	१८
तारीख	तवारीख	७१	६
अंध भ्रत्तास	अंध्र भृत्य	७१	१६
अधिकार किया	उन में अपना अधिकार किया	७२	६
अवस्था	व्यवस्था	८४	७
सुबुकतगीं के	सुबुकतगीं को	८६	२०
संयोग से	समायोग से	८६	२६
तट	तट पर	८८	१९
अधिकार	अधिर और	९०	६
पाप के	बाप के	९०	७
भल	भूल	९६	१
चमक्तारी	चमत्कारी	९६	१४
नह	विद्या का विवेक नही करता था	९९	२०

निदई	निर्दई	९९	२२
बढ़ी	बड़ी	१०३	११
म	में	१०५	१७
९००	९	१११	१५
हिंस्थानी	हिंदुस्थानी	११२	२४
श्रौस	श्रौर	१२२	१४
उन्हींने	उन्होंने	१२५	२४
चमक्तार	चमत्कार	१३६	३
प्रधाम	प्रधान	१३६	५
लगार	लगातार	१३७	२५
वृद्धि	वृद्ध	१४०	१४
सूबें	सूबे	१४३	२१
द्रव्य	द्रव्य श्रौर	१४५	१
थ	थे	१४८	१
ह	है	१४९	१५
शीघ	शीघ्र	१५०	१२
म	में	१५२	१०
करदेने	करदेना	१५९	१६
सनतान	संतान	१६५	११
मध्यय	मध्य	१६८	१३
छाड़ दी	छोड़ दी	१६८	१४
संवत् १४४१	संवत् १४१४	१७४	१०
मल	मूल	१७७	२१
जीत्ते	जीतते	१८०	२१
गया था	होगया	१८३	३
वहलोली वहां गया	वहां गया	१८४	५

रहथो था	रहता था	१८९	२
तिसको	जिसको	१९१	१६
बादशाहने	बादशाह	१९३	७
जैसा	जैसे	१९७	१६
लगतार	लगातार	२०७	२४
अस्तू	अरस्तू	२१०	२१
कंडालपी	कंडापली	२१९	२४
कंडालपी	कंडापली	२२०	९
शीघ	शीघ्र	२२३	६
स्थान मं	स्थान में	२२६	१
मैदान न था	मैदान था	२३०	२४
वहां क	वहां के	२३२	१
पाशी को	पाशी को को	२३५	७